भारत के राष्ट्रपति

डा० राजेन्द्र प्रसाद

द्वारा दिये गये

महत्त्वपूर्ण सन्देश

(१९५५—१९६१)

सहायक व्यवस्थापक, जी० आई० प्रेस,
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली,
द्वारा मुद्रित ।

राष्ट्र सेवियों को श्रद्धांजलि

१९५५

कलकत्ता हिन्दी शिक्षा परिषद्

भारतीय हिन्दी शिक्षा परिषद्, कलकत्ता के आगामी समावर्तन समारोह के अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं। मुझे प्रसन्नता है कि परिषद् पश्चिमी बंगाल में हिन्दी प्रचार का सराहनीय कार्य कर रही है। आशा है इस प्रचार के साथ ही हिन्दी और बंगला भाषा भाषियों में पारस्परिक सौहार्द और सद्भावना में भी वृद्धि होगी। जैसा मैं पहले भी कई बार कह चुका हूं, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी प्रचार का सबसे दृढ़ आधार प्रचारकों और स्थानीय लोगों में आपसी सद्भावना ही हो सकती है।

मैं आपके समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

(१३ जनवरी, १९५५)

पत्रकार के प्रति

दैनिक "आज" के सम्पादक श्री बाबूराव विष्णु पराडकर के निधन का समाचार सुनकर मुझे दुःख हुआ। मेरा उनके साथ परिचय प्रायः ४५ बरसों से अधिक का था और आपस में हम दोनों का काफी प्रेमभाव था। वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन और हिन्दी पत्रकार जगत् के स्तम्भ थे। पराडकरजी के परिवार के लोगों के प्रति मैं अपनी समवेदना प्रगट करना चाहता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति दे।

मुशायरे के अवसर पर

मुझे यह जान कर बहुत मुसर्रत हुई कि योमे जमहूरियत की तकरीब के सिलसिला में लाल किला में एक मुशायरा मुनअकद हो रहा है। हम इस बात को नहीं भूल सकते कि जंगे आज़ादी में मुख़तलिफ ज़ुबानों के शोरा ने

अपन अपने तरीकों से मुल्क को बेदार करने में कौम की बड़ी खिदमत की थी और अब जब हम आज़ाद हो गए हैं और मुल्क की बेहतरी और तरक्की के लिए कोशिश कर रहे हैं, हमें यह लाज़िम है कि हम शोरा को बराबर ऐसा मौका दें कि वे अपने इल्म और फन से मुल्क की खिदमत करते रहें। सुखन में जो कुव्वत है वह तलवार में नहीं और हम तो सुख़न के पुजारी हैं न कि तलवार के। लिहाज़ा आज़ाद हिन्दुस्तान को इस बात का फख्र होना चाहिए कि आज भी इस मुल्क में राइज मुख़्तलिफ ज़ुबानों के शोरा में अपने फरायज़ अदा करने और हमें सच्चे रास्ता पर ले जाने की लगन है।

इस मौका पर मैं सब को मुबारकबाद देता हूं और इस तकरीब की कामयाबी के लिए दुआ करता हूं।

(२४ जनवरी, १९५५)

चम्बल घाटी योजना का निर्माण

चम्बल घाटी योजना का काम देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस योजना के विभिन्न भागों को पूरा करने के लिए जो समय निर्धारित किया गया है, आशा की जाती है कि उस समय के भीतर ही काम पूरा हो सकेगा। यहां पर मुझे यह भी देखने को मिला कि इस काम में देश के दूरस्त भागों के लोग भी केवल ऊँचे पद पर ही नहीं बल्कि मामूली मजदूर का काम भी कर रहे हैं। विदेशों से बहुत खर्च करके बड़े बड़े यन्त्रों के लाने तक बैठकर इन्तजार नहीं करके हमारे देश की सब से बड़ी सम्पति-मनुष्य के हाथ पैर से ही काम लेने का निश्चय किया गया, जो मेरी समझ से बहुत ही अच्छा हुआ। जहां तक देश के लोगों को ऐसी बड़ी बड़ी योजनाओं में काम दिया जा सके वह देश के लिए बड़ी बात है। मैं जानता हूं कि बहुत से ऐसे काम भी हैं जो यन्त्र के बिना नहीं हो सकते। उनके लिये तो मजबूरी यन्त्र के लिये इन्तजार करना ही पड़ता है। मगर जिस काम को मनुष्य अपने हाथ पैर से कर सकता है उस काम को उसके हाथ से नहीं करवा कर विदेशों से यन्त्र के लिये इन्तजार करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

इसलिये मुझे हर्ष हुआ कि यहां के संचालकों ने मनुष्य से काम लेना आरम्भ कर दिया है और मालूम होता है कि प्रगति भी काफी हो रही है

और निर्धारित समय के अन्दर ही काम पूरा हो सकेगा। लोगों में बहुत उत्साह देखा और विशेष करके मन्त्रियों और इन्जीनियरों में काम को अच्छी तरह से और जल्द करने के लिये काफी उत्साह है। इस उत्साह का प्रदर्शन इस इलाके के लोगों ने इस योजना के लिये रुपये देकर दिया था। मैं आशा करूंगा कि इस उत्साह के कारण बाकी काम को पूरा करने में भी उसी प्रकार की सफलता होगी। मैं सबको बधाई देता हूं और मेरा विश्वास है कि जब मैं फिर कभी इधर आऊंगा तो काम को बढ़ा पाऊंगा। इस योजना की खूबी यह है कि अपने मुकाबले की और योजनाओं से यहां खर्च भी कम पड़ेगा। यह एक प्रकार से ईश्वरीय देन है क्योंकि यहां की स्थिति ऐसी है कि अन्य योजनाओं को बहुत कठिनाइयों का जो सामना करना पड़ता है वे यहां नहीं हैं। शीघ्र ही स्वतन्त्र भारत के गौरव को बढ़ाने वाली यह योजना सफल हो कर ही रहेगी।

हर आदमी के प्रति—मन्त्री और बड़े बड़े इन्जीनियरों से लेकर पत्थर तोड़नेवाले छोट से छोटे मजदूर तक के प्रति भावी पीढ़ियां उनके परिश्रम और उत्साह के लिये आभार मानेंगी, और उन्हे हृदय से आशीर्वाद देंगी। प्रत्येक आदमी जो इसमें लगा है, वह चम्बल को भारत के उत्थान और समृद्धि का सूचक मानकर, इसमे हृदय से शरीर और मन को लगाकर काम करेगा, यह मेरी आशा है।

(२ मार्च, १९५५)

धुन के पक्के, गाड़ी-लोहारों के प्रति

गाड़ी लुहारों को बसाने का कार्य हमारे प्रधान मंत्री के हाथ से शुरू करा कर उनकी अभिलाषाओं, इच्छाओं और की गई प्रतिज्ञाओं का पूरा होना प्रमाणित करता है। इन जातियों की गौरव गाथा और परम्परा सराहनीय है। इन लोगों ने राम राज्य की उस वाणी को सही रूप दिया है जिसम कहा गया है कि "रघु कुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाये पर वचन न जाई"। इन जातियों की महत्वाकांक्षा जिसे अपनी आन से अपने पर कष्ट उठा कर निभा रहे थे वह आज पूरी हो रही है, इसके लिए यह बधाई के पात्र हैं। साथ ही ऐसे काम का हम स्वागत करते हैं।

हालांकि हमे स्वतन्त्र हुए सात साल हो गए है फिर भी हम उस लक्ष्य तक नहीं पहुंचे है जहां तक पहुंचने का स्वप्न देखा था और जैसा कि महात्मा जी ने राजनैतिक स्वतन्त्रता के साथ साथ आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए भी संकल्प रखा था जिसे पूरा करने के प्रयत्न मे हम सब एक साथ मिल कर काम करना चाहते है। इसके लिए भी इन जातियों को अपने बीच लाना आवश्यक था, और अब उस ओर बढ़ने का यह एक अच्छा कदम है। बहादुर देश निर्माता के हाथ से यह काम पूर्ण सफलता को प्राप्त करेगा ऐसा मेरी शुभ कामना है।

(१ अप्रैल, १९५५)

वैशाली संघ वार्षिक उत्सव

वैशाली संघ की स्थापना जिस सद्उद्देश्य से की गई है, उसकी मैं सराहना करता हूं, और इसके द्वारा किए गए काम की उन्नति चाहते हुए इसके ग्यारहवें महोत्सव पर बधाई भजता हूं। मेरी शुभ कामना है कि यह संस्था उस ज्ञान के भंडार को, जो हमारी पुरानी संस्कृति और सभ्यता के रूप में बिखरा और छिपा है, पुनर्जीवित करने तथा हमारे सामाजिक आदर्श को ऊंचा उठाने मे संलग्न रहे।

खादी-ग्रामोद्योग संग्रहालय

पिछले वर्ष बम्बई में अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संग्रहालय खोले जाने के समय मैंने आशा प्रकट की थी कि ऐसे संग्रहालय यथाशीघ्र भारत के दूसरे नगरों में भी खोले जायेंगे। इसलिए नई दिल्ली मे खादी और ग्रामोद्योग संग्रहालय खोले जाने के निर्णय से मुझे खुशी हुई, और मैं इसका स्वागत करता हूं। मुझे पूरी आशा है कि यह प्रयास सफल होगा, और दिल्ली निवासी ग्रामोद्योगों की ओर निश्चय ही आकर्षित होंगे। कला टिकाऊपन और भारत के ग्रामों में रहने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति की दृष्टि से, खादी और ग्रामोद्योगों की उपादेयता को मैं स्वतः सिद्ध समझता हूं। पिछले साल में यहां खादी प्रदर्शनी से लोग बहुत प्रभावित हुए थे।

अब यह संग्रहालय एक प्रकार से प्रदर्शनी का काम प्रतिदिन करता रहेगा, और जन-साधारण को सहानुभूति और दिलचस्पी इसके साथ होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि यह अपना काम सफलतापूर्वक कर सकेगा।

(११ अप्रैल, १९५५)

राष्ट्रभाषा प्रचारकों को दो शब्द

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर मैं राष्ट्रभाषा के प्रचारकों और हितैषियों से दो शब्द कहना चाहूंगा। हिन्दी निःसन्देह हमारी राष्ट्रभाषा घोषित हो चुकी है, और संविधान मे भी उसे स्थान मिला है। इस सम्बन्ध मे हमे दो बाते नहीं भूलनी चाहिएं। एक तो यह कि घोषणा मात्र से कोई भाषा किसी समस्त राष्ट्र की भाषा नहीं बन जाती, और दूसरी यह भी समझ लेना होगा कि भारतीय संघ मे अहिन्दी भाषी राज्य भी हैं, जिनके निवासी राष्ट्रभाषा से परिचित नहीं। हिन्दी को समस्त राष्ट्र की भाषा बनाना और अहिन्दी भाषी लोगों मे यथाशीघ्र इसका प्रचार करना, यह दायित्व सब हिन्दी भाषियों पर आता है। और आपकी संस्था का तो मुख्य ध्येय ही यह है। हिन्दी किसी प्रादेशीय भाषा का स्थान लेना नहीं चाहती और न ही हम इसके प्रचार का अभिप्राय किसी अहिन्दी भाषी राज्य के लोगों को असुविधा की स्थिति मे डालना है। ये ऐसी बातें हैं, जिनका समझना और दूसरों को समझाना राष्ट्रभाषा के प्रचार जितना ही महत्वपूर्ण है। मुझे आशा है आपकी समिति के सभी कार्यकर्ता इन्हें ध्यान में रखेंगे।

मैं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वार्षिक सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(३ मई, १९५५)

साक्षरता आन्दोलन का महत्व

दिल्ली नगरपालिका द्वारा साक्षरता आन्दोलन का आयोजन सराहनीय है। विद्यार्थियों की सहायता से यह काम पिछले दो वर्षों में किया गया है, और

इसका फल उत्साहवर्द्धक रहा है। इस प्रकार विद्यार्थी जहां अशिक्षित लोगों को विद्या दान देते हैं, वे अपने खाली समय का सदुपयोग भी भली प्रकार कर सकते हैं। ऐसे आन्दोलन की उपादेयता दोहरी मानी जाएगी। शिक्षा प्रसार के साथ साथ इसके द्वारा हमारे युवकों और युवतियों में समाज-सेवा की प्रवृत्तियां भी जागृत हो सकेंगी। ऐसे सुन्दर प्रयास का स्वागत करना और यथाशक्ति इस में योग-दान देना दिल्ली के सभी नागरिकों का कर्तव्य है। मैं आन्दोलन की सफलता की कामना करता हूं।

(२० मई, १९५५)

हिन्दी शोध मंडल का स्तुत्य कार्य

अखिल भारतीय हिन्दी शोध मंडल के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर मैं मंडल को अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। सभी दृष्टियों से हिन्दी भाषा के महत्व को देखते हुए, इस दिशा में शोध तथा खोज का कार्य सर्वथा स्तुत्य है। विगत पचास वर्षों में अनेक लुप्त हिन्दी ग्रन्थों का पता लगा है, और उनके प्रकाश में आने से हिन्दी समृद्ध हुई है। यदि यह महत्वपूर्ण कार्य नियमित रूप से किसी संस्था विशेष द्वारा किया जाय तो निश्चय ही हिन्दी साहित्य तथा उसके इतिहास और विकास के सम्बन्ध में हमारी जानकारी में वृद्धि होगी। इस कार्य में मैं शोध मंडल की सफलता की कामना करता हूं। मुझे आशा है कि इसके प्रयास द्वारा हिन्दी भाषा तथा साहित्य को बहुत लाभ पहुंचेगा।

(११ जुलाई, १९५५)

एक वयोवृद्ध राष्ट्रसेवी के प्रति

बहुत वर्ष हुए श्री रविशंकर जी शुक्ल से कांग्रेस के कार्य के सम्बन्ध में मेरी मुलाकात हुई थी। कालान्तर में हमारा परिचय घनिष्ठता में परिणत हो गया। श्री शुक्ल जी जन-साधारण की सेवा और अपनी लगन के लिए शुरू से ही प्रसिद्ध हैं। वे चतुर ही नहीं एक निर्भीक कार्यकर्त्ता हैं। जब कभी मौका आया उन्होंने इन गुणों का पूरा परिचय दिया। उदाहरण के रूप में एक समय जब वे जेल में थे, अधिकारियों ने सब कैदियों के अंगूठे का निशान

लेने का नियम बनाया। इन से भी अंगूठे का निशान देने के लिए कहा गया परन्तु इन्होंने देने से इन्कार कर दिया। अन्त तक वे अपनी बात पर डटे रहे यद्यपि जबरदस्ती निशान लेने मे इनके साथ बड़ी सख्ती की गई।

सार्वजनिक कार्य मे अथवा प्रशासन के काम मे जब कभी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, शुक्ल जी धैर्य और बुद्धिमता से काम लेते हैं। और अपनी सूझ बूझ से, हर समस्या का कोई न कोई हल निकाल लेते हैं। ७९ वर्ष की अवस्था मे भी व किसी से कम शारीरिक परिश्रम नहीं करते। दफ्तर के काम के अलावा दौरों आदि का काम भी बराबर करते रहते हैं। उनके परिश्रम और व्यस्त जीवन से नवयुवक भी प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकते। दीर्घ अवस्था और भरपूर अनुभव के अतिरिक्त शुक्ल जी के दूसरे व्यक्तिगत गुणों के कारण सभी लोग इन्हे आदर की दृष्टि से देखते हैं।

श्री रविशंकर जी शुक्ल मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री और उस राज्य के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता ही नहीं है, बल्कि उच्च कोटि के साहित्य सेवी भी हैं। अपनी विद्वता, कार्यशैली और साहित्यानुराग द्वारा इन्होंने साहित्य की विशेष रूप से हिन्दी भाषा की, जो सेवा की है वह बड़े महत्व की है। ऐसे वयोवृद्ध विद्वान, अनथक कार्यकर्ता और अनुभवी प्रशासक के आदरार्थ जो प्रयास मध्य प्रदेश साहित्य सम्मेलन द्वारा किया जा रहा है, उसका मैं स्वागत करता हूं और सहर्ष श्री शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए अपनी श्रद्धांजलि भेजता हूं।

(१२ जुलाई, १९५५)

बालचर, भारत के उदीयमान राजदूत

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कैनेडा मे होने वाले आठवे विश्व स्काउट समारोह मे हमारे देश के स्काउट भी भाग ले रहे हैं। मुझे आशा है कि हमारे स्काउट इस विदेश यात्रा से, और दूसरे देशों के स्काउटों की जान पहिचान से पूरा लाभ उठायेंगे। उन्हे यह समझ लेना चाहिए कि वे एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं और अपने व्यवहार और बातचीत में उन्हें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिस से भारत की बदनामी होने की आशंका हो। ये बालचर हमारे उदीयमान राजदूत हैं और अपने व्यवहार द्वारा उन्हे

इस बात को प्रमाणित करने का यत्न करना चाहिए। मेरी शुभ कामनायें भारत स्काउट दल के साथ हैं और मैं उनकी सफ़ल यात्रा की कामना करता हूं।

(२० जुलाई, १९५५)

विश्व स्काउट समारोह का स्वागत

आठवें विश्व स्काउट समारोह के आयोजन का स्वागत करते हुए मैं इस अवसर पर सभी देशों के स्काउटों से यह कहना चाहूंगा कि आज के युग में सब से बड़ा बल सहयोग की भावना और पारस्परिक मेल जोल में है। ये दोनों भावनायें स्काउट आंदोलन का आधार भी हैं। इसलिए इन पर अधिक से अधिक बल दिया जाना चाहिए, जिससे कि विभिन्न राष्ट्रों और जातियों के बीच सहिष्णुता, मैत्री और सद्भावना स्थापित हो और जैसा कि प्राचीन भारतीय मनीषियों का स्वप्न था, संसार एक विशाल कुटुम्ब के समान बन सके। मैं आपकी जम्बूरी की सफलता चाहता हूं और आशा करता हूं कि इसके द्वारा संसार के युवक समाज में जागृति पैदा होगी और वे मैत्री तथा मानव कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकेंगे।

(२० जुलाई, १९५५)

बंग शिशु उत्सव

पश्चिमी बंगाल के समाजिक कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने अखिल बंग शिशु उत्सव मनाने का निर्णय किया है। साधारणत हमारी अधिकांश गतिविधि और दैनिक कार्यक्रम ऐसे होते हैं जिनमें छोटे बच्चों को दिलचस्पी नहीं हो सकती। किन्तु ये राष्ट्र के उदीयमान सेवक और कर्णधार होनहार बने, और अपने कर्तव्य को समझने के साथ साथ समुचित ढंग से निजी बौद्धिक तथा शारीरिक विकास कर सकें, इसके लिये यह आवश्यक है कि हम वयस्क और वयोवृद्ध लोग बच्चों के काम काज में और उनके कार्यक्रम में रुचि लें। इस दृष्टि से पश्चिमी बंगाल के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस उत्सव का आयोजन करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। मुझे आशा है कि इस शुभ कार्य में अन्य राज्य भी पश्चिमी बंगाल का अनुकरण करेंगे और

बच्चों के विशेष उत्सवों के आयोजन द्वारा शिशु समाज को प्रोत्साहित करेंगे। बंग शिशु उत्सव की सफलता की मैं हृदय से कामना करता हूं।

(५ अगस्त, १९५५)

संत विनोबा के प्रति

सन्त विनोबा कई वर्षों से जो काम कर रहे हैं, उसे रचनात्मक कार्य कहने मात्र से उसका अभिप्राय ठीक से व्यक्त नहीं होता। भूदान एक ऐसा क्रान्तिकारी विचार है जो आध्यात्मिक जगत से सम्बन्ध रखते हुए एक जटिल भौतिक समस्या के सुलझाने का भी उपाय है। आज विज्ञान के युग मे भी भूमि अधिकांश जन-साधारण के जीवनयापन का साधन है। कम से कम इस देश में तो ऐसा है ही। जीविका के इस प्रमुख साधन के वितरण में असमानता शेष सब प्रकार की असमानताओं का मूल कारण है।

देखने मे भूदान एक साधारण आन्दोलन जान पड़ता है, परन्तु इसे ठीक से समझने और इसके कारण जो असमानता है उसे दूर करने का सहज स्वाभाविक उपाय विनोबा जी जैसा तत्वदर्शी महापुरुष ही जान सकता था। उनकी यह धारणा कि भूमि वास्तव मे दैवी सम्पति है, और भगवान की देन है। और इसलिए इसका वितरण सब की आवश्यकता के अनुसार ही होना चाहिए, एक क्रान्तिकारी विचार है। सौभाग्य से हमारे देश मे ऐसे उदात्त विचारों को ग्रहण करने वालों की कमी नहीं। इसके अतिरिक्त सन्त विनोबा की वाणी के रूप में इस विचार का महत्व तथा व्यापकता और भी बढ़ गई है। फलतः हम देखते हैं कि पिछले कुछ ही वर्षों मे भूमिदान आन्दोलन काफी जोर पकड़ गया है। मुझे पता लगा है कि अभी तक ४० लाख एकड़ से ऊपर भूमि लोग अपनी इच्छा से दान कर चुके हैं। यह भूमि, भूमिहीन लोगों मे बांटी जा रही है और इस प्रकार देश भर में हमारी प्राचीन अहिंसात्मक परम्परा के अनुरूप एक विचित्र क्रान्ति जन्म ले रही है।

भूमिदान आन्दोलन ने जिस विचारधारा को प्रचलित किया है, उसके कारण सम्पति दान को भी प्रोत्साहन मिला है। धनी लोग स्वेच्छा से गरीब लोगों की सहायतार्थ सम्पति भेंट कर रहे हैं। इस प्रकार जो सम्पति प्राप्त हुई है उस से दरिद्र वर्ग को कितनी मात्रा में सहायता मिली, केवल

यही जान लेने से इस क्रान्तिकारी आन्दोलन के महत्व का अनुमान नहीं लग सकता। इस विचार का वास्तविक महत्व जन-साधारण की प्रवृति में परिवर्तन लाना है। अहिंसा के सिद्धान्त को दैनिक जीवन मे उतारने का यह एक सुन्दर उदाहरण है।

विनोबा जी के परिश्रम और सत्प्रयत्न का ही यह सुफल है कि अब लोग भूमिदान के महत्व को समझने लगे हैं। पिछले दिनों मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि उड़ीसा के दौरे में भूमिदान ने ग्रामदान आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और उस प्रान्त के लोगों ने ४०० के लगभग ग्राम दान मे दिए। इस से बढ़ कर ठोस राष्ट्र-निर्माण का कौन सा काम हो सकता है? यदि हम प्रेम और अहिंसा के बल पर भूमि की समस्या को हल कर पाये, तो हमारा देश इस पर गर्व कर सकेगा। यह एक एसा क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जो भारत की सीमाओं मे ही न रहकर सारे संसार को प्रभावित करेगा।

इस दिशा मे जो कुछ भी अभी तक हुआ है वह विनोबा जी के प्रताप और उनकी सन्त-वाणी का ही फल है। प्राचीन काल से इस देश मे जो सन्तों की परम्परा चली आई है, विनोबा जी उसी शृंखला के एक अमूल्य रत्न हैं। वर्तमान भारत को उन पर गर्व है और उनका जन्म दिवस हम सब के लिए एक महान पर्व के समान है। इस दिन हमे विनोबा जी के उपदेश को ग्रहण कर उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए। मैं समझता हूं कि इस महान तपस्वी के जन्म दिन को मनाने का यही सब से उत्तम तरीका है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि सन्त विनोबा चिरायु हों और वे अपने सामने ही समानता के आधार पर निर्मित सच्चे स्वराज्य की स्थापना देख सकें।

(६ सितम्बर, १९५५)

हिन्दी प्रचारकों को परामर्श

आगामी हिन्दी दिवस के अवसर पर एक बार फिर मैं सभी देशवासियों से, हिन्दी के महत्व के सम्बन्ध मे दो शब्द कहना चाहूंगा। नि.सन्देह हम ने अपने संविधान में हिन्दी के लिए एक निश्चित स्थान निर्धारित किया है, जिसके अनुसार आगामी दस वर्षों में इस भाषा को अंग्रेजी का स्थान ग्रहण

करना है । यद्यपि इस सम्बन्ध में प्रायः सभी निर्णय उच्च स्तर पर किए जा चुके हैं, मैं हिन्दी भाषा भाषियों से आग्रह करूंगा कि हिन्दी के प्रचारार्थ अथवा इसके पक्ष का समर्थन करते हुए हर समय संविधान का ही आश्रय लेना ठीक नहीं। हिन्दी की अपनी व्यापकता है, अपना इतिहास और साहित्य है, जिस पर सभी हिन्दी भाषियों को गर्व है। यदि हम इस साहित्य को हिन्दी के वास्तविक महत्व का आधार मानें, और इसके पक्ष का सक्रिय समर्थन करते हुए संविधान की बात को ही आगे न रखें तो यह अच्छा होगा। इससे हिन्दी साहित्य को और अधिक समृद्ध करने और सभी दिशाओं में इसे उन्नत करने की प्रेरणा मिलेगी। मुझे आशा है कि इस अवसर पर जो विचार व्यक्त किए जायेंगे उनके फलस्वरूप हिन्दी और भारत दोनों का भला होगा और हिन्दी साहित्य की वृद्धि और उन्नति पर जोर दिया जायगा।

(९ सितम्बर, १९५५)

अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी

इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के संयोजकों को मैं बधाई देता हूं। इस प्रदर्शनी का नाम "भारतीय उद्योग मेला" ठीक ही रखा गया है। मुझे खुशी है कि इस प्रदर्शनी में, जिसका आयोजन भारतीय व्यापार तथा उद्योग मण्डल संघ द्वारा किया गया है, बहुत से विदेशी राष्ट्र हिस्सा ले रहे हैं। इस अवसर पर जो अनेक चीजें प्रदर्शित की जायेंगी उन से हमारे देश के लोगों को पता लग सकेगा कि भारत औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में कितना आगे बढ़ सका है, और दूसरे उन्नत देश इस दिशा में कितनी प्रगति कर चुके हैं। मुझे आशा है कि इस मेले से भारतीय उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन मिलेगा। मैं समझता हूं कि इस मेले में दर्शकों को बहुत कुछ देखने को मिलेगा, जिस से उनका मनोरंजन होगा, और उनकी सौन्दर्य सम्बन्धी भावना की तृप्ति होगी।

(१३ सितम्बर, १९५५)

"ग्राम सेवक" और ग्राम सुधार

"ग्राम सेवक" पत्रिका के हिन्दी संस्करण का मैं स्वागत करता हूं। मुझे आशा है ग्रामीण जनता इस पत्र से पूरा लाभ उठाएगी और देहात सुधार की जो बहुत सी योजनायें इस समय हाथ में ली जा चुकी हैं, उनका महत्व समझने में और उन्हे किस प्रकार सफल बनाया जाए यह जानने में, हमारे ग्रामीण भाइयों को इस पत्रिका से सहायता मिलेगी। मैं "ग्राम सेवक" को सफलता चाहता हूं और आशा करता हूं कि यह पत्रिका स्वतन्त्र भारत के ग्रामवासियों के लिए नव चेतना का प्रतीक बन सकेगी।

(२३ सितम्बर, १९५५)

सामुदायिक योजना का मुखपत्र—"कुरुक्षेत्र"

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सामुदायिक योजना का मुखपत्र "कुरुक्षेत्र" अब हिन्दी में भी निकलने जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत जो कार्य हो रहा है वह अधिकतर देहातों में ही है, और ग्रामों में अधिकांश लोग हिन्दी ही बोलते और समझते हैं। इसलिए इस पत्रिका की उपादेयता असन्दिग्ध है। मुझे आशा है कि हिन्दी "कुरुक्षेत्र" के द्वारा सामुदायिक योजना के कार्यक्रम में जन-साधारण की अधिक रुचि पैदा हो सकेगी, और कार्यकर्ताओं के लिए भी प्रचार आदि का कार्य अधिक सुगम हो जाएगा।

(२३ सितम्बर, १९५५)

दिल्ली में रामलीला

दिल्ली में प्रति वर्ष रामलीला होती है जिसे लाखों नर-नारी और बच्चे देखते हैं। यह एक ऐसा पर्व है जिसके द्वारा मनोरंजन के साथ साथ लोगों की धार्मिक आस्थाओं की भी तृप्ति होती है। भारतीय संस्कृति में रामायण का एक विशेष स्थान है। रामायण के नायक श्रीरामचन्द्र जी मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात आदर्श पुरुष हैं। उनके जीवन चरित्र का अभिनय हमें दैनिक जीवन में प्रेरणा प्रदान करता है। मैं श्री धार्मिक लीला समिति के सत्प्रयास का स्वागत करता हूं और उसकी सफलता चाहता हूं।

(२६ सितम्बर, १९५५)

कुष्ठ-निवारण, एक सामाजिक दायित्त्व

*कुष्ट की बीमारी एक ऐसन भयंकर बीमारी बा कि जेकरा है बीमारी पकडता उ आदमी सिर्फ निकम्मा ही ना हो जाता बल्कि उ समाज में घृणित बन जाता। इ चिन्ता के बात बाटे, कि बिहार प्रान्त में इ रोग बहुत फैलल वा। एह वजह से जब भंरवा में कुष्ट रोग के रोगी के सेवा और दवा के वास्ते सेवाश्रम खुलल त हमरा बहुत खुशी भलेला।

इ खुशी के बात बाटे कि ११, २ दिसम्बर के सेवाश्रमकी तरफ से बिहार प्रान्तीय कुष्टरोगी सेवक सम्मेलन और महारोगी कल्याण दिवस मनावलजाई। हम आशा करतानी कि सम्मेलन के राय विचार के फलस्वरूप सेवाश्रम के सेवा के काम और आगे बढी। हम सम्मेलन के सफलता चाहतानी।

(२ दिसम्बर, १९५५)

केसरी का अभिनन्दन

इस शुभ अवसर पर जब "केसरी" अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण करने जा रहा है, मैं "केसरी" के प्रति अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं और उस पत्र से सम्बन्धित सब लोगों को बधाई देता हूं। हमारे देश में बहुत समाचार-पत्र ऐसे नहीं जिनका इतिहास ५० वर्ष से ऊपर जाता हो। 'केसरी' जैसे समाचार-पत्र जिन्होंने देश में युगान्तरकारी परिवर्तन घटते देखे हैं और उनके लिए यथासम्भव देश के लोगों को तैयार करने का सतत प्रयत्न किया है, भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में गौरव का स्थान रखते हैं। मेरी यह कामना है कि 'केसरी' अपने प्रवर्तक, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर, सदा देशवासियों की सेवा करता रहे।

(२६ दिसम्बर, १९५५)

महिलाओं की शिक्षा

इन्द्रप्रस्थ कन्या पाठशाला की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं इस विद्यालय के प्रति अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं, और उन सभी को

---

*यह सन्देश भोजपुरी में भेजा गया था। मौलिक सन्देश यहाँ दिया गया है।

बधाई देता हू, जिनका इस संस्था से किसी भी रूप मे सम्बन्ध है अथवा रहा हो। ५० वर्ष हुए श्रीमती एनी बेसेन्ट की प्रेरणा से इस विद्यालय की स्थापना दिल्ली मे हुई थी। उस समय भारतीय महिलाओं मे शिक्षा का बहुत अभाव था। उस समय से इस अर्ध शताब्दी मे यद्यपि महिला समाज मे शिक्षा का प्रसार हुआ है, किन्तु हमारे लक्ष्य और आवश्यकताओं की दृष्टि से अभी भी इस क्षेत्र मे हमे बहुत कुछ करना रहता है। इन्द्रप्रस्थ कन्या पाठशाला जैसी सस्थाओं ने इस दिशा मे अभी तक जो कार्य किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार की सभी पुरानी संस्थायें यथासाध्य उन्नति करती रहे, जिससे कि शीघ्र से शीघ्र हम शत-प्रतिशत साक्षरता के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

(२७ दिसम्बर, १९५५)

फसल प्रतियोगिता-उत्पादन में वृद्धि का साधन

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश, उत्तरप्रदेशीय फसल प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह लखनऊ मे २७ दिसम्बर १९५५ को मनाने जा रहा है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, और यहां की करीब ७५ प्रतिशत जनता कृषि पर अपनी जीविका के लिए निर्भर है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से देश मे खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक प्रयत्न प्रारम्भ किये गये, जिनमे फसल प्रतियोगिताओं का विशेष महत्व है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले किसानों ने उन्नत कृषि विधियों के प्रयोग तथा कठिन परिश्रम से ऊंची उपज प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि भारत की धरती अभी भी काफी उर्वरी है, और यह भी कि कम से कम क्षेत्र से भी अधिक उपज ली जा सकती है।

इन प्रतियोगिताओं के द्वारा देश के किसानों को अपनी जमीन से अधिक पैदावार लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है तथा देश मे अन्न के उत्पादन मे वृद्धि होती है, जिसमे देश का कल्याण है।

मैं इस समारोह की पूर्ण सफलता चाहता हूं।

(२० दिसम्बर, १९५५)

१९५६

पटना में ग्रामोद्योग भवन

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि अखिल भारतीय खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड की तरफ से पटना में संग्रहालय खोला जा रहा है। बम्बई, दिल्ली आदि नगरों में इस प्रकार के संग्रहालय पहले ही खोले जा चुके हैं। और जहां तक मुझे ज्ञात है, यह परीक्षण काफी सफल रहा है। पटना में तो यह और भी सफल होना चाहिए, क्योंकि खादी प्रचार के कार्य में बिहार राज्य असहयोग आन्दोलन के दिनों से ही बहुत आगे रहा है। इस संग्रहालय में खादी के अतिरिक्त ग्रामोद्योग के दूसरे उत्पादन भी रहेंगे। इस तरह यह संस्था खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के लिए ही नहीं बल्कि भावी ग्राहकों के लिए भी अधिक उपयोगी हो सकेगी।

ग्रामोद्योग बोर्ड तथा पटना संग्रहालय के संयोजकों को मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूं कि इस सत्प्रयास में वे सफल होंगे।

(२१ जनवरी, १९५६)

कवि सम्मेलन

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई है कि इस बार भी एक कवि सम्मेलन होने जा रहा है जिसमें हिन्दी के कवि तथा उर्दू के शायर भाग लेने वाले हैं। दिल्ली मुगल बादशाहों के ज़माने से इस तरह के मुशायरे का एक खास स्थान रही है और इसमें शक नहीं कि हमारे कवियों के सुन्दर उद्गार सुनने का ऐसा मौका अब बहुत नहीं मिलता। इसलिए इस सम्मेलन में भाग लेने वालों को और इसका प्रबन्ध करने वालों को धन्यवाद और बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि यह समारोह पूरा सफल होगा।

(२८ जनवरी, १९५६)

हरिभाऊ उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ

यह जानकर मुझे खुशी हुई कि अजमेर तथा राजस्थान के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं द्वारा श्री हरिभाऊ उपाध्याय की ६४वीं वर्षगांठ के अवसर पर

उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेट करने का आयोजन किया गया है। हरिभाऊ जी गत ३० वर्षो से अधिक से राजस्थान में रचनात्मक कार्य करते रहे हैं। अपने सार्वजनिक जीवन मे इन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की भी काफी सेवा की है। कई वर्षों तक गांधी जी के निकट सम्पर्क मे रहने के कारण, उपाध्याय जी ने बापू के उच्च आदर्शों को अपने जीवन मे उतारने का प्रयास किया है। मै समझता हूं हरिभाऊ जी के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही हटुंडी मे आश्रम की स्थापना हुई जिसको उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भागीरथी बहन चला रही है और दूसरे प्रकार से अजमेर राज्य विकास तथा कुटीर उद्योग आदि रचनात्मक कार्यो के क्षेत्र मे गत ५-६ वर्षों की अल्प अवधि मे इतनी उन्नति कर सका है। मै श्री हरिभाऊ उपाध्याय के प्रति अपनी शुभ-कामनाये भेट करता हूं और यह आशा करता हूं, कि अजमेर तथा राजस्थान के जन-साधारण उनके जीवन से बहुत कुछ सीखेगे, और सन्मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त करेगे।

(१६ मार्च, १९५६)

बोधगया मन्दिर की व्यवस्था का दायित्व

बोधगया के मन्दिर की परामर्शदातृ समिति के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर अपनी शुभ-कामनाये भेजते हुए मुझे विशेष हर्ष हो रहा है। इस प्राचीन मन्दिर के इतिहास, अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे इसकी मान्यता तथा आगामी बुद्ध जयन्ती को देखते हुए परामर्शदातृ समिति के प्रथम अधिवेशन का निश्चय ही विशेष महत्व है। कुछ दिनों मे ही बुद्ध जयन्ती समारोह के सम्बन्ध में विदेशों से अनेक यात्री इस पवित्र स्थान के दर्शनों को पहुंचेगे। उन सबकी सुविधा के लिए यथोचित व्यवस्था करने का दायित्व हम पर है और निश्चय ही उस कर्तव्य के निभाने मे मन्दिर का प्रबन्ध करने वाली समिति और इस परामर्शदातृ समिति की सलाह और सम्मति केवल वांछनीय ही नहीं अत्यन्त आवश्यक भी है।

करीब गत ४० वर्षो से इस पवित्र स्थान का, जहां भगवान बुद्ध ने तपश्चर्या के फलस्वरूप ज्ञान प्राप्त किया था, उतम प्रबन्ध करने पर सोच विचार और कानूनी विधेयक इत्यादी बनाने तथा प्रबन्धकर्तृ समिति के संगठन

का प्रयत्न होता रहा है। अब प्रबन्धकर्तृ समिति कुछ दिनों से सुचारु रूप से अपना कर्तव्य कर रही है और उस के सहायतार्थ इस परामर्शदातृ समिति का भी संगठन पूरा हो गया और इसकी पहली बैठक आज हो रही है। मुझे पूरी आशा है कि यह समिति, जिस में अनेक बौद्ध देशों के प्रतिनिधि शामिल हैं, इस तीर्थ-स्थान की देखरेख के शुभ कार्य को, यात्रियों की सुख-सुविधा की दृष्टि से और भगवान बुद्ध के उच्च आदर्शों के अनुकूल, सम्पन्न करने की सत्प्रेरणा देगी।

(१७ मार्च, १९५६)

बम्बई में ग्रामोद्योग

बम्बई राज्य के कोरा स्थित ग्रामोद्योग केन्द्र ने घरेलू उद्योगों के प्रचार के लिए जो कुछ किया है, उस से मैं भली प्रकार परिचित हूं। प्रचार कार्य के अतिरिक्त इस केन्द्र में विभिन्न उद्योगों के शिक्षण का भी अच्छा प्रबन्ध है। ग्रामोद्योगों का हमारे देहातों की सम्पन्नता से गहरा सम्बन्ध है। मैं कोरा ग्रामोद्योग की सफलता चाहता हूं और उसे अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

(१९ मार्च, १९५६)

श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सम्मेलन

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सम्मेलन को उसकी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और समारोह की सफलता की कामना करता हूं। यह सम्मेलन गत ५० वर्षों से अहिंसा, सत्य, समाज-सुधार तथा विद्या प्रचार का कार्य करता रहा है। मेरा विश्वास है कि आयोजित समारोह के फलस्वरूप उक्त सम्मेलन के कार्यकर्ता अपने निर्धारित आदर्शों का प्रचार भारतीय समाज में उत्साह और शक्ति के साथ कर सकेंगे।

(३१ मार्च, १९५६)

भूतपूर्व सैन्य कर्मचारियों से

मैनपुरी जिले के भूतपूर्व सैन्य कर्मचारियों को उनके वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं। मुझे आशा है कि जो कुछ

आप लोगों ने सैन्य सेवा के समय सीखा पढा होगा, उसका पूरा उपयोग आप देहात-सुधार और दूसरे रचनात्मक कामों मे करने का यत्न करेंगे। हमारा देश कितना आगे बढता है और जन-साधारण के रहन-सहन मे कितना सुधार हो पाता है, यह बात बहुत हद तक देहातों मे चालू हमारी योजनाओं की सफलता पर निर्भर करती है। मैं आप लोगों की सफलता की कामना करता हूं और यह अनुरोध करता हूं कि आप देहात सुधार के काम मे पूरी दिलचस्पी ले।

(१६ अप्रैल, १९५९)

सेठ गोविन्द दास हीरक जयन्ती

यह बड़े हर्ष का विषय है कि सेठ गोविन्द दास जी की हीरक जयन्ती पर उन्हे एक अभिनन्दन ग्रथ भेट किया जा रहा है। सेठजी ने राष्ट्र सेवा के लिए जो त्याग किया है, उससे सभी लोग अच्छी तरह परिचित हैं। उनके जैसे सम्पन्न परिवार के व्यक्ति के लिए आज से पैंतीस छत्तीस वर्ष पहले गांधी जी के असहयोग आन्दोलन मे कूदने का मतलब था अपनी सम्पत्ति और समृद्धि की पूर्णाहुति दे देना, और अंग्रेजों का कोपभाजन बनना, जिनके हाथ मे उस समय संपूर्ण सत्ता थी। आजादी की लड़ाई मे सेठजी ने बड़ी निष्ठा और लगन से हिस्सा लिया और अपने मार्ग से कभी हटे नहीं। सेठजी जिस काम को उठाते है उसे पूरा किये बिना कभी नही छोड़ते।

उन्होंने देश के अनेक रचनात्मक कार्यों मे तन-मन-धन से भाग लिया है। जिनमे प्रमुख हैं: गो सेवा और भूदान यज्ञ।

हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने जो कुछ किया वह इतिहास मे अमर रहेगा। साथ ही वे साहित्य सृष्टा भी हैं। साहित्य-सृजन मे उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने साहित्य के सभी रूपों को अपने योगदान से समृद्ध किया है। एक सच्चे गान्धीवादी की तरह सेठजी का साहित्य हमे शान्ति और प्रेम का संदेश देता है।

ईश्वर करे वे दीर्घजीवी हों और राष्ट्र की निरन्तर सेवा करते रहे।

(१९ अप्रैल, १९५६)

"लोकवाणी" को बधाई

दैनिक "लोकवाणी" के लिए मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि यह पत्र यथापूर्व राजस्थान के जन साधारण की निस्स्वार्थ सेवा करता रहेगा, और जिस लोक-नेता स्व० श्री जमनालाल बजाज की पुण्य स्मृति में इसकी स्थापना की गई थी, उस महान् व्यक्ति के जीवन से अनुप्राणित हो "लोकवाणी" सदा जन-हित के लक्ष्य का अनुसरण करता रहेगा।

(२० अप्रैल, १९५६)

बिहार राज्य पंचायत परिषद्

पंचायतें देश की शासन व्यवस्था की सुदृढ़ नींव हैं तथा इसकी व्यवस्था की सफलता पर ही देश का भविष्य निर्भर है। पंचायतें देश की वे स्थानीय स्वराज्य संस्थायें हैं, जिन पर विश्वास रख जनता पूर्णरूप से शान्त एवं कल्याणकारी वातावरण की स्थापना कर सकती है। यह खुशी की बात है कि भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् बिहार राज्य पंचायत परिषद् देश में प्रचलित पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत देश की शासन व्यवस्था को दृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योग दे रही है, और आज इस समारोह का उदघाटन हमारे प्रधान मंत्री कर रहे हैं। परिषद् समाज में आत्मविश्वास एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना जागृत कर, अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल हो यही मेरी कामना है।

(२१ अप्रैल, १९५६)

समयदान सेवा सम्मेलन

बुद्ध जयन्ती के पुनीत अवसर पर चिमूर में होने वाले जनजागृति समयदान सेवा सम्मेलन के लिये मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूं कि भगवान बुद्ध के अमर सन्देश को समझ सभी लोग उससे प्रेरणा ग्रहण करेंगे और उसे जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१९ मई, १९५६)

बुद्ध जयन्ती के अवसर पर

भगवान बुद्ध की २५००वीं वर्षगांठ के पुनीत अवसर पर मैं अपने देशवासियों तथा विश्व के नागरिकों का अभिनन्दन करता हूं और उन्हें अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। उन सब के लिए जो नैतिकता को श्रेष्ठ मानते हैं, और आत्मा को लौकिक तथा क्षणिक तत्वों से ऊंचा समझते हैं, यह दिन एक पुण्य तिथि है। यह स्वाभाविक है कि इस देश के लोग, जहां गौतम ने जन्म लिया, जहां उन्होंने घोर तपश्चर्या द्वारा सत्य की खोज की और जहां उन्होंने पूर्ण सहिष्णुता और सार्वभौम शान्ति का उपदेश दिया, आज के दिन विशेष हर्ष का अनुभव करें। हमारे देशवासी बौद्धमत के अनुयायी नहीं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत एक बौद्ध देश नहीं है, किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि बौद्धधर्म का सार हिन्दू धर्म, विचारधारा तथा हिन्दू जीवन दर्शन में व्याप्त है। संभव है अन्य देशों के लोग यह समझें कि भगवान बुद्ध के आदेशों और उनकी परम्परागत शिक्षा को भारतवासियों की अपेक्षा उन्होंने अपने जीवन में अधिक उतारा है।

भगवान बुद्ध के अमर संदेश की यह विशेषता है कि समय के साथ वह जीर्ण नहीं हुआ है, बल्कि पहले से भी अधिक देदीप्यमान है और आज प्रकाश-स्तम्भ की भांति जगमगा रहा है। मैं आशा करता हूं कि अणु तथा हाइड्रोजन बम की चर्चा में व्यस्त संसार कम से कम कुछ क्षणों के लिए आज प्रेम और शान्ति के उस संदेश की ओर ध्यान देगा, जिस से इन २५०० वर्षों में अगणित मनुष्यों ने वास्तविक सुख और सान्त्वना प्राप्त की है और जिस की पहले किसी भी समय की अपेक्षा आज अधिक आवश्यकता है।

(२४ मई, १९५६)

महाराणा प्रताप जयन्ती

भारत की जनता जिन विभूतियों और उनकी अमर जीवनियों से प्रेरणा ग्रहण करती है, महाराणा प्रताप उन्हीं महापुरुषों में से हैं। स्वाधीनता प्रेम, आदर्श के प्रति अडिग आस्था और उसकी पूर्ति के लिए अकथनीय कष्ट सहन

करने की क्षमता, ये असाधारण गुण महाराणा प्रताप के जीवन चरित्र से सहज ही प्राप्त होते हैं। ऐसे महापुरुष का जयन्ती समारोह एक पुनीत अवसर है, और राष्ट्र के जीवन में उसकी व्यावहारिक उपादेयता भी है। मैं आशा करता हूं कि राजस्थान संस्कृति परिषद् के तत्वावधान में होनेवाला महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह सफल होगा और उसमें भाग लेने वाले सभी लोगों को महाराणा के जीवन से सत्प्रेरणा मिलेगी।

(८ जून, १९५६)

बिहार दलित वर्ग संघ

बिहार राज्य दलित वर्ग संघ के आठवें अधिवेशन की सफलता की मैं कामना करता हूं, और उसे अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। मुझे पूर्ण आशा है कि उक्त संघ ही नहीं बल्कि समस्त देश दलितोद्धार के पुनीत कार्य को उस समय तक बराबर आगे बढ़ाता रहेगा, जब तक भारतीय समाज में किसी भी वर्ग अथवा व्यक्ति के लिए दलित शब्द का प्रयोग एकदम निरर्थक न हो जाये।

(१४ जून, १९५६)

डाक-तार विभाग की पत्रिका का प्रकाशन

मुझे खुशी है कि केन्द्रीय डाक-तार विभाग ने अपने कर्मचारियों और जनता की सुविधा तथा जानकारी के लिए डाक-तार नाम का मासिक पत्र निकालने का निश्चय किया है। डाक-तार विभाग के कर्मचारी देश के हर कोने में बड़े-बड़े शहरों से लेकर छोटे-छोटे गांवों में रहते हैं और सभी श्रेणियों के लोगों से उनका सम्पर्क रहता है। सभी कर्मचारियों और पदाधिकारियों में परस्पर सद्भावना और देश के हित में जनता के प्रति सेवा की भावना पैदा करने के लिए यह आवश्यक है, कि उन्हें अपने कर्तव्य का पूरा ज्ञान हो। इसके अतिरिक्त, जनता को बेहतर सुविधाएं देने की डाक-तार विभाग की योजनाएं क्या हैं और किस तरह उन पर अमल हो रहा है, यह सब जानने की भी आवश्यकता है। उक्त विभाग की प्रस्तावित पत्रिका इस प्रकार की सूचना सामग्री सभी तक पहुंचा सकेगी। इसलिए इसकी उपादेयता

स्पष्ट ही है। मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका द्वारा डाक-तार विभाग अपने कर्मचारियों को अधिक कुशल और देश तथा जनता की सेवा में तत्पर बना सकेगा। मैं डाक-तार की सफलता की कामना करता हूं।

(२१ जून, १९५६)

लोकमान्य तिलक जन्मशताब्दी के अवसर पर

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की जन्मशताब्दी स्वतन्त्र भारत के लिए एक महान पर्व है। लोकमान्य, स्वराज्य के मूलमंत्र के प्रणेता और हमारी राष्ट्रीय क्रान्ति के जन्मदाता थे। अपने जीवन में परिश्रमपूर्वक उन्होंने संगठन तथा राष्ट्रीयता का प्रचार किया, और इसके लिए ब्रिटिश सरकार के साथ बार-बार संघर्ष करना पड़ा जिसके फलस्वरूप कारागार और देश-निर्वासन के दण्ड सहे। उनकी स्मृति को जागृत रखने का जो प्रयास किया जा रहा है वह स्तुत्य है और सबके समर्थन का अधिकारी है। मैं उसकी सफलता चाहता हूं।

(२४ जुलाई, १९५६)

मेरठ का शिक्षा सदन

शिक्षा सदन, मेरठ को मैं उसके १७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। बच्चों की शिक्षा के लिए व्यवस्थित यह एक छोटी सी संस्था है। परन्तु इसकी स्थापना महात्मा गांधी के हाथों हुई थी। मुझे आशा है कि शिक्षा सदन से सम्बद्ध सभी लोग इस बात का ध्यान रखेंगे, और विद्यार्थी बच्चे इस बात पर गर्व करते हुए गांधी जी की विचारधारा को समझने का प्रयास करेंगे। मैं शिक्षा सदन की सफलता की कामना करता हूं।

(२१ जुलाई, १९५६)

आयुर्वेद साहित्य सम्मेलन

आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है, जिसकी, देश की जनता के हित में, पुनरुद्धार और आधुनिकरण की मांग कई वर्षों से की जा रही है।

इस प्रणाली को उसकी उपयोगिता के अनुकूल मान्यता देने के मार्ग में जो कठिनाइयां हैं, उन में आयुर्वेद साहित्य-सम्बन्धी व्यापक साहित्य की कमी प्रमुख है। इसलिए मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आयुर्वेद साहित्य जुटाने, पुरानी पुस्तकों की ढूंढ खोज करने और नए ग्रन्थों की रचना करने के लिए अखिल भारतीय आयुर्वेद साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया है। मैं समझता हूं कि आयुर्वेद को अधिक लोकप्रिय बनाने और आधुनिक ढंग से उसकी शिक्षा आदि का प्रबन्ध करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पग है। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं, और यह आशा करता हूं कि इस में जो विवेचन तथा विचार-विनिमय किया जाएगा, उसके फलस्वरूप आयुर्वेद साहित्य की श्रीवृद्धि होगी।

(१४ अगस्त, १९५६)

राज्यों का पुनर्गठन शुभ हो

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर संदेश

भारत की स्वतन्त्रता की नौवीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर मैं अपने समस्त देशवासियों का अभिनन्दन करता हूं, और उन्हें अपनी शुभ-कामनायें भेंट करता हूं। आज के दिन इस से बढ़ कर मैं और कुछ नहीं कर सकता कि आपको उन महान् कार्यों की याद दिलाऊं जो हमें अभी करने हैं। अपनी प्रिय मातृभूमि से दरिद्रता, बीमारी और अज्ञान के विनाश के लिए हम राष्ट्रीय साधनों के विकास के हेतु जो रचनात्मक कार्य कर रहे हैं, वे निश्चय ही अत्यन्त आवश्यक हैं, किन्तु राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करना और उसे प्रोत्साहन देना भी एक ऐसा कार्य है जो कम आवश्यक नहीं, और जिसकी ओर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए। हमें यह जान लेना चाहिए कि राष्ट्रीय एकता के बिना भौतिक सम्पन्नता के लिए हमारे प्रयास संकट में ही नहीं पड़ जायेंगे बल्कि एकदम निरर्थक हो जायेंगे।

कुछ महीनों से हम राज्यों के पुनर्गठन की समस्या को अन्तिम रूप से सुलझाने में व्यस्त हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस कार्य को किसी राज्य विशेष के हित में नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र के हित में हाथ में लिया गया था। वास्तव में यह एक ऐसा प्रश्न है जहां राष्ट्रीय और प्रादेशिक हित

समान होने चाहिएं और वास्तव में समान हैं भी। एक समय तो ऐसा जान पड़ने लगा था कि पुनर्गठन का कार्यक्रम हमें अवांछनीय घटनाओं की ओर ले जा रहा है, किन्तु ईश्वर की कृपा से यह कार्य अब सभी सम्बद्ध दलों की सद्भावना तथा सहिष्णुता से सम्पन्न होने जा रहा है। इस दिशा में द्विभाषी बम्बई राज्य के पक्ष में जो ऐतिहासिक निर्णय हुआ है वह भारतीय संसद के लिए सदा गौरव का विषय रहेगा। मैं आशा करता हूं कि इस प्रश्न को हम उसी दृष्टिकोण से देखेंगे और जो निश्चय अब किए जा रहे हैं, उन्हें पूर्ण सद्भावना और सहनशीलता के साथ कार्यान्वित किया जाएगा।

यह हर्ष का विषय है कि पहली पंचवर्षीय योजना की सफलता द्वारा दूसरी योजना के लिए, जिसे अभी कार्यरूप दिया जाएगा, आशा और उत्साह का वातावरण पैदा हो गया है। इस समय जबकि देश के सभी प्रकार के भौतिक साधनों को उन्नत करने का हर सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है, प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि समाज में चाहे उसका कोई भी स्थान हो, वह इस रचनात्मक कार्य में स्वेच्छा से सहयोग दे। इस सम्बन्ध में मैं छोटे पैमाने पर चलाए जाने वाले कुटीर-उद्योगों के महत्व पर जोर देना चाहूंगा। विशाल उद्योगों और बड़े कारखानों की स्थापना का हमारा कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है, किन्तु इन घरेलू उद्योगों का भी हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। देश के विभिन्न भागों में चालू की गई कुछ जलविद्युत योजनाओं से बिजली प्राप्त होने लग गई है और इसके द्वारा हम छोटे उद्योगों को उन्नत कर सकते हैं और इस प्रकार कम से कम कुछ सीमा तक बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकते हैं।

हमें इस बात की खुशी है कि हमारी सरकार की विदेश-नीति सफल रही है। किन्तु मैं कहना चाहूंगा कि हमारे प्रधान मंत्री के व्यक्तिगत प्रयत्नों और संसार में सभी जगह शान्ति स्थापना की हमारी नीति के कारण हमारे देश को विश्व के राष्ट्रों में जो यश मिला है, वह स्थाई तभी हो सकता है जब हम अपने रचनात्मक कार्यक्रम को पूरा करने में सफल हों, और सभी लोग आपसी मतभेद सहिष्णुता तथा पारस्परिक सद्भावना से सुलझाने के लिए सदा तत्पर रहें।

मेरी यही प्रार्थना है कि इस देश मे कल्याण-राज्य स्थापित करने के हमारे प्रयत्न यथा-शीघ्र सफल हों। एक बार फिर मै आगामी वर्ष में अपने समस्त देशवासियों तथा प्रवासी भारतियों के सुख और समृद्धि की कामना करता हूं।

लन्दन हिन्दी परिषद्

लंदन की हिन्दी परिषद् की गतिविधि जान कर मुझे बहुत संतोष हुआ। गत चार वर्षो से यह परिषद् लंदन मे हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के प्रचार तथा प्रसार का स्तुत्य प्रयास कर रही है। भारतीय गणतन्त्र की राष्ट्रभाषा होने के नाते विदेशों मे हिन्दी के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता हो सकती है। मै समझता हूं उक्त परिषद् यथासंभव इस उत्सुकता के समाधान की व्यवस्था करती है। लंदन हिन्दी परिषद् द्वारा भक्त-शिरोमणि तुलसीदास को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जिस समारोह का आयोजन किया गया है, मै उसकी सफलता की कामना करता हूं। लंदन-स्थित विदेशी लोग यह जानकर निश्चय ही प्रसन्न होंगे कि तुलसीदास जी की अमर कृति, रामचरितमानस ने सैकड़ों वर्षो से करोड़ों भारतवासियों को कितना अधिक प्रभावित किया है।

(२२ अगस्त, १९५६)

पं० गोविन्द वल्लभ पन्त को श्रद्धाञ्जलि

पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त का जीवन एक ऐसे यशस्वी और कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्ता का जीवन है, जिसकी दिनचर्या और समस्त कार्यक्रम सदा जनता तथा राष्ट्र की सेवा की भावना से प्रेरित हुआ है। गत ४० वर्षों से अधिक समय से पन्त जी ने सुचारु रूप से सेवा के व्रत को निभाया है। कुमाऊं के पर्वतीय क्षेत्र से आरम्भ कर और वर्षों तक उत्तर प्रदेश में प्रशासन यंत्र का संचालन कर, उनकी प्रतिभा तथा योग्यता की, प्रान्तीय सीमाओं से बाहर आवश्यकता महसूस हुई। स्वातन्त्र्य संग्राम के समय ही पन्त जी को राष्ट्रीय नेता के रूप मे मान्यता मिली थी और उस संग्राम के वे प्रमुख सेनानी समझे जाने लगे थे।

उत्तर प्रदेश छात्र संघ द्वारा पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त के जन्म दिवस पर 'पं० पन्त अभिनन्दन पुस्तिका' प्रकाशित करने का आयोजन सराहनीय है। मैं समझता हूं, छात्रों को अनुशीलन तथा अनुशासन के सम्बन्ध मे जितना पथ-प्रदर्शन पन्त जी के जीवन से मिलेगा, उतना आसानी से शायद और जगह से न मिल सके। मै आशा करता हूं कि उत्तर प्रदेश के छात्र पन्त जी के जीवन-चरित्र का गम्भीर अध्ययन करेंगे और उससे स्फूर्ति तथा प्रेरणा ग्रहण करने मे समर्थ होंगे।

(२३ अगस्त, १९५६)

हिन्दी दिवस का महत्व

आगामी हिन्दी दिवस के अवसर पर एक बार फिर मैं अपने देशवासियो का ध्यान राष्ट्रभाषा के महत्व की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। यह बात सभी जानते हैं कि किसी भी स्वतन्त्र देश की राष्ट्रभाषा कोई विदेशी भाषा नहीं हो सकती। इसीलिए जब अंग्रेजी का स्थान किसी भारतीय भाषा को देने का प्रश्न हमारी संविधान परिषद् के सामने आया, तो उसने एक मत से यह निर्णय किया, कि यथा-शीघ्र, परन्तु १५ वर्ष से पहले पहले अंग्रेजी की जगह हिन्दी को स्थापित किया जाए। यह निर्णय करते हुए यह बात स्पष्ट कर दी गई कि अपने अपने क्षेत्र मे सभी प्रादेशिक भाषायें प्रशासनिक और दैनिक कामकाज का माध्यम रहेंगी और उन भाषाओं का पूर्ण विकास तथा साहित्यिक उन्नति हर प्रकार से अपेक्षित है। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग केन्द्रीय कामकाज के लिए और अन्तरप्रदेशीय बातचीत तथा पत्र-व्यवहार के लिए ही सीमित रहेगा। यह स्पष्ट है कि उन सभी साधनों मे जो इस प्राचीन देश को एकता के सूत्र मे बांधते है, और भविष्य मे इस एकता की भावना को सुदृढ़ बनायेंगे, हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। आशा करता हूं कि हिन्दी दिवस के अवसर पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तथा अन्य संस्थायें जिनके तत्वावधान मे इस दिवस को मनाने का आयोजन किया जाय, बातों का ध्यान रखेंगी और इस सम्बन्ध मे किसी तरह का भ्रम पैदा नहीं होने देंगी।

(३० अगस्त, १९५६

दिल्ली में मद्यनिषेध कार्यक्रम

मुझे खुशी है कि दिल्ली राज्य सरकार ने मद्य-निषेध के कार्यक्रम को अमल में लाने के लिए, जन-साधारण का समर्थन प्राप्त करने के हेतु, मद्य-निषेध सप्ताह मनाने का निश्चय किया है। किसी भी दूसरे निषेधात्मक आदेश की तरह, सार्वजनिक रूप से मदिरा-पान पर निषेध को सफल बनाने के लिए इस के पक्ष में और शराब पीने के विरुद्ध जन-मत पैदा करना आवश्यक है। मदिरा-पान के व्यक्ति और समष्टि दोनों के लिए जो दुष्परिणाम होते हैं उन सब पर हमें इस सप्ताह में ध्यान देना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि इस सम्बन्ध में राज्य सरकार के निश्चय का जनता द्वारा समर्थन होगा और इस बुरी आदत को छुड़ाने की दिशा में सरकार के यत्न सफल होंगे।

मैं राज्य सरकार की सफलता चाहता हूं और यह आशा करता हूं कि मद्य-निषेध सप्ताह के फलस्वरूप जनमत मद्य-निषेध की नीति के पक्ष में किया जा सकेगा।

(२६ सितम्बर, १९५६)

"विधि संवाद" का प्रकाशन

नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में "विधि संवाद" के प्रकाशन का मैं स्वागत करता हूं। यह पत्रिका विधि अथवा कानून के क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता का मार्ग-दर्शन कर सकेगी, ऐसी मुझे आशा है। आधुनिक जगत में विधि समाचार संग्रह, उनका सम्पादन तथा प्रकाशन पत्रकारिता का एक आवश्यक अंग है। नागरी प्रचारिणी सभा पारिभाषिक शब्दों के प्रमाणिक अनुवाद द्वारा इस दिशा में बहुत उपयोगी कार्य कर सकती है। मैं "विधि संवाद" की सफलता की कामना करता हूं और इस अवसर पर पत्रिका के प्रणेताओं को अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं।

(२७ सितम्बर, १९५६)

राष्ट्रभाषा और राष्ट्र निर्माण

मेरी यह धारणा है कि राष्ट्रभाषा का कार्य हमारे राष्ट्र-निर्माण के कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग है। यह ऐसा काम है जिसमें राष्ट्रभाषा प्रेमियों और देश के हितचिन्तकों के लिये कार्य करने की बहुत गुंजाइश है। मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन इस दिशा में भरसक प्रयत्न कर रहा है। जयपुर में होने वाले अखिल भारतीय सम्मेलन के सप्तम अधिवेशन के लिये अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं और उसकी सफलता की कामना करता हूं।

(१३ अक्तूबर, १९५६)

संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर

ज्यों ज्यों संसार के राष्ट्र सम्पन्नता और स्वाधीनता के पथपर अग्रसर होते जा रहे हैं, आपसी झगड़ों को बातचीत द्वारा शान्तिपूर्वक सुलझाने की आवश्यकता और भी महसूस होती जा रही है। हम पहले ही ऐसी स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं, जब रचनात्मक कार्य-क्षेत्रों मे मानव की प्रगति आपसी झगड़ों को शान्तिपूर्ण तरीकों से सुलझाने की क्षमता पर निर्भर करती है। यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो नवयुग का अभ्युदय निकट लाने और ऐसे संसार का निर्माण करने की हमारी योजनायें, जो शान्तिप्रियता और सहयोगिता की भावना पर आश्रित हैं, नष्टभ्रष्ट हो जायेंगी। इसलिये, आइये एक बार फिर हम संयुक्त राष्ट्र के प्रशंसनीय उद्देश्यों का ध्यान करें, उसके सिद्धान्तों को कार्य रूप देने का प्रयत्न करे, और एक बार फिर उनके प्रति आस्था का व्रत धारण करे।

जो वर्ष अभी समाप्त हुआ है, उसमें संयुक्त राष्ट्र संघ संसार तथा मानवता से सम्बन्धित अनेक जटिल समस्यायों को सुलझाने में व्यस्त रहा है। उन समस्याओं में प्रमुख नि:शस्त्रीकरण और अणुशक्ति के शान्पूिर्ण उपयोग के लिये अन्तर्राष्ट्रीय एजंसी की स्थापना है। ऐसे मामलों मे धीमी प्रगति मे हमें हतोत्साह नहीं होना चाहिये। सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि इस संस्था के सिद्धान्तों मे हमारी आस्था दृढ़तापूर्वक बनी रहे। विश्व के करीब गत दो हजार वर्षों के इतिहास को देखते हुए यह स्वीकार करना

होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शान्तिपूर्वक बातचीत द्वारा सुलझाना एक नवीन संकल्पना है। इसलिये हमें धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये और पुराने ढर्रे को बदलने के लिये दृढ़ संकल्प हो प्रयत्न करना चाहिये।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के प्रयत्न हमारे अस्तित्व के लिये ही जरूरी नहीं, बल्कि ध्वंसात्मक युद्धों से त्रस्त और शान्तिपूर्ण उन्नति के लिये उत्सुक प्रबुद्ध मानवता की महत्वाकाक्षाओं के अनुरूप भी हैं।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र दिवस ऐसे समय आया है जब यह संस्था लोगों के विचारों मे बराबर रही है। स्वेज नहर की समस्या ने गम्भीर रूप धारण कर लिया था और वह शान्तिप्रिय राष्ट्रों की सद्भावना तथा बुद्धिमत्ता के लिये चुनौती बन गई थी। स्वेज नहर के झगड़े से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित राष्ट्रों और अन्य तटस्थ राष्ट्रों ने जो सुझाव इधर प्रस्तुत किये हैं, उनमें यह सुझाव भी है कि इस समस्या को संयुक्त राष्ट्र को सौंपा जाय। इस महत्व-पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मामले का निपटारा अधिकृत अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा किया जाय, इस सुझाव के पक्ष में सौभाग्य से जनमत बढ़ता रहा है। यद्यपि अभी यह नहीं कहा जा सकता कि यह समस्या सुलझ गई है, पर सुरक्षा परिषद् उन सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर चुकी है, जिनके आधार पर इस मामले के शान्तिपूर्ण हल के लिये आपसी बातचीत की जायगी। यह हर्ष की बात है, कि इन सिद्धान्तों को सभी राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया है।

विश्व के सभी राष्ट्रों और समस्त मानव जाति के प्रति संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और यह प्रार्थना करता हूं कि यह संस्था और इस के अन्तर्गत कार्य करने वाले विभिन्न विभाग संसार मे शांति स्थापना करने और युद्ध तथा युद्ध का भय दूर करने मे सफल हों।

(२३ अक्तूबर, १९५६)

नेपाल की जनता को विदाई संदेश

चार दिन के व्यस्ततापूर्ण कार्यक्रम के बाद आज मैं नेपाल के लोगों से विदा ले रहा हूं। इन चार दिनों मे आपके स्नेह और भ्रातृत्वपूर्ण उद्‌गारों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। नेपाल और भारत का युगों से जो सांस्कृतिक ऐतिहासिक और भौगोलिक सम्बन्ध रहा है, और आज भी है, मैंने इस यात्रा मे

उसे मूर्तिमान रूप मे देखा है। सौहार्द और सद्भावना के इस प्रदर्शन के लिए मैं आभार प्रकट करता हूं और नेपालवासियों को विश्वास दिलाता हूं कि उन सब के प्रति, उनके देश तथा राष्ट्रीय हितों के प्रति भारत सरकार और भारत के लोगों की सच्ची शुभ कामना और सहानुभूति है।

भारत स्वयं चिर निद्रा से जागृत हो हाल ही मे अपने भाग्य का विधाता हो सका है। अपने देश के सम्पूर्ण विकास और नागरिकों की सम्पन्नता के लिए निर्माण की दिशा मे हम ने राष्ट्रव्यापी प्रयत्न आरम्भ किए हैं। दरिद्रता तथा निरक्षरता के उन्मूलन के लिए नेपाल को भी हमारी तरह अभी बहुत कुछ करना है। एक दूसरे का हाथ पकड कर हमारे दोनों पडोसी राष्ट्र बहुत सी सामान्य समस्याओं को मिलजुल कर निबटा सकते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि अतीत के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर आश्रित पारस्परिक सहयोग की भावना से प्रेरित हो, हमारे दोनों देशों की जनता तथा सरकारे बराबर निजी तथा एक दूसरे के कल्याण के लिए कार्य करती रहेगी।

मैं एक बार फिर महामहिम महाराजाधिराज, नेपाल सरकार तथा नेपाल के जनगण को हृदय से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मेरा ऐसा स्वागत किया और भारत सरकार, भारत की जनता तथा अपनी ओर से उन्हे विश्वास दिलाता हूं कि हमारी शुभ-कामनाये तथा सद्भावना सदा उनके साथ रहेगी।

(२८ अक्तूबर, १९५६)

विद्यापति की स्मृति में

"विद्यापति स्मृति साहित्य महोत्सव" समारोह का मे स्वागत करता हूं और इस अवसर पर आयोजकों तथा अन्य साहित्य प्रेमियों के प्रति अपनी शुभकामनाएं भेंट करता हूं। विद्यापति एक युगप्रवर्तक कवि थे जिनकी वाणी ने हिन्दी और मैथिल साहित्य को ही नहीं, बंग साहित्य को भी समृद्ध किया। मैं आशा करता हूं, कि मिथिला के साहित्य सेवी मैथिल-कवि-कोकिल विद्यापति के सम्बन्ध मे अपनी खोजों द्वारा अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर साहित्य भण्डार मे श्रीवृद्धि करेंगे।

(७ नवम्बर, १९५६)

मैथिल लेखक सम्मेलन

मुझे यह जान कर बहुत हर्ष हुआ कि दरभंगा मे अखिल भारतीय मैथिली लेखकों के सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर मैं सम्मेलन के आयोजकों को बधाई देता हूं और उनके प्रयास की सफलता की कामना करता हूं। हमारे विशाल देश मे सभी भाषाओ और उपभाषाओं के लिए पर्याप्त स्थान है और उन सभी की श्रीवृद्धि भारतीय साहित्य के लिए गौरव का विषय है। मुझे आशा है कि अपनी समुन्नत परम्परा के अनुकूल मैथिल साहित्य फिर समृद्ध होगा और जन-साधारण को अपने माधुर्य का परिचय दे सकेगा।

(१५ नवम्बर, १९५६)

एक विदेशी विद्वान को श्रद्धांजलि

जिन विदेशी साहित्य प्रेमियों और पुरातत्व अनुरागियों ने भारत मे रहकर उपयोगी अनुसंधान का कार्य किया है, उनमे डा० टेसीटोरी का नाम भी, जो इटली के निवासी थे प्रमुख है। किन्तु उन्होंने कई वर्ष राजस्थान मे रहकर राजस्थानी भाषा और इतिहास के संबंध मे महत्वपूर्ण शोध-कार्य किया। आज, जबकि सभी भारतीय भाषाएं तथा उपभाषाएं विकासोन्मुख हैं, हमें कृतज्ञतापूर्वक उन्हे स्मरण करना चाहिए। सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर ने टेसीटोरी दिवस मनाने का निश्चय करके उनकी साहित्यिक व सास्कृतिक अनुसंधानों केलिए प्रेरणा भी प्राप्तकी है। इस अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ।

(१९ नवम्बर, १९५६)

महाकवि कालीदास का साहित्य

भारतीय साहित्य मे कालीदास की देन और कृतियों को देखते हुये उस महाकवि के स्मरणार्थ जो कुछ भी किया जाय थोड़ा है। वास्तव मे हमारी "साहित्य" परम्परा और काव्यसौष्ठव का परिचय समस्त "साहित्य" जगत मे जितना इस महाकवि के नाटकों द्वारा हुआ है उतना शायद किसी भी एक लेखक की कृतियों द्वारा नहीं हो सका है।

अनेकों युरोपीय विद्वानों ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' तथा कालीदास के अन्य कृतियों को मौलिक रूप में पढने के लिये संस्कृत का अध्ययन् किया। आज भी जबकि कल्पना-साहित्य बहुत उन्नत होकर अनेक नवीन धाराओं मे प्रस्फुटित हो गया है, कालीदास की रचनाओं का आकर्षण ठीक पहले जैसा ही बना है। मै कालीदास परिषद् के प्रयास का विशेष रूप से इसलिये स्वागत करता हू क्योंकि कभी कभी यह सुनने मे आता है कि इस महाकवि को जो मान्यता जर्मनी, फ्रांस और यूरोप के दूसरे देशों मे मिली है वह आधुनिक भारत मे भी उसे प्राप्त नहीं हो सकी। परिषद् के सत्प्रयास द्वारा हमारे देश मे महाकवि कालीदास के उत्तम साहित्य को यथोचित गौरव प्राप्त होगा। और जन-साधारण उस साहित्य से परिचित हो, कालीदास पर गर्व करना सीखेगा ऐसी मेरी आशा है।

(१६ नवम्बर, १६५६)

प्राकृत ग्रन्थ का प्रकाशन

प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी की स्थापना और उसके प्रयत्नों के फलस्वरूप जो प्रकाशन कार्यक्रम निर्धारित किया है, उसका शुभारंभ "अंग विज्जा" नामक पुस्तक के प्रकाशन से हो रहा है। "अंग विज्जा" अर्थात् शारीरिक लक्षणों के आधार पर आध्यात्म ज्ञान —एक रोचक और सार गर्भित विषय है। मुझे आशा है कि प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी इसी प्रकार प्राकृत भाषा में उपलब्ध बहुमूल्य साहित्य को प्रकाश मे लाने का प्रयत्न करती रहेगी। मेरी शुभ कामनायें इसके साथ हैं।

(२१ नवम्बर, १६५६)

वल्लभ विद्यानगर शोध पत्रिका

सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ की ओर से "वल्लभ विद्यानगर शोध पत्रिका" के प्रकाशन का निश्चय स्तुत्य है और मैं इसका स्वागत करता हूं। मुझे आशा है कि प्राच्यविद्या, पुरातत्व आदि जिन विषयों का परिचय इस पत्रिका द्वारा दिया जाएगा, वह सरल भाषा मे और सुपाठ्य

रूप में प्रस्तुत किया जायगा, जिससे कि जन-साधारण उन्हें समझ सकें और अपनी ज्ञान-वृद्धि कर सकें। मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं।

(२० दिसम्बर, १९५६)

ताड़-गुड़ उद्योग के लिए प्रोत्साहन आवश्यक

जन-साधारण के लिए ताड़-गुड़ की उपयोगिता की दृष्टि से और यह देखते हुए कि ताड़ी के बन्द हो जाने पर उस उद्योग में लगे व्यक्तियों को भी काम पर लगाना है, ताड़-गुड़ उद्योग का ग्रामीण जनता के लिए बहुत महत्व है। ताड़-गुड़ एक पौष्टिक खाद्य है जो सस्ता और सुलभ भी हो सकता है। इसलिए खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड के तत्वावधान में राष्ट्रीय ताड़-गुड़ दिवस के आयोजन का मैं स्वागत करता हूं। मुझे आशा है कि इस उद्योग का अधिक से अधिक प्रचार तथा प्रसार किया जाएगा, जिससे कि जनता लाभ उठा सके और पौष्टिकता के इस साधन का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके।

(२० दिसम्बर, १९५६)

१९५७

स्वास्थ्य-लाभ के लिए खेलकूद

युवराज व्यायामशाला, उज्जैन के तत्वाविधान में होने वाले अखिल भारतीय क्रीड़ा सम्मेलन के लिए मैं अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं। इस सम्मेलन की विशेषता यह है कि वे सभी खेल-कूद जिनका आयोजन किया गया है भारतीय हैं। पाश्चात्य खेलों की अपेक्षा, जो व्ययसाध्य होते हैं और जिन्हे देहात मे सभी लोग नहीं समझ पाते, हमारे हिन्दुस्तानी खेल जनता के लिए अधिक लाभदायक हो सकते हैं। इन्हे प्रोत्साहन देने से हम सर्वसाधारण मे स्वास्थ्य-लाभ और पारस्परिक सहयोग की भावना का संचार कर सकते हैं। मुझे खुशी है कि इस क्रीड़ा सम्मेलन मे महिलाये भी भाग लेंगी। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१० जनवरी, १९५७)

हिन्दी प्रचार का ठीक दृष्टिकोण

संविधान मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया जा चुका है और उसके प्रविष्ट करने की अवधि १५ साल की गयी है। इसलिय उत्तर भारत के हिन्दी भाषा-भाषियों एवं हिन्दी प्रचार संस्थाओं का यह कर्तव्य हो जाता है कि जिन जिन प्रान्तों मे हिन्दी जानने वालों की कमी है, उस कमी को प्रचार द्वारा पूरा किया जाय और उनकी इस धारणा को दूर किया जाय कि उन पर यह भाषा बल से थोपी जा रही है। जहां तक संभव हो सके अन्य प्रान्तीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी हिन्दी मे स्थान दिया जाय तो हिन्दी के प्रचार में अधिक आसानी होगी। मुझे विश्वास है कि उपाधि प्राप्त करने वाले स्नातकगण अपने संकुचित विचारों को त्याग कर अपने जीवन पथ पर सदाचार, सप्रेम एवं उच्च आदर्शों को लेकर अग्रसर होंगे और उस उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करेंगे। मेरी शुभकामनाये सदा उनके साथ रहेंगी।

(१५ जनवरी, १९५७)

देवसमाज कालेज का दीक्षान्त समारोह

देवसमाज कालेज, फिरोजपुर को उसके ११वे दीक्षान्त समारोह क अवसर पर मं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस कालेज मे करीब दो हजार छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही है। मं इस संस्था के संस्थापकों व प्रबन्धकों को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि साधारणतया देश की उन्नति व विशेषतया स्त्री-समाज की उन्नति में यहां को छात्राएं योगदान देगी और इस प्रकार जनता की अधिक से अधिक सेवा कर सकेगी।

(२३ फरवरी, १९५७)

केरल की हिन्दी पत्रिका

कोझिकोड, केरल से प्रकाशित होने वाले "युगप्रभात" पाक्षिक के कुछ अंक मंने देखे हे। दक्षिण भारत की भाषाएं समृद्ध है और उनकी पत्र-पत्रिकाएं भी उन्नत है, किन्तु केवल इसी कारण "युगप्रभात" का स्थान हिन्दी जगत मे ऊंचा नहीं माना जायगा। उत्पादन और पठन-सामग्री की दृष्टि से भी इस पत्रिका की उत्तर भारत से निकलने वाली हिन्दी पत्रिकाओं से तुलना की जा सकती है। "युगप्रभात" के प्रकाशक, मातृभूमि प्रिंटिंग कम्पनी को मं बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि यह पत्रिका राष्ट्र की सेवा मे फले फूले और समुन्नत हो।

(२६ फरवरी, १९५७)

उज्जयिनी दर्शन

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मध्यप्रदेश के विद्वानों ने उज्जैन के सम्बन्ध मे "उज्जयिनी दर्शन" नामक पुस्तक प्रकाशित करने का निश्चय किया है। हमारे प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास तथा साहित्य मे उज्जैन का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव मे एक हजार अथवा इस से भी अधिक वर्षो तक मध्यदेश के घटनाचक्र का उज्जैन से इतना गहरा सम्बन्ध रहा है कि इस नगर के इतिहास को ही उस प्रदेश का इतिहास कहा जा सकता है। उज्जैन

के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में हमारी जानकारी अभी अधूरी है। इसलिए इस विषय पर सभी प्रकार की उपलब्ध सामग्री के संकलन तथा प्रकाशन का विशेष महत्व है। मैं आशा करता हूं कि "उज्जयिनी दर्शन" एक उपयोगी तथा रोचक प्रकाशन होगा।

(१६ अप्रैल, १६५७)

आदिवासी सम्मेलन, कोरापुट

कोरापुट, उड़ीसा मे होने वाले आदिमजाति सेवक संघ के वार्षिकोत्सव की मैं सफलता की कामना करता हूं। देश का शिक्षित वर्ग और भारत सरकार इस बात को स्वीकार कर चुकी है कि पिछड़े हुए वर्गों, विशेषकर आदिम-जातियों की स्थिति मे सुधार करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इस उद्देश्य को प्राप्ति के लिए काफी कुछ किया जा रहा है, किन्तु जब तक दूसरे उन्नत वर्गों की तरह हमारे आदिवासी भाइयों की शिक्षा, आर्थिक स्थिति और रहन-सहन के स्तर में काफी सुधार नहीं हो जाता हमे अपने प्रयत्न बराबर जारी रखने चाहिये। मुझे आशा है कोरापुट में होने वाले सम्मेलन की कार्यवाही के फलस्वरूप इस कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

(१८ अप्रैल, १६५७)

बड़ोदा कन्या विद्यालय की रजत जयन्ती

आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा के रजत जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मैं इस महिला शिक्षा संस्था से सम्बन्धित सभी संचालिकाओं तथा छात्राओं का अभिनन्दन करता हूं और उन्हे हार्दिक बधाई भेजता हूं। यह संस्था साधारण शिक्षण के अतिरिक्त शिक्षा के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास पर यथोचित बल देती रही है और शिक्षा का कार्यक्रम भारती-संस्कृति तथा विचार-धारा के अनुरूप संचालित करती रही है। मेरी यह कामना है कि यह संस्था फले फूले और शिक्षा द्वारा महिलाओं की अधिक से अधिक सेवा करे। सभी बालिकाओं को मैं अपना आशीर्वाद भेजता हूं और रजत जयन्ती महोत्सव की सफलता चाहता हूं।

(२४ अप्रैल, १६५७)

विद्या भवन की नई दिल्ली शाखा

नई दिल्ली में विद्या भवन के कार्यालय की स्थापना का मैं स्वागत करता और इस अवसर पर भवन को अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। शिक्षाप्रसार और सांस्कृतिक अभ्युदय के क्षेत्र में विद्या भवन ने महत्वपूर्ण कार्य किया है मेरी यह कामना है कि यह कार्य राष्ट्रव्यापी हो और देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोग इस से लाभ उठायें। मुझे आशा है कि विद्या भवन की नई दिल्ली शाखा तथा स्कूल के द्वारा स्थानीय जनता की बहुत सेवा हो सकेगी और भवन शीघ्र ही एक लोकप्रिय संस्था बन सकेगा।

(६ मई, १९५७)

"मगध उत्सव"

मुझे खुशी है कि बिहार मगही मंडल ने मगध महोत्सव मनाने का आयोजन किया है। मगध का प्राचीन इतिहास इतना उज्जवल रहा है कि आधुनिक युग में भी उस समय की कुछ घटनाओं से हमें प्रेरणा मिल रही है। उस काल की संस्कृति और साहित्य की रक्षा तथा अनुसन्धान के द्वारा उसे प्रकाश में लाने का प्रयास प्रशंसनीय है। मैं बिहार मगही मंडल को अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और आगामी मगध महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

(९ मई, १९५७)

नन्हे मुन्नों को प्यार

बालमन्दिर जयपुर में पढ़ने वाले बच्चों को मैं उनके स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपना प्यार और आशीर्वाद भेजता हूं। बच्चों को अपनी संस्था पर गर्व करना चाहिये और ऐसे अवसरों को खूब हंसी खुशी और उत्साह से मनाना चाहिये। इस बार दूर से मैं भी उनके मन्दिर के उत्सव में शरीक हो रहा हूं। मेरी शुभ कामनायें सब बच्चों के साथ हैं।

(१७ मई, १९५७)

महाराष्ट्र में हिन्दी प्रचार

यह हर्ष का विषय है कि महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा गत २० वर्षों से हिन्दी के प्रचार मे संलग्न रही है और इस दिशा में सभा को काफी सफलता मिली है। मुझे यह जान कर खुशी हुई कि सभा ने पूना और नासिक मे एक हाई स्कूल खोलने का निश्चय किया है जिसमे हिन्दी के माध्यम द्वारा शिक्षा की व्यवस्था होगी। मैं महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा को उसकी तत्परता पर बधाई देता हूं और यह आशा करता हूं कि महाराष्ट्र की जनता सभा के इस प्रयास का स्वागत करेगी और उसके काम मे स्वेच्छा से सहयोग देगी।

(२० मई, १९५७)

आरोग्य केन्द्र भवन

रायपुर जिले के बैलसौडा ग्राम मे आरोग्य केन्द्र भवन के उद्घाटन के अवसर पर मैं कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट और उन सब कार्यकर्ताओं को, जिनके प्रयास से यह केन्द्र पिछले सात साल से सुचारू रूप से चल रहा है, बधाई देता हूं। हमारे देश की अधिकांश जनता देहातों मे रहती है। इसलिए ग्रामों मे इस प्रकार के केन्द्रों की स्थापना एक शुभ लक्षण है। बैलसौंडा आरोग्य केन्द्र के लिए मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूं कि मध्य प्रदेश के दूसरे जिले के लोगों को इस केन्द्र से प्रेरणा मिलेगी।

(२५ मई, १९५७)

हिन्दुस्तान समाचार समिति

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि हिन्दुस्तान समाचार समिति एक सहकारी संस्था के रूप मे आज विधिवत परिवर्तित हो रही है। यह रूपान्तर एक बड़े महत्व का प्रयोग है। हिन्दी की एक मात्र समाचार समिति होने के नाते यों भी हिन्दुस्तान समाचार की जिम्मेवारियां काफी बड़ी थीं। इस नए रूपान्तर से जिम्मेवारियां और बढ़ी है। मुझे आशा है कि समिति के कार्य-कर्ता जो अब इस के मालिक और व्यवस्थापक भी होंगे समिति के ऊंचे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अथक प्रयत्न करेंगे। मैं समिति की सफलता की कामना करता हूं।

(२ जून, १९५७)

बच्चों का संग्रहालय

श्री प्रताप राय मेहता से बच्चों के संग्रहालय के बारे में जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। बच्चों के बौद्धिक विकास और शिक्षण में ऐसे संग्रहालयों की बहुत उपयोगिता हो सकती है। राष्ट्रनिर्माण सम्बन्धी जो महान कार्य इस समय हमारे सामने है, उन में शिक्षा प्रसार के कार्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। मुझे आशा है कि इस कार्य मे बच्चों के संग्रहालय सहायक सिद्ध होंगे। अप्रैली और सांगानेर मे बच्चों के संग्रहालय खोलने का श्री मेहता का प्रयास सराहनीय है और मैं उनकी सफलता की कामना करता हूं।

(३ जून, १९५७)

भील सेवा मंडल को आशीर्वाद

पूज्य बापू की प्रेरणा से आदिवासियों का जो कल्याण-कार्य बहुत वर्ष पहले दोहाद (गुजरात) मे प्रारंभ किया गया था और बरसों तक जिसको स्व० ठक्कर बापा की स्फूर्ति मिलती रही उसे देखने का सुअवसर मुझे १९५२ मे मिला था और तब उसकी प्रगति देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस संस्था ने इन पांच वर्षो मे और भी तरक्की की है।

मैं तो सदा यह मानता आया हूं और अब भी मेरा यह मानना है कि अच्छे कार्य के लिये पैसा तो कहीं न कहीं से मिल जाता है पर अच्छे सेवकों का मिलना ही कठिन है इसलिये सच्ची लगन से ऐसे रचनात्मक एवं कल्याणकारी कार्य मे जो लगे हुए हैं उनके लिये सदैव मेरी शुभकामनाएं व आशीर्वाद हैं।

मैं भील सेवा मंडल के सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि मंडल का कार्य दिन-प्रति-दिन फूले फले।

(२१ जून, १९५७)

विश्वशान्ति के लिए गायत्री जाप

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक की ओर से विश्व शान्ति के लिए दिनांक ११ जुलाई, १९५७ से ४ अरब ३२ करोड़ गायत्री जाप का अनुष्ठान आरम्भ किया जा रहा है।

हमारा देश सदैव ही शान्ति प्रिय रहा है और इसके लिए वह सदैव ही प्रयत्न करता रहा है और आज भी प्रयत्नशील है।

प्रार्थना में बड़ा बल है और यदि वह सच्चे हृदय से की जाय तो ऐसा कौनसा कार्य है जो सिद्ध न हो। राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी भी प्रार्थना के प्रभाव को मानकर सदैव प्रार्थना पर बहुत बल दिया करते थे और इसकी शक्ति मे उनका बहुत विश्वास था।

आज जबकि विश्व युद्ध की विभीषिका से आशंकित एवं आक्रान्त है, हमे ऐसे अस्त्र की आवश्यकता है जो मानवमात्र को विध्वंस से बचा सके और वह अस्त्र अहिंसा ही हो सकता है। विश्व मे शान्ति हिंसा से नहीं अहिंसा से स्थापित हो सकती है और हमारे धर्मो मे वर्णित प्रार्थना के द्वारा सहस्त्रों देशवाशियों का आत्मबल एक विशेष प्रभाव पैदा कर सकता है। जैसे संगठन मे अद्‌भुत बल होता है, संगठित रूप से हुए ऐसे यज्ञ-अनुष्ठान और प्रार्थना मे भी एक अद्‌भुत शक्ति होती है।

मुझे आशा है और साथ ही ईश्वर से प्रार्थना है कि विश्वशान्ति के लिये आयोजित यह अनुष्ठान सफल बने तथा मानवमात्र का कल्याण कर सके।

(८ जुलाई, १९५७)

पेरियाकुलम् हिन्दी प्रचार सभा

हिन्दी प्रचार सभा, पेरियाकुलम् को उसकी रजत जयन्ती के अवसर पर मै बधाई देता हूँ और यह कामना करता हूँ कि सभा को अपने प्रचार कार्य मे अधिक से अधिक सफलता मिलेगी। अभी तक पेरियाकुलम् हिन्दी प्रचार सभा ने जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। मै सभा से सम्बन्धित सभी कार्यकर्ताओं, छात्रों तथा अध्यापकाओं का अभिनन्दन करता हूं और रजत जयन्ती के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ।

(२३ अगस्त, १९५७)

"ग्रामोदय" को शुभ कामनाएं

"ग्रामोदय" का पहला अंक देख कर मुझे हर्ष हुआ है। जिस गम्भीर तथा रचनात्मक विषय को लेकर इस पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ है, सोभाग्य से वैसा ही तत्वावधान भी इस कार्य को मिला है। भूदान और

ग्रामदान आन्दोलन की संकल्पना के पीछे जो उदात्त विचारधारा है उसके अधिकाधिक प्रचार की आवश्यकता है। आचार्य विनोबा के क्रान्तिकारी विचार हमारे देश ही नहीं बल्कि समस्त विश्व समाज के हित के लिए हैं। इन विचारों को समझना और हृदयंगम कर लेना भूमिहीन लोगों के लिए भूमि जुटाने से कम आवश्यक नहीं। मुझे आशा है कि "ग्रामोदय" इस दिशा मे बहुत कुछ कर सकेगा। इस पत्रिका से सम्बन्धित सभी सज्जनों के प्रति में अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और "ग्रामोदय" की सफलता की कामना करता हूं।

(११ सितम्बर, १९५७)

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के आगामी वार्षिक महाधिवेशन के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाये भेजता हूं। परिषद् ने सुन्दर साहित्यिक प्रकाशनों की व्यवस्था द्वारा हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी का साहित्य भण्डार ऐसे सामूहिक प्रयत्नों द्वारा ही समुन्नत हो सकता है। मुझे आशा है कि बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् इस कार्य मे और हिन्दी के व्यापक प्रचार मे बराबर दिलचस्पी लेती रहेगी। मैं आगामी महाधिवेशन की सफलता की कामना करता हूं।

(११ सितम्बर, १९५७)

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों ने एक सम्मेलन का आयोजन किया है। जिन लोगों ने तीस-पंतीस वर्षों से देश के हित मे त्याग किया है और स्वेच्छा से यातनाये सही है, ऐसे आयोजन से उनका बल और बढ़ेगा, और मैं आशा करता हूं कि जन-साधारण इन सेनानियों के बलिदान तथा देशभक्ति की भावना से प्रेरणा ग्रहण करेंगे। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१४ सितम्बर, १९५७)

भूदान पदयात्रा आन्दोलन

भूदान पदयात्रा आन्दोलन का प्रारम्भ गत वर्ष कन्या कुमारी से हुआ था और सौभाग्य से उस समारोह मे मैं भी शामिल हो सका था। तब से पदयात्री भूदान आन्दोलन का प्रचार करते हुए बराबर यात्रा करते रहे हे और विभिन्न प्रदेशों का दौरा करने के बाद आगामी दो अक्तूबर को सेवाग्राम आश्रम मे लौट रहे है। मैं पदयात्री दल के सभी बहनों और भाइयों का अभिनन्दन करता हूं और उन्हे हार्दिक बधाई देता हूं। मेरी यह कामना है कि भूदान कार्यक्रम सफल हो और हमारे जनगण के हृदय मे अहिसा तथा सच्चे त्याग की भावना का संचार हो।

(१४ सितम्बर, १९५७)

नागपुर में गांधी पुस्तकालय

यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अभ्यंकर भवन, नागपुर मे पूज्य बापू के जन्मदिन की पुण्य तिथि २ अक्तूबर को एक पुस्ताकालय की स्थापना की जा रही है जिसमे विशेषकर गान्धी साहित्य एव रचनात्मक विचार सम्बन्धी साहित्य रहेगा। बापू जबतक जीवित रहे, सदैव देशवासियों के उत्थान के लिए कार्य करते रहे और हममे जो कमियां थीं उनकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते रहे, केवल इतना ही नहीं उन बुराइयों और कमियों को दूर करने के लिए उन्होंने हमे मार्ग भी दिखाया। जीवन एवं समाज का कोई ऐसा पहलू नहीं जिसके बारेमे उन्हों ने बारोकी से न लिखा हो या उसका हल न बताया हो इसलिए उनके हमारे बीच न रहने पर भी हमारा आज यह कर्तव्य हो जाता है कि जो कार्य वह अधूरे छोड़ गये है उन्हे पूरा करे। उनका जो साहित्य है उसे पढ़कर उसपर पूरा अमल करे और उनके विचार जन-जन तक पहुचाये। इस तरह के पुस्तकालयों की तो आज प्रत्येक गांव और शहर में आवश्यकता है और अभ्यंकर भवन मे इस तरह के पुस्तकालय को खोलने का जो कदम उठाया जा रहा है वह सुन्दर है। मैं आशा करता हूं कि जनता एवं कार्यकर्तागण इससे पूरा पूरा लाभ ही नहीं उठायेगे बल्कि बापू के बताए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सार्थक भी बनाएंगे। मैं पुस्तकालय की स्थापना के अवसर पर अपनी शुभकामनाये भेजता हूं।

(२० सितम्बर, १९५७)

मद्रास में ग्रामोद्योग भवन

खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा ग्रामोद्योग भवन खोलने का परीक्षण सफल कहा जा सकता है, क्योंकि अभी तक जितने भी भवन खुले हैं वे काफी अच्छे चल रहे हैं। मुझे खुशी है कि मद्रास में भी ग्रामोद्योग भवन खोला जा रहा है। मद्रास में खादी और ग्रामोद्योग उत्पादनों की लोकप्रियता को देखते हुए आशा होती है कि वहां का ग्रामोद्योग भवन और भी अधिक सफल रहेगा। इस अवसर पर खादी तथा ग्रामोद्योग कमिशन के प्रति मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

(१२ अक्तूबर, १९५७)

अणुव्रत सम्मेलन

सुजानगढ़ में होने वाले अणुव्रत सम्मेलन के लिए मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। जीवन में संयम, सत्य और सदाचरण का इतना अधिक महत्व है कि इनकी चर्चा भी मनुष्य के लिए मंगलकारी है। अणुव्रत संघ मानव समाज का इस ओर ध्यान आकृष्ट करके और संयमित जीवन को क्रियात्मक प्रोत्साहन दे करके एक भारी कमी की पूर्ति कर रहा है, मैं इस नैतिक आन्दोलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१२ अक्तूबर, १९५७)

सिंधिया कन्या विद्यालय

सिंधिया कन्या विद्यालय के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि यह संस्था दिनोंदिन उन्नति करती हुई चिरकाल तक हमारे महिला समाज की सेवा करती रहेगी। इस अवसर पर विद्यालय में पढ़नेवाली सभी बालिकाओं को मैं अपना आशीर्वाद भेजता हूं।

(१२ अक्तूबर, १९५७)

साहित्यकारों से

मुझे यह जान कर खुशी हुई कि हिन्दी लेखकों और साहित्य साधकों ने इलाहाबाद में एक समारोह का आयोजन किया है, जिस मे साहित्य सम्बन्धी और लेखकों की वृत्तिगत समस्याओं पर विचार किया जाएगा। इस प्रकार का विचार-विमर्श सदा मंगलकारी होता है क्योंकि ऐसे अवसरों पर सभी कठिनाइयों और सामूहिक समस्याओं पर विचार कर कोई व्यावहारिक कार्यक्रम निर्धारित करने में आसानी रहती है। मुझे आशा है यह लेखक सम्मेलन सफल होगा और इससे लेखक वर्ग के अतिरिक्त पाठक भी लाभ उठायेंगे। सम्मेलन के संयोजकों के प्रति मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं।

(१४ अक्तूबर, १९५७)

श्री क० मा० मुंशी को श्रद्धांजलि

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी उन उद्भट विद्वानों और कर्मठ जननायकों मे से हैं जिनका कार्यक्षेत्र सदा ही व्यापक रहा है। सफल और उच्च कोटि के वकील होते हुए उन्होंने जिस प्रकार अनेकों प्रामाणिक ग्रंथ रचे और सार्वजनिक, समाज-सुधार और शिक्षा-सम्बन्धी क्षेत्रों मे भाग लिया और आज भी ले रहे हैं, इस से लोगों को आश्चर्य होना स्वाभाविक है। श्री मुंशी आस्थावान और दृढ़संकल्प पुरुष हैं। जिस कामको भी उन्होंने उठाया उसे अन्त तक निभाने का पूरा प्रयास किया है। उदाहरणार्थ भारती विद्या भवन के आयोजन को ही लीजिए। चन्द वर्षों में उसके द्वारा संस्कृत के अध्ययन अध्यापन, सुन्दर ग्रंथों के निर्माण और प्रकाशन, कलाओं के उत्थान और विकास, ऐतिहासिक खोज, इत्यादि विषयों को जो प्रोत्साहन मिला है वह स्मरणीय रहेगा और उसका सारा श्रेय श्री मुंशी के उत्साह और प्रयास को है।

इसलिए मै समझता हूं यह उचित ही है कि आगरा विश्वविद्यालय की हिन्दी विद्यापीठ श्री मुंशी को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करे। मै इस सुझाव का अनुमोदन करता हूं और आशा करता हूं कि यह प्रयास सफल होगा और श्री मुंशी के जीवन से हमारे नवयुवकों को प्रेरणा मिलेगी।

(१८ अक्तूबर, १९५७)

उर्दू कवि का अभिनन्दन

मुझे यह मालूम करके खुशी हुई कि पं० लभ्भू राम जोश मलसियानी की साठ साला अदबी खिदमात के सिलसिले मे उनके अकीदतमन्दान एक अभिनन्दन ग्रंथ उनकी खिदमत मे पेश कर रहे हैं। जोश साहब ने एक तवील मुद्दत उर्दू अदब की खिदमत मे गुजारी है और उनकी यह रियाजत मुल्क के नौजवानों और अदीबों के लिए मशअले हिदायत है। इसलिए मैं जोश अभिनन्दन ग्रंथ के लिए ये चन्द अल्फाज बखुशी भेजता हूं और दुआगो हूं कि हम बहुत सालों तक जोश साहब के दामने इल्मो फ़ज़ल से फ़ैज पाते रहे।

(१९ अक्तूबर, १९५७)

"सेवाग्राम" द्वारा ग्रामीणों की सेवा

मुझे साप्ताहिक "सेवाग्राम" के कुछ अंक देखकर खुशी हुई। हमारे देश मे प्रकाशित होने वाले बहुत कम पत्र ऐसे है जो विशेष रूप से देहातियों के लिए हों और ग्रामीण लोगों को ऐसी सामग्री दे जो मनोरंजन करने के साथ साथ उनके लिए उपयोगी भी हों। "सेवाग्राम" मे खेती, देहात-सुधार भूदान-सम्बन्धी बातों की सरल भाषा मे चर्चा की जाती है। मुझे आशा है इस पत्र से हमारे देहाती भाई लाभ उठायेंगे और यह साप्ताहिक, यथासंभव उन लोगों की अधिक से अधिक सेवा करने की चेष्टा करेगा। "सेवाग्राम" के कर्मचारी मंडल के लिए मै अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं।

(२४ अक्तबर, १९५७)

आसाम से हिन्दी साप्ताहिक

आसाम के एकमात्र साप्ताहिक "अकेला" के प्रति मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों मे जो हिन्दी की पत्र-पत्रिकाये है उनके ऊपर यह दायित्व आता है कि वे केवल व्यापारिक दृष्टिकोण से ही प्रेरित न हों और हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं के बीच अच्छे सम्बन्ध पैदा करे। पाठ्य सामग्री, सम्पादन, मुद्रण आदि की दृष्टि से भी इन पत्रों को स्थानीय भाषाओं के पत्रों के मान से पीछे नहीं रहना चाहिए, और

यह आपसी होड़ सद्भावना और उदारता के वातावरण में होना चाहिए। हिन्दी प्रचार का और इस प्रचार के लिए अपेक्षित वातावरण पैदा करने का यही उत्तम उपाय है।

मैं "अकेला" की सफलता और प्रगती की कामना करता हूं।

(२४ अक्तूबर, १९५७)

ईश्वरशरण आश्रम का स्तुत्य कार्य

महात्मा जी के लिये अस्पृश्यता-निवारण एक सीमित और आचरण का ही प्रश्न नहीं था, वे इस भावना का ही आमूल नाश चाहते थे। १९३३ मे उनके अनशन के फल-स्वरूप हरिजन सेवा और अस्पृश्यता-निवारण के लिये एक अभूतपूर्व उत्साह देश मे पैदा हुआ और अछूतपन दूर करने के क्रियात्मक प्रयास होने लगे। उन्हीं दिनों मुंशी ईश्वरशरण ने प्रयाग के हरिजन आश्रम की स्थापना की। तब से यह संस्थान, जिसे अब ईश्वरशरण आश्रम कहते है, सुधार के इस क्षेत्र मे सतत प्रयत्नशील रहा है। अन्य कार्यों के अतिरिक्त गांधी जी के विचारों का प्रचार आश्रम अपने प्रकाशनों द्वारा कर रहा है।

प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ श्री हीरालाल शर्मा लिखित "बापू की छाया में" आश्रम का नवीनतम प्रकाशन है। पुस्तक की एक बडी विशेषता लेखक को लिखे गये गांधी जी के बहुतेरे पत्रों के फोटो ब्लौक्स है। इन पत्रों मे प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी बाते तो है ही, मानव जीवन की उलझनों के समाधान के संकेत भी है। सत्यमय और अहिंसामय जीवन प्रकृति के निकट रहकर ही सुलभ है ऐसा गांधी जी मानते थे और इसीलिये प्राकितक चिकित्सा मे उनकी अनन्य निष्ठा थी। अस्पतालों और औषधालयों को वे आधुनिक जीवन के विकारों का प्रतीक मानते थे और इनकी बहुलता उनके लिये न उठती सभ्यता की निशानी थी न जीवन के पूर्णतर होने की। उनकी दृष्टि सदैव मूल पर रही। विकार ही क्यों हों कि अस्पतालों और औषधालयों की अनिवार्य आवश्यकता हो? क्यों नहीं पथ-भ्रष्ट मानव जिन्दगी नयी तरह जीना सीखे?

आज का मानव यदि गांधी जी के विचारों को उनकी समग्रता में ग्रहण कर ले तो संसार की अब तक की सब से बड़ी क्रान्ति संभव हो। लेकिन अभी वह दिन नहीं आया है, फिर भी जिन विचारों में प्रेरणा का अजस्र स्रोत है, उन से, जितना अधिक परिचय हो, उन्हें जितना भी ग्रहण किया जाय, कल्याणकर ही होगा। मुझे प्रसन्नता है कि इस पुस्तक का एक सस्ता संस्करण निकाल कर आश्रम आम जनता के लिए भी इसे सुलभ बना रहा है।

(४ जनवरी, १९५७)

प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों को सन्देश

उत्तर प्रदेशीय प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों को मैं अपनी शुभ कामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि उनका सम्मेलन सफल होगा। देश में साक्षरता प्रसार का हमारा निश्चय तभी कार्यरूप ले सकता है जब प्राइमरी स्कूलों के शिक्षक इस कार्य को सेवा भाव से करने में रत हो जायें। मुझे विश्वास है राष्ट्रनिर्माण के इस कार्य में वे सहर्ष योगदान देंगे।

(९ नवम्बर, १९५७)

व्यंगचित्रकार का अभिनन्दन

श्री कदम के सामाजिक तथा राजनैतिक व्यंगचित्रों और देश विदेश के नेताओं के रंगीन व्यंगचित्रों की प्रदर्शनी नई दिल्ली में हो रही है, यह जान कर मुझे खुशी हुई। व्यंगचित्रों को हम अभिव्यक्ति की ऐसी शैली कह सकते हैं जिसका अभिप्राय मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा देना है। भारतीय पत्रकारिता के विकास के साथ साथ व्यंग चित्रकला की भी दिनोंदिन उन्नति हो रही है और सौभाग्य से इस दिशा में साधारण पाठकों की भी काफी दिलचस्पी है।

यह पहला अवसर है कि हिन्दी पत्रों में प्रकाशित होने वाले व्यंगचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। मैं इस प्रदर्शनी की सफलता की कामना करता हूं।

(१३ नवम्बर, १९५७)

दिल्ली में मद्य निषेध सप्ताह

दिल्ली मे मद्य-निषेध या शराबबन्दी सप्ताह मनाने के निश्चय का मैं स्वागत करता हूं। जब से शासन-सत्ता हमारे हाथों मे आई है हम मादक द्रव्यों के सेवन, विशेष रूप से मदिरापान की रोकथाम का प्रयत्न कर रहे है। बहुत से राज्यों मे इस प्रवृति को प्रोत्साहन देने के लिये कानून का सहारा लिया गया है। और मैं समझता हूं इस काम मे कुछ सफलता भी मिली है। किन्तु हमे यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि शराबबन्दी की पूरी रोकथाम के लिये जनता मे प्रचार सब से आवश्यक है। जब तक इन मादक पदार्थों के विरुद्ध मनुष्य का अन्तःकरण विद्रोह नहीं करेगा तब तक हमारा सुधार का कार्यक्रम अधूरा रहेगा। मुझे आशा है कि दिल्ली राज्य शराबबन्दी बोर्ड इस बात का ध्यान रखेगा और प्रचार द्वारा इस आन्दोलन मे जन-साधारण का सहयोग प्राप्त कर सकेगा। इस शुभ कार्य मे मैं दिल्ली राज्य मद्यनिषेध बोर्ड की सफलता चाहता हूं।

(१५ नवम्बर, १९५७)

आन्ध्र हिन्दी विद्यार्थी सम्मेलन

मैं आन्ध्र प्रदेश हिन्दी विद्यार्थी सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं और इसमे भाग लेने वाले विद्यार्थियों तथा इसके संयोजकों के प्रति अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं। इस प्रकार के सम्मेलन का आयोजन हिन्दी को अहिन्दी भाषी क्षेत्रों मे लोकप्रिय बनाने का एक उत्तम साधन है। मैं आशा करता हूं कि अन्य राज्यों मे भी दूसरी प्रादेशिक भाषाओं मे लोगों की दिलचस्पी पैदा करने के लिये ऐसे सम्मेलनों के आयोजन पर विचार किया जायेगा।

(१५ नवम्बर, १९५७)

जमशेदपुर में ग्रामोद्योग केन्द्र

खादी और ग्रामोद्योगों को उन्नत करने मे और उनका प्रचार करने में बिहार राज्य ने आरम्भ से ही प्रशंसनीय कार्य किया है। आज जबकि खादी और ग्रामोद्योग देश की आर्थिक व्यवस्था मे एक निश्चित स्थान प्राप्त कर चुके है

श्रौर इस काम को आगे बढ़ाने के लिये एक विशेष बोर्ड की स्थापना कर दी गई है, यह उचित ही है कि बिहार के प्रमुख नगरों में खादी तथा ग्रामोद्योग केन्द्र खोले जायें, वहां से जनता इन उत्पादनों को आसानी से प्राप्त कर सके। यह जान कर मुझे खुशी हुई कि जमशेदपुर मे इसी प्रकार का केन्द्र खोला जा रहा है। मै इस केन्द्र की सफलता की कामना करता हूं श्रौर बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग मंडल के प्रति अपनी शुभ-कामना भेजता हूं।

(२७ नवम्बर, १९५७)

ठक्कर बापा को श्रद्धांजलि

"मध्य प्रदेश वनवासी सेवा मंडल" द्वारा ठक्कर बापा जयन्ती मनायी जाने के अवसर पर मै मंडल तथा प्रदेश की सभी आदिम जातियों के प्रति अपनी शुभ-कामना भेजता हूं। स्वर्गीय ठक्कर बापा ने आदिम जातियों के कल्याण के लिये सतत प्रयास किया श्रौर उसमें उन्हे काफी सफलता भी मिली। इस अवसर पर उनकी पुण्य स्मृति में मंडल के सभी कार्यकर्ताश्रों को प्रेरणा मिले श्रौर यह कार्य दिनों दिन आगे बढ़े, यही मेरी कामना है।

(२७ नवम्बर, १९५७)

पं० मालवीय की स्मृति में

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "सनातन धर्म मासिक" स्वर्गीय पं० मदन मोहन मालवीय जी की स्मृति मे मालवीय विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। महामना मालवीय जी जैसे महान जननायक, अनन्य देश भक्त, श्रौर ईश्वर प्रेमी का जीवन चरित्र जन-साधारण के लिये सत्प्रेरणा श्रौर आत्मशुद्धि का स्रोत है। मुझे आशा है कि प्रस्तावित विशेषांक का स्वागत होगा श्रौर पाठकगण उससे लाभान्वित होंगे।

(४ दिसम्बर, १९५७)

अरविन्द की दिव्य वाणी

श्री अरविन्द के उच्च विचार श्रौर उनकी दिव्य वाणी आज भारतवासियों का ही नहीं, समस्त मानव जाति का पथ प्रदर्शन करने की क्षमता रखती है।

महायोगी की दिल्ली स्थित समाधि पर कुछ अवशेषों की स्थापना के शुभ अवसर पर मै समाधि की कार्य कारिणी समिति के प्रति अपनी शुभकामनाये और श्री अरविन्द के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मुझे आशा है कि दक्षिण मे पांडेचरी के समान उत्तर मे दिल्ली स्थित श्री अरविन्द आश्रम आध्यात्मिक प्रेरणा का केन्द्र बन सकेगा।

(४ दिसम्बर, १९५७)

कुष्ट-निवारण सम्मेलन

गोरखपुर मे होने वाले अखिल भारतीय कुष्ट-निवारण सम्मेलन के लिए मै अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं। मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह काम मानव कल्याण का है और कुष्ट रोग मे पीड़ित लोगों की सेवा करना श्रेयपूर्ण कार्य है। मेरी यह आशा तथा प्रार्थना है कि सम्मेलन की कार्यवाही इस भयंकर रोग के उन्मूलन के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों को बल दे। मै सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(५ दिसम्बर, १९५७)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सन्देश

इस शुभ अवसर पर जबकि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अध्यापकगण तथा छात्र गुरुकुल के संस्थापक स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान पर्व मना रहे है, मै भी स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी के अदम्य उत्साह और दृढ़ संकल्प का ही यह परिणाम है कि इस गुरुकुल की स्थापना हुई और इसके फलस्वरूप प्राचीन विचारधारा तथा शिक्षा प्रणाली को इतना बल मिला। स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र मे जीवन पर्यन्त अपने सामने एक महान आदर्श रखा और यदि उस आदर्श को कार्यरूप देने मे वह सफल हुए, इसका प्रमुख कारण, उनकी निजी प्रतिभा के अतिरिक्त, यह था कि वे असाधारण रूप से व्यवहारकुशल थे। मुझे आशा है कि इस समारोह में भाग लेने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सत्प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सफलता चाहता हूं और इस संस्था से सम्बन्धित सभी लोगों को अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं।

(१८ दिसम्बर, १९५७)

पं० मालवीय जन्म समारोह

महामना पंडित मालवीय की ९७वी वर्षगांठ सम्बन्धित समारोह के अवसर पर मैं स्वर्गीय नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। महामना मालवीय जी जैसे महान जननायक, अनन्य देशभक्त और ईश्वर-प्रेमी का जीवन चरित्र जन-साधारण के लिए सत्प्रेरणा और आत्मशुद्धि का स्रोत है।

(१९ दिसम्बर, १९५७)

नाट्य समिति

हिन्दी नाट्य समिति कलकत्ता के वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं समिति से सम्बन्धित सभी लोगों को अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। यह समिति गत ४० वर्षों से साहित्यकों को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त जन-साधरण की कलापूर्ण भावनाओं को जागृत करती रही है। मैं हिन्दी नाट्य समिति की सफलता की कामना करता हूं।

(२० दिसम्बर, १९५७)

गुजरात राष्ट्रभाषा समिति

मुझे खुशी है कि गुजरात राष्ट्र भाषा समिति ने निजी भवन बनाने की व्यवस्था कर ली है और २९ दिसम्बर को समिति के हिन्दी भवन का शिलान्यास होने जा रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं गुजरात राष्ट्र भाषा समिति को बधाई देता हूं और हिन्दी प्रचार क्षेत्र में उनके द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों की सफलता की कामना करता हूं।

(२४ दिसम्बर, १९५७)

भारतीय हिन्दी परिषद्

भारतीय हिन्दी परिषद के पन्द्रहवें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। परिषद् के कार्यकर्ताओं को मेरा परामर्श हैं कि वे अपना पूरा ध्यान हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि करने में लगायें। अनेक विषयों के प्रामाणिक ग्रन्थ हिन्दी में कम हैं। उस कमी को मौलिक पुस्तकें लिख कर अथवा दूसरी भाषाओं से अनुवाद करके पूरा करने की चेष्टा होनी चाहिये। हिन्दी का स्तर ऊंचा करने और स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में इसे शिक्षा का माध्यम बनाने का सर्वोत्तम तथा व्यवहारिक उपाय यही है। मुझे आशा है कि भारतीय हिन्दी परिषद् इस सुझाव पर गम्भीरता से विचार करेगी। मैं परिषद् की सफलता की कामना करता हूं।

(२४ दिसम्बर, १९५७)

१९५८

वनस्थली विद्यापीठ रजत जयन्ती

वनस्थली विद्यापीठ के रजत जयन्ती महोत्सव पर मैं विद्यापीठ से सम्बन्धित सभी कर्मचारियों, अध्यापिकाओं और विद्यार्थियों के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

वनस्थली विद्यापीठ ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान और आसपास के राज्यों में प्रमुख कार्य किया है। विद्यापीठ का पाठ्यक्रम उपयोगी और व्यावहारिक है, और वहां का वातावरण शिक्षा तथा चिन्तन के अनुकूल है। मैं आशा करता हूं कि वनस्थली विद्यापीठ दिनोंदिन उन्नति करेगा और शिक्षा के शुभ कार्य में आगामी रजत जयन्ती महोत्सव से उसे और भी प्रेरणा मिलेगी।

(१० फरवरी, १९५८)

सिंधिया स्कूल की हीरक जयन्ती

सिंधिया स्कूल, ग्वालियर की हीरक जयन्ती के अवसर पर मैं स्कूल के व्यवस्थापकों, अध्यापकों और छात्रों के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। मुझे इस स्कूल को देखने का सुअवसर मिला है और मैं इस संस्था की शिक्षा प्रणाली और अनुशासन से प्रभावित हुआ हूं। मुझे आशा है कि आगामी वर्षों में सिंधिया स्कूल अपनी परमपरागत ख्याति को बनाए ही नहीं रखेगा बल्कि उसे और ऊपर उठाने की भी चेष्टा करेगा। इस अवसर पर मैं स्कूल से सम्बन्धित सब लोगों को बधाई देता हूं और यह आशा करता हूं कि हीरक जयन्ती समारोह से उन्हें इसके संचालन में और अधिक प्रेरणा मिलेगी।

(१४ फरवरी, १९५८)

ग्राम राज्य पंचायत के उद्घाटन के अवसर पर

ग्राम राज्य पंचायत के उद्घाटन के लिये खादीग्राम जाने का मेरा विचार था, किन्तु किन्हीं कारणों से अभी वहां जाना नहीं हो सकेगा। इस आयोजन के जो उद्देश्य हैं और आयोजकों ने जो कार्यक्रम निर्धारित किया है उससे मैं

पूर्ण रूप से सहमत हूं । मेरी शुभ-कामनाये ही नहीं वल्कि समर्थन भी उनके साथ है । हम इस बात को नहीं भूल सकते कि इस देश मे राष्ट्रीय विकास की कोई भी योजना तब तक सफल नहीं कही जा सकती जब तक हमारे देहातों मे रहने वाले भाइयों को उससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभ न पहुचता हो । आजकल जिन बहुमुखी योजनाओं पर कार्य हो रहा है उनकी सफलता के लिये यह भी आवश्यक है कि हमारा ग्रामीण समाज जागरूक हो और उससे चेतना का संचार हो ।

मुझे आशा है कि इस उद्देश्य की पूर्ति मे ग्राम राज्य पंचायत का आयोजन सहायक होगा । मैं इस उत्सव की सफलता की कामना करता हूं ।

(१७ फरवरी, १९५८)

हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं अपनी शुभ-कामनाये भेजता हू और यह आशा करता हू कि यथापूर्व यह संस्था अहिन्दी भाषी जनता मे राष्ट्रभाषा का अधिक से अधिक प्रसार करने मे सफल होगी ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी प्रचार का आधार स्वेच्छा और राष्ट्रीय दृष्टिकोण होना चाहिये, जिसका हमारी प्रान्तीय भाषाओं से किसी प्रकार का विरोध नही । मैं इस समारोह की सफलता की कामना करता हूं ।

(१७ फरवरी, १९५८)

मौलाना आज़ाद के निधन पर

मौलाना आज़ाद की अफसोसनाक मौत से आज भारत से एक महान नेता चल बसा है । एक बहुत बड़े विद्वान, वक्ता, अनुभवी, राजनीतिज्ञ और पक्के राष्ट्रवादी होने के अलावा मौलाना साहब स्वाधीनता संग्राम के अथक सेनानी थे और सब से बढ़ कर वे ऐसे महान नेता थे जिनका अदम्य साहस और सूझ-बूझ सदा अनेकों पेचीदा समस्याओं को सुलझाने मे सहायक होती थी । सारा देश उनके निधन पर, शोकग्रस्त है । जिन लोगों को मौलाना साहब के साथ या उनकी देखरेख मे काम करने का सौभाग्य हुआ

है उनके लिए और आम तौर से सारे देश के लिए यह ऐसी हानि है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। हम लोगों के लिए जो उनके बहुत नजदीक रहे हैं आज अपने अन्दर के भावों को शब्दों मे प्रकट करना बहुत मुश्किल है। अन्त तक वे देश के ही काम मे लगे रहे, जिस से उन्हे इतना प्रेम था और जिसके लिए उन्होंने इतने कष्ट झेले। मौलाना आज़ाद की मृत्यु गौरवपूर्ण है और वे करोड़ों देशवासियो को शोक से बिलखने छोड़ गए हैं।

(२२ फरवरी, १९५८)

एक राजस्थानी कवयित्री

मैंने रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत द्वारा रचित राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें देखीं और उनके अवलोकन से मुझे खुशी हुई। राजस्थान के वीरतापूर्ण इतिहास में किसी भी लेखक को अनुप्राणित करने की क्षमता है। रानी लक्ष्मी बाई यहीं के वातावरण मे पली हैं और राजस्थान के आदर्शों तथा मर्यादा ने उनकी कल्पना और रचना शैली को प्रभावित किया है। इसलिये, उनकी गद्य तथा पद्य की रचनाओं मे ओज है। मुझे आशा है कि ये पुस्तकें लोकप्रिय होंगी। लेखिका के प्रति मैं अपनी शुभकामनाएं प्रगट करता हूं।

(३ मार्च, १९५८)

म० प्र० चेम्बर आफ कामर्स

मध्यप्रदेश चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाये भेजता हूं। इस समय देश के बहुमुखी विकास के लिये जो प्रयत्न किये जा रहे हैं उनकी पूर्ण सफलता के लिये व्यापारियों और उद्योगपतियों के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री ने इस दिशा मे अभी तक जो कुछ किया है वह प्रशसनीय है। मुझे आशा है कि यह संस्था यथापूर्व राष्ट्र के कल्याण मे ही निजी हित समझेगी। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मध्यप्रदेश चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री को मैं अपनी बधाई देता हूं और उनकी सफलता की कामना करता हूं।

(८ मार्च, १९५८)

दलित सेवक संघ का प्रशिक्षण केन्द्र

भारत दलित सेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने सांची में प्रशिक्षण शिविर की व्यवस्था की है, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। किसी भी अन्य कार्य की तरह सार्वजनिक सेवा में भी नियमित प्रशिक्षण और परिश्रमपूर्ण अभ्यास का ऊंचा स्थान है। समाज में दलित वर्ग की सेवा और उनके उत्थान का भार अधिकतर सामाजिक कार्यकर्ताओं पर ही है।

मैं आशा करता हूं कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर कार्यकर्ताओं को उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रोत्साहन देने में सहायक होंगे। इस आयोजन के लिये मैं भारत दलित सेवक संघ को बधाई देता हूं और शिविर की सफलता की कामना करता हूं।

(१७ मार्च, १९५८)

महावीर जयन्ती के अवसर पर

मानव समाज की सेवा का आदर्श बहुत ऊंचा है। प्राय सभी धर्मप्रवर्तकों और साधु-सन्तों ने इसकी महिमा गाई है और निजी जीवन में इस आदर्श से प्रेरणा प्राप्त की है। मुझे खुशी है कि भगवान महावीर की जयन्ती के अवसर पर "सेवा समाज" इसी आदर्श को लेकर विशेषांक निकालने जा रहा है। अहिंसा की भावना और प्राणीमात्र के प्रति सद्भावना इस आदर्श की पूर्ति के आवश्यक अंग हैं मैं "सेवा समाज" के प्रयास की सफलता चाहता हूं और इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

(२६ मार्च, १९५८)

बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् को मैं इस संस्था के सातवें वार्षिक महाधिवेशन के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। हिन्दी प्रचार तथा प्रसार कार्य के अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने साहित्य की अभिवृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। परिषद् ने अनेक उच्च कोटि के प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं। मैं आशा करता हूं कि परिषद साहित्य सृजन और राष्ट्र-भाषा प्रसार का कार्य यथापूर्व तत्परता से करती रहेगी।

(२८ मार्च, १९५८)

लद्दाख के जागरण का द्योतक—"नया लद्दाख"

लद्दाख की जनता की ओर से प्रकाशित होने वाले एकमात्र पत्र "नया लद्दाख" के लिये मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। यह खुशी की बात है कि दूरस्थ लद्दाख के लोगों ने लद्दखी और देवनागरी लिपि मे ऐसा समाचार पत्र निकालने का निश्चय किया है। मुझे विश्वास है कि "नया लद्दाख" के द्वारा लद्दाखी जनता को जागरण और नवनिर्माण का संदेश मिलेगा। हमारे देश में चारों तरफ जो रचनात्मक काम हो रहे है, इस कार्यक्रम मे लद्दाख का प्रदेश भी शामिल है। इस सम्बन्ध मे "नया लद्दाख" लोगों के लिए विस्तृत जानकारी उपलब्ध कर के उन्हे प्रेरित कर सकेगा, ऐसी मेरी आशा है। इस अवसर पर मै लद्दाख की जनता का अभिनन्दन करता हूं और लद्दाख तथा भारत देश के हित मे रचनात्मक कार्यो मे उनके सहयोग के लिये अनुरोध करता हूं।

(२८ मार्च, १९५८)

गूजर जाति को उन्नत करने पर बल

पठानकोट मे होने वाले दूसरे भारतीय आदिम जाति सम्मेलन के लिये मै अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि सम्मेलन इस क्षेत्र की आदिम जातियों, विशेषकर गूजरों की, समस्याओं का अध्ययन कर उन्हे भारतीय समाज के अन्य अंगों को समानता मे लाने मे सफल होगा। गूजर लोग अपने सरल और परिश्रमपूर्ण जीवन के लिये प्रसिद्ध है। सभी प्रकार से उन्हे सामाजिक जीवन की ओर आकृष्ट करना सेवक संघ का कर्तव्य है। इन जातियों और समाज दोनों का ही इस मे कल्याण है। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(३ अप्रैल, १९५८)

बांकीपुर बालिका विद्यालय

बांकीपुर बालिका विद्यालय के लिए मैं अपनी शुभकामनाये भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि विद्यालय का हीरक जयन्ती सम्बन्धी महोत्सव सफल होगा। इस विद्यालय की गणना बिहार की पुरानी शिक्षा संस्थाओं में होती है। इस अवसर पर विद्यालय की नई पुरानी सभी छात्राओं तथा अध्या-

पिकाओं को मैं बधाई देता हूं और यह कामना करता हूं कि यह विद्यालय दिनोंदिन जनता की सेवा में उन्नति करता रहे।

(८ अप्रेल, १९५८)

मातृ सेवा संघ का लोकोपयोगी कार्य

दो वर्ष हुए नागपुर में मातृ सेवा संघ का काम देखने का मुझे सुअवसर मिला था। नागपुर और आसपास के क्षेत्रों में इस संस्था ने महत्वपूर्ण लोकोपयोगी कार्य किया है। यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि मातृ सेवा संघ ने अब हिंगनघाट में एक प्रसूति गृह खोलने का निश्चय किया है। इसके लिए मैं मातृ सेवा संघ को बधाई देता हूं और इस अवसर पर संघ की संचालिका तथा इस से सम्बद्ध अन्य व्यक्तियों के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

(१६ अप्रेल, १९५८)

शहीदों की स्मृति में

गया नगर में शहीदों की पुण्य स्मृति में स्थापित किये गये स्मारक के उद्घाटन के अवसर पर मैं गया के लोगों का अभिनन्दन करता हूं और उन्हें बधाई देता हूं। हमारी स्वाधीनता और जन जागरण की नींव ऐसे ही नवयुवकों के आत्मबलिदान पर स्थिर है। मैं आशा करता हूं कि लोग जहां इन शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे वहां इस स्मारक से इस बात की प्रेरणा भी ग्रहण करेंगे कि राष्ट्र का हित सभी दूसरे हितों के मुकाबले में सर्वोपरि है।

(१७ अप्रैल, १९५८)

सर्वोदय सम्मेलन, पंढरपुर

पंढरपुर में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर मैं सभी कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करता हूं। मेरी सदा से यह धारणा रही है कि सर्वोदय आदर्श को प्राप्त करने के लिये जो प्रयास किया जा रहा है वह सच्चे अर्थों में रचनात्मक कार्य है। जिन लोगों का यह विश्वास है कि मानव की उन्नति और सुख-प्राप्ति के लिये मानव समाज का पुनर्गठन सहिष्णुता, पारस्परिक प्रेम तथा त्याग के आधार पर होना चाहिये, उन्हें सर्वोदय आन्दोलन से निश्चय ही प्रेरणा प्राप्त होगी। सम्भव है इस कार्य में प्रगति धीमी हो,

किन्तु जो भी सफलता हम प्राप्त करेंगे वह स्थाई होगी। मैं आशा करता हूं कि पंढरपुर सम्मेलन के फलस्वरूप सर्वोदय आदर्श और अधिक लोकप्रिय बन सकेगा और इसका व्यापक प्रचार होगा। 'चिन्मय जगत' के द्वारा मैं इस सम्मेलन के आयोजकों तथा इसमें भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के प्रति अपनी शुभ कामनायें प्रगट करता हूं।

(१२ अप्रैल, १९५८)

"संयुक्त कर्नाटक" की रजत जयन्ती

"संयुक्त कर्नाटक" की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं इस दैनिक समाचार-पत्र से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का अभिनन्दन करता हूं और इस समारोह की सफलता के लिये अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। कन्नड भाषा-भाषी प्रदेश में गत २५ वर्षों से "संयुक्त कर्नाटक" इस सार्वजनिक सेवा के समान रहा है। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि इस अवधि में इस पत्र के द्वारा सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों को बल मिला है। मैं पत्र की उन्नति की कामना करता हूं।

(२२ अप्रेल, १९५८)

गीता विज्ञान गोष्ठी

बीकानेर में आयोजित [illegible] गोष्ठी के अवसर पर आयोजकों का अभिनन्दन करते हुये मैं समारोह की सफलता के लिये अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। गीता का दिव्य उपदेश इतना [illegible] और व्यापक है कि उसके सम्बन्ध में मेरे लिये कुछ कहना आवश्यक नहीं। मुझे आशा है कि इस उपदेश से जनसाधारण में गीता को लोकप्रिय बनाने में यह गोष्ठी सहायक होगी।

(२५ अप्रेल, १९५८)

बच्चों के प्रति

राजस्थान बाल मन्दिर के पांचवें वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं राज्य के बच्चों के प्रति स्नेह तथा आशीर्वाद भेजता हूं। मैं बच्चों को यह विश्वास दिलाना चाहूंगा कि जहां सरकार विकास सम्बन्धी बड़ी बड़ी योजनाओं में व्यस्त है वहाँ उसका इस बात की ओर भी पूरा ध्यान है कि बच्चों की सुख सुविधा के लिये जो कुछ बन सके किया जाय, क्योंकि हम जो कुछ भी बनाने

की कोशिश कर रहे हैं उसको बड़े होकर आजकल के बच्चे ही संभालेंगे । मैं बाल मन्दिर के वार्षिकोत्सव की सफलता की कामना करता हूं ।

(२६ अप्रैल, १९५८)

राजस्थान हरिजन सेवक संघ

राजस्थान हरिजन सेवक संघ के आगामी वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर मैं उक्त संस्था के लिये अपनी शुभकामनाये भेजता हूं । मुझे आशा है कि संघ के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजस्थान के पिछड़े हुए लोगों, विशेषकर हरिजनों को, सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र मे अधिकाधिक सुविधायें प्राप्त हो सकेंगी । मैं सम्मेलन की सफलता का कामना करता हूं ।

(१८ मई, १९५८)

समाज कल्याण बोर्ड का विस्तार

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड को बम्बई राज्य की शाखा, बोर्ड के उद्देश्यों तथा कार्य के व्यापक प्रचार के लिए, एक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रही है । समाज कल्याण-सम्बन्धी काम हमने अभी कुछ सालों से हाथ मे लिया है और इस बात की आवश्यकता है कि केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड तथा राज्यों मे काम करने वाली इसकी शाखायें जो कुछ कर रही है और करना चाहती हैं उसके सम्बन्ध में अधिक से अधिक लोगों को जानकारी हो । मेरा विश्वास है कि "समाज" का प्रकाशन इस उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक होगा । मैं "समाज" की सफलता की कामना करता हूं ।

(६ जून, १९५८)

जयपुर में खादीघर की स्थापना

मुझे यह जान कर खुशी हुई कि राजस्थान खादी संघ द्वारा जयपुर में खादी घर खोला जा रहा है । राजस्थान म खादी के उत्पादन और खादी संघ की योजना को देखते हुए मुझे यह विश्वास होता है कि खादी घर की स्थापना से इस महत्वपूर्ण उद्योग को और भी प्रोत्साहन मिलेगा । मैं इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूं ।

(२३ अगस्त, १९५८)

श्री सत्यदेव का अभिनन्दन

श्री सत्यदेव विद्यालंकार से मेरा परिचय काफी पुराना है। एक अनुभवी हिन्दी पत्रकार और सार्वजनिक कार्यकता के नाते उन्होंने, सक्रिय राजनीति की जवलन्त ज्योति से दूर रह कर, जो काम किया है वह महत्वपूर्ण है। इनके उद्यम और उत्साह के बल पर कई एक हिन्दी समाचार पत्रों का जन्म हुआ, जिनमें से अधिकांश आज भी फलफूल रहे हैं। ऐसे समय में जबकि हिन्दी पत्रों के सम्पादन का मान निर्धारित नहीं हुआ था, श्री सत्यदेव ने हिन्दी पत्रकारिता को उचित धरातल पर लाने में प्रशंसनीय योगदान दिया।

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि श्री सत्यदेव के प्रशसकों और मित्रों ने उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया है। इस अवसर पर मैं उनके प्रति अपनी शुभ-कामनाएं प्रकट करता हूं और इस प्रयास की सफलता चाहता हूं।

(२३ अगस्त, १९५८)

पूना की शिक्षण प्रसारक मंडली

शिक्षण और समाज सेवा के क्षेत्र में पूना नगर का स्थान हमारे देश में प्रमुख रहा है। जिन संस्थाओं के द्वारा पूना को इस कार्यक्रम में सफलता मिली है, शिक्षण प्रसारक मंडली भी उनमें से एक है। गत ७० वर्षों में यह संस्था सेवारत कार्यकर्ताओं के उद्यम से शिक्षा प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य करती आ रही है। इस अवसर पर जब कि शिक्षण प्रसारक मंडली अपने ७० वर्ष पूर्ण कर चुकी है, मैं मंडली को तथा इस से सम्बन्धित सभी कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं और इसकी अधिकाधिक सफलता की कामना करता हूं।

(२५ अगस्त, १९५८)

भारतीय नौसेना की प्रशंसनीय प्रगति

नौसेना दिवस के अवसर पर भारतीय नौसेना के नाविकों तथा अधिकारियों के प्रति मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। हमारी नौसेना जिस प्रकार तेजी से और किसी भी तरह के अनावश्यक प्रदर्शन के बिना कुशल और दृढ़ शक्ति

का रूप लेती जा रही है, वह एक रोचक और गौरवपूर्ण कहानी के समान है। अभी तक जो प्रशंसनीय प्रगति की गई है उसके लिए नौसेना से प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति श्रेय का भागी है और समस्त राष्ट्र के अभिनन्दन और शुभ-कामनाओं का अधिकारी है।

मुझे आशा है कि हमारे अधिकारी और नाविकगण अपनी सफलता से प्रेरणा ग्रहण करेंगे और इस बात का अनथक प्रयत्न करते रहेंगे कि राष्ट्र की सेवा में भविष्य में हमारी नौसेना की उन्नति और भी अधिक हो।

(२५ अगस्त, १९५८)

उत्कल राष्ट्रभाषा परिषद की रजत-जयन्ती

इसकी रजत-जयन्ती के अवसर पर मैं उत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परिषद् को बधाई देता हूं और परिषद के सभी कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारियों के प्रति अपनी शुभकामना प्रगट करता हूं। राष्ट्रभाषा प्रचार के सम्बन्ध में उत्कल बहुत वर्षों से आगे रहा है, और बहुत हद तक यह कार्य राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रयत्नों का ही फल है। मैं आशा करता हूं कि सदा की भांति उत्कल में हिन्दी प्रचार का कार्य पूर्ण रूप से होता रहेगा और इसके साथ ही उत्कल में रहने वाले हिन्दी भाषियों को भी उड़िया सीखने की प्रेरणा मिलती रहेगी। उत्कल राष्ट्रभाषा परिषद् के रजत-जयन्ती समारोह की मैं सफलता चाहता हूं।

(८ नवम्बर, १९५८)

वसन्तोत्सव

वाराणसी संगीत परिषद् द्वारा आयोजित वसन्तोत्सव की सफलता के लिए मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं। संगीत की शास्त्रीय प्रणाली वैज्ञानिक होते हुए भी आज इतनी लोकप्रिय नहीं जितनी होनी चाहिए। मैं आशा करता हूं कि वाराणसी संगीत परिषद् के प्रयत्नों के फलस्वरूप इस शैली को समझने वालों और इससे आनन्द उठाने वालों की संख्या में वृद्धि होगी।

(२९ दिसम्बर, १९५८)

१९५९

वल्लभ विद्यापीठ समावर्तन समारोह

वल्लभ विद्यापीठ को स्थापित हुए तो कुछ वर्ष बीत चुके हैं पर यह पहला ही समावर्तन समारोह होने जा रहा है इसलिये मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं इसमें शरीक होऊं और संस्था की प्रगति को अपनी आंखों से देखूं। पर मेरे लिये दिल्ली पहुंच जाना अनिवार्य रूप से आवश्यक हो गया है, इसलिये मुझे दु:ख है कि मैं इस समारोह में शरीक नहीं हो सका।

मैंने जो कुछ संस्था के सम्बन्ध में सुना है उससे मुझे केवल संतोष ही नहीं हुआ है वरन् इसका विश्वास हो गया है कि सरदार वल्लभभाई का नाम जिस संस्था के साथ जुड़ा है उसका काम भी वैसा ही ठोस और अच्छा होगा और जिन उद्देश्यों तथा आदर्शों को सामने रखकर इसकी स्थापना हुई थी उनकी ओर यह संस्था आगे बढ़ती जाएगी। मैं इसमें संबधित सभी कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं और आशा रखता हूं कि वह सरदार वल्लभभाई के नाम के योग्य इसको बनाए रखेंगे और उसे उन्नति के मार्ग पर आगे बढाएंगे। विद्यार्थियों के प्रति मेरा प्यार और आशीर्वाद है कि वह देश के सच्चे नागरिक बनें और अपना तथा देश का कल्याण कर सकें। यद्यपि मैं शरीर से वहां उपस्थित नहीं हूं पर मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

(१२ जनवरी, १९५९)

एक देहाती शिक्षण संस्था

श्रीमती जगवीर कौर शिवा द्वारा सञ्चालित चौधरी छोटूराम किसान कन्या विद्यालय, दुहाई (जि० मेरठ) को देखने का अवसर मुझे मिला। इस स्कूल की स्थापना स्वर्गीय चौधरी कुमार सिंह ने की थी। गांव की महिलाओं में शिक्षा प्रसार उनका जीवन व्रत था। इस उद्देश्य का जिस निष्ठा और लग्न से उन्होंने पालन किया उसे सभी जानते हैं। उनकी पुत्री श्रीमती जगवीर कौर शिवा जो स्वयं बी०ए०, बी०टी० हैं और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्या हैं, इस विद्यालय की वर्तमान व्यवस्थापिका हैं और अपने पिता के लक्ष्य को पूरा करने में सतत प्रयत्नशील हैं। मैं इस

स्कूल को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। देहातों में इस प्रकार की संस्थाओं की अत्यधिक आवश्यकता है। यह विद्यालय गांव की महिलाओं की और अधिक सेवा कर सके, इस उद्देश्य से विद्यालय की व्यवस्थापिका सभा कई दिशाओं में अपने प्रयत्नों को बढ़ाना चाहती है और उसकी कामना है कि महिला मंगल का यह विद्यालय एक महान केन्द्र हो।

इस विद्यालय को और उसकी संचालिका तथा उसके कार्यकर्ताओं को मेरा आशीर्वाद है और मेरी यह कामना है कि यह विद्यालय दिनोंदिन ज्यादा तरक्की करे।

(१२ फरवरी, १९५९)

सर्वोदय विचारधारा का महत्त्व

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि गत कई वर्षों से सर्वोदय के वार्षिक सम्मेलनों में भाग लेता आया हूं और प्रति वर्ष वहां से एक नई प्रेरणा ग्रहण करता रहा हूं। इसलिये मुझे इस बात का खेद है कि इस वर्ष किन्हीं कारणों से अजमेर में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेना मेरे लिये सम्भव नहीं होगा।

सर्वोदय विचारधारा प्रधानतः जीवन के सात्विक तत्वों पर आश्रित है। किसी भी युग में इस विचारधारा की उपादेयता सन्देह से ऊपर मानी जा सकती है। किन्तु मैं समझता हूं कि आधुनिक युग में इसकी विशेष आवश्यकता है। विज्ञान के बड़े से बड़े चमत्कार और क्रांतिकारी आविष्कार भी एक ठोस सच्चाई को धूमिल नहीं कर सकते। वह सच्चाई है मानव की आन्तरिक क्षमताओं और प्रवृत्तियों का बल। इन प्रवृत्तियों के विकास द्वारा ही मानव सच्ची उन्नति कर सकता है और द्वेष तथा संघर्ष पर विजय पा प्रकृति के वरदान का उपभोग कर सकता है। सर्वोदय की भावना इन प्रवृत्तियों को जागृत कर मानव समाज को सच्चे सुख और समृद्धि के निकट लाने की क्षमता रखती है। मेरी यह कामना है कि आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में संचालित यह आन्दोलन दिनोंदिन व्यापक और लोकप्रिय हो। अजमेर अधिवेशन के लिये मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं।

(२३ फरवरी, १९५९)

भारत सेवक समाज

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारत सेवक समाज के छठे अधिवेशन का उद्घाटन-समारोह प्रधान मंत्री के द्वारा भीलवाड़े में सम्पन्न होने जा रहा है। देश की वर्तमान स्थिति में, जब हम चतुर्दिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं, ऐसी संस्थाओं की सेवाओं की नितान्त आवश्यकता है।

मैं इस अवसर पर भारत सेवक समाज के कार्यकर्ताओं के लिए आशीर्वाद व शुभकामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूं कि उनकी सेवाओं से जनता को अधिकाधिक लाभ पहुंच सकेगा।

(८ मार्च, १९५९)

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर "हरिद्वार" के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं और विद्यालय के सभी अध्यापकों, प्रबन्धकों तथा विद्यार्थियों को बधाई देता हूं। यह महाविद्यालय सार्वजनिक प्रयास और साधारण साधनों के बल पर स्थापित होकर एक बड़ी संस्था के रूप में आज हमारे सामने है। हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ता और शिक्षा प्रेमी ऐसी संस्थाओं के अनुभव और इतिहास से निश्चय ही प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। मेरी यह कामना है कि गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर दिनोंदिन उन्नति करे और साक्षरता प्रसार तथा शिक्षा प्रचार के रचनात्मक कार्य में अपना योगदान देता रहे।

(९ अप्रैल, १९५९)

छोटानागपुर आदिमजाति सेवा मंडल

छोटानागपुर आदिम जाति सेवा मंडल के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर मैं मंडल के कार्यकर्ताओं तथा आदिवासी भाइयों के प्रति अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं। आदिवासियों की स्थिति को उन्नत करने की दिशा में अभी तक मंडल ने जो प्रयत्न किए हैं वे सराहनीय हैं। मैं आशा करता हूं कि आगामी सम्मेलन सफल होगा और उन्नति-सम्बन्धी कार्यक्रम के फल-स्वरूप आदिवासियों की स्थिति में सुधार होगा।

(१८ अप्रैल, १९५९)

वैशाली में महावीर जयन्ती

यह संतोष का विषय है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि और प्राचीन गणतन्त्र की वैभवशालिनी राजधानी वैशाली के जीर्णोद्धार की दिशा में पिछले कुछ वर्षों में प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में महावीर जयन्ती के दिन वैशाली महोत्सव का मनाया जाना सर्वथा उचित है। यद्यपि वैशाली के गौरव की गाथा के साक्षी के रूप में वहां के भग्नावशेष भी प्रायः विनष्ट हो चुके हैं, पराक्रमी लिच्छवियों की इस नगरी का इतिहास आज भी हमारे लिए प्रेरणादायक है।

मुझे प्रसन्नता है कि वैशाली धीरे-धीरे प्राकृत साहित्य के अध्ययन और खोज का केन्द्र बन रहा है। मैं इस कार्य की सफलता की कामना करता हूं और वैशाली महोत्सव के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

(१८ अप्रैल, १९५९)

संस्कृत महाविद्यालय

खन्ना सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और विद्यालय से सम्बन्धित व्यवस्थापकगण, अध्यापकगण तथा छात्रों को बधाई देता हूं। मुझे आशा है कि सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय, खन्ना संस्कृत के पठन-पाठन की दिशा में यथापूर्व यत्न करता रहेगा।

महाविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की मैं सफलता चाहता हूं।

(२० अप्रैल, १९५९)

दिल्ली में नागरिक सम्मेलन

नागरिक मंच के तत्वावधान में आयोजित नागरिक सम्मेलन का सभी दिल्ली निवासी स्वागत करेंगे। देश की राजधानी होने के नाते और सहसा अत्यधिक विस्तार के कारण दिल्ली नगर की समस्यायें ऐसी हैं जिनका जल्दी से जल्दी सुलझाया जाना आवश्यक है। मैं आशा करता हूं कि आगामी

सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी नागरिक इन समस्याओं पर विचार करेंगे दिल्ली को आदर्श नगर बनाने की चेष्टा करेंगे।

मैं नागरिक सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(२४ अप्रैल, १९५९)

घानी तेल उद्योग सम्मेलन

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि घानी तेल उद्योग का अखिल भारतीय सम्मेलन पहली बार आयोजित हो पाया है। घानी तेल की अच्छाई और उपयोगिता निर्विवाद है, परन्तु यदि इस उद्योग को ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग बनना है तो उसके लिए काफी प्रयत्न करना होगा। सहकारिता के आधार पर ही इस उद्योग का पुनर्गठन सम्भव है और इस दिशा में उत्साहप्रद प्रगति हुई है।

मेरी कामना है कि सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हो और इस पुराने उद्योग को नया बल और नया जीवन मिले।

(२५ अप्रैल, १९५९)

राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन

मुझे खुशी है कि भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन इस बार दिल्ली में हो रहा है और इसका उद्घाटन हमारे प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू कर रहे हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार के काम से मेरा सम्बन्ध काफी पुराना है। मैंने सदा इसे एक महत्वपूर्ण रचनात्मक काम समझा है। यह खुशी की बात है कि राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य दिनोंदिन आगे बढ़ रहा है। भाषा विस्तार सम्बन्धी काम तो हमारे प्रचारक कर ही रहे हैं, मैं चाहूंगा कि वे अहिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी के अनुकूल वातावरण पैदा करने में भी सहायक हों। हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या में वृद्धि का जितना महत्व है, शायद उससे अधिक महत्व इस बात का है कि कहीं भी हिन्दी को क्षेत्रीय भाषाओं का प्रतिद्वन्दी न समझा जाय और इस सम्बन्ध में यदि कोई भ्रम हो उसे दूर किया जाय।

मैं राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१ मई, १९५९)

अन्तर्विश्वविद्यालय हिन्दी गोष्ठी

दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय हिन्दी अनुसन्धान गोष्ठी का मैं स्वागत करता हूं। मुझे विश्वास है कि गोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वद्जन-हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगों का गंभीर विवेचन कर जहां साहित्य की अभिवृद्धि करेंगे वहाँ वर्तमान साहित्य सेवियों का मार्ग दर्शन भी कर सकेंगे। साहित्य में अवरोध की बात प्राय. सुनने मे आती है, विशेषकर आजकल जब कि नवीन प्रवृतियां उभरती दिखाई दे रही हैं यदि साहित्यिक वर्ग अपने पथ को धूमिल पाता है तो इसमे आश्चर्य की बात नहीं। अनुभवी साहित्य सेवियों और अधिकृत विद्वानों का यह कर्तव्य है कि स्थिति के ठीक विश्लेषण द्वारा और आधुनिक काल की आवश्यकताओं के निरूपण अनुसंधान द्वारा वे शिक्षित समाज का नेतृत्व करे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिल्ली विश्वविद्यालय के उप-कुलपति ने जो स्वयं अहिन्दी भाषा-भाषी हैं, विश्वविद्यालय मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाने की घोषणा की है। दिल्ली विश्वविद्यालय के इस प्रयास की मै सराहना करता हूं और इस हिन्दी अनुसंधान गोष्ठी की सफलता चाहता हूं।

(१८ मई, १९५९)

गुरुकुल कांगड़ी हीरक जयन्ती

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को उसकी हीरक जयन्ती के अवसर पर मै अपनी शुभकामनाये भेजता हूं। यह हर्ष का विषय है और समझता हूं गुरुकुल कांगड़ी के लिये श्रेयस्पद है कि समय समय पर उदासीनता और प्रतिकूल वातावरण के होते हुए भी इस संस्था ने सार्वजनिक सेवा के व्रत का पालन किया है और आज वह अपने जीवन के ६० वर्ष पूर्ण कर हीरक जयन्ती मनाने जा रही है।

हमारी आज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सर्वोतम शिक्षा प्रणाली का क्या रूप हो, इस सम्बन्ध मे अभी तक निश्चय पूर्वक कुछ कहना सम्भव नहीं है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा पद्धति पर आधारित है, किन्तु आधुनिक शिक्षा विज्ञान से भी यह प्रणाली प्रभावित हुई है।

सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र मे जो भी परीक्षण हमारे देश मे अभी तक हुए है उनमें गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है ।

इस अवसर पर मैं गुरुकुल कांगडी के संचालकों तथा व्यवस्थापकों को बधाई देता हूं । इस संस्था द्वारा अधिकाधिक लोग लाभान्वित हों और निरक्षरता के उन्मूलन तथा शिक्षा के प्रचार मे यह पूर्ण योगदान देती रहे, यही मेरी कामना है ।

(३ जुलाई, १९५९)

आरोग्य निकेतन को संदेश

आरोग्य निकेतन, लखनऊ सार्वजनिक स्वास्थ्य की दिशा मे योजनानुसार प्रगति कर रहा है, यह जानकर मुझे खुशी हुई । प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान जिन सिद्धान्तों पर आधारित है वे सरल, सस्ते और दोषरहित है । मै समझता हूं कि अन्य चिकित्सा प्रणालियों मे इस प्रणाली का अपना स्थान है । इसलिये जनहित की दृष्टि से इस प्रणाली को प्रोत्साहन देना उचित है । इसी कारण केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय ने आरोग्य निकेतन को आर्थिक सहायता दी है ।

मै आरोग्य निकेतन की सफलता की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि जनता को इससे अधिकाधिक लाभ पहुंचेगा ।

(९ अगस्त, १९५९)

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन अभिनन्दन ग्रन्थ

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन के सम्मानार्थ अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का आयोजन स्तुत्य है और मै इसका स्वागत करता हूं । राष्ट्र क्षेत्र में, विशेष कर हिन्दी प्रचार और प्रसार के क्षेत्र मे, टण्डनजी की सेवायें बहुमूल्य है । लगभग गत ५० वर्षों से उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों मे जिस निःस्वार्थ भाव से सार्वजनिक कार्य किया है, उससे सभी कार्यकर्ता प्रेरणा ग्रहण कर सकते है ।

टण्डनजी का व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि वह राजनीति और साहित्य की परिधि में ही नहीं समा सकता । सामाजिक जीवन के जिस पहलू से भी

उनका सम्बन्ध रहा है उसी को उन्हों ने समृद्ध किया है। सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करने के बाद टण्डनजी जिन सिद्धान्तों का अनुसरण करते रहे हैं उनमें से अधिकांश आज भी आदर्श रूप में सर्वमान्य हैं। उनके नेतृत्व से सदा सत्य, सदाचरण और नैतिकता के पक्ष को समर्थन मिला है।

इस अवसर पर मैं श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

(७ अगस्त, १९५९)

कस्तूरबा सेवा मन्दिर, राजपुरा

खुशी की बात है कि कस्तूरबा सेवा मन्दिर, राजपुरा को भारत सरकार द्वारा वहां एक देहाती शिक्षण संस्था स्थापित करने की अनुमति मिली है। इस संस्था में देहाती जीवन और ग्रामीण उद्योगों पर पूरा जोर दिया जायगा। यह संस्था अपना काम पन्द्रह अगस्त से शुरू कर रही है। इस शुभ अवसर पर मैं केन्द्र की संचालिकाओं और शिक्षा के काम में हिस्सा लेने वाली महिलाओं को अपना आशीर्वाद भेजता हूं। मुझे आशा है कि यह काम आगे बढ़ेगा और इससे हमारे देहाती जीवन में सुधार होगा।

(११ अगस्त, १९५९)

अरबी स्कूल को संदेश

मजलिसे इल्मिया लतीफिया हैदराबाद जिस खुश असलूबी से अरबी तालीम को फिरोग़ दे रही है उसके लिए वह मुबारकबाद की मुस्तहिक है। अरबी जुबान और अदब के मताला की अहमीयत तारीख और बैनुल-अकवामी हलचल के एतबार से तो है ही वह हमारे मुसलमान भाइयों के लिए मुकद्दस जुबान भी कही जा सकती है। मुझे उम्मीद है कि मजलिसे हजा अपनी कोशिशें बराबर जारी रखेगी। मैं उनकी कामयाबी के लिए दुआ करता हूं।

(२८ अगस्त, १९५९)

राजस्थान में लोकतन्त्रात्मक विकेन्द्रीकरण

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि २ अक्तूबर से राजस्थान सरकार लोकतन्त्रात्मक विकेन्द्रीकरण की दिशा में बहुत बड़ा पग उठा रही है। यह

प्रयोग राजस्थान के लोगों के लिये ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों के लिये भी दिलचस्पी और महत्व का विषय होगा। बलवन्तराय मेहता समिति की सिफारिशों के अनुसार समूचे राजस्थान मे स्थानीय कार्यों से सम्बन्धित सभी अधिकार ग्राम पंचायतों, तहसील समितियों और जिला परिषदों को सौंपे जा रहे हैं। जहा तक मैं जानता हूं यह पहला अवसर है कि हमारे देश में किसी भी राज्य ने इतने बड़े पैमाने पर सत्ता का विकेन्द्रीकरण करने का निश्चय किया है। इस निश्चय के लिये मैं राजस्थान सरकार को बधाई देता हूं और यह कामना करता हूं कि उनका यह प्रयोग सफल हो और ग्रामों के विकास के हित मे इस प्रयोग से दूसरे राज्यों को भी प्रेरणा मिले।

(२८ अगस्त, १९५९)

मजलिसे सीरते हुसैन

कुल हिन्दी मजलिसे सीरते हुसैन के मकासद और इस अदारे की इल्मी, समाजी और अखलाकी कारगुजारी के मुत्तलिक जो कुछ मुझे मालूम हुआ उस से मुझे खुशी हुई। इस अदारे के सालाना अजलास के मौका पर मैं मजलिसे हाजा के अरकानो कारकुनान को मुबारकबाद भेजता हूं और अजलास की कामयाबी के लिए दुआगो हूं।

(२८ अगस्त, १९५९)

सद्गुरू प्रतापसिंह के निधन पर

नामधारी पंथ के मान्य नेता सद्गुरू प्रतापसिंह जी के निधन के शोक समाचार से मुझे दु:ख हुआ। इस अवसर पर मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। सद्गुरु प्रतापसिंह जी के उपदेशों तथा जीवन से असंख्य व्यक्तियों ने सदाचार और भक्ति की प्रेरणा ग्रहण की है। उन्होंने और उनके अनुयाइयों ने समाजसुधार और ग्राम विकास, विशेष, करके गोसंवर्धन के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य किया है। मुझे आशा है कि सद्गुरु प्रतापसिंह जी की स्मृति इस दिशा मे उनके अनुयाइयों तथा अन्य प्रशंसकों को बराबर प्रेरित करती रहेगी।

(७ सितम्बर, १९५९)

"बालक" के पाठकों को प्यार

इस पत्रिका के द्वारा मैं अपने देश के बच्चों को, विशेषकर "बालक" के पाठकों को, अपना प्यार और आशीर्वाद भेजता हूं। खेलना-कूदना, खुश रहना, पढ़ना और नई नई बातें सीखना बच्चों का अधिकार है और यही उनकी जिम्मेदारी भी है। बच्चों के लिये अधिक से अधिक सुख-सुविधायें जुटा हम लोग अपने आपको धन्य समझते हैं। मेरी यह प्रार्थना है कि हम सदा बच्चों में आशा की झलक देखते रहें और हमारे देश के बच्चे सदा सुखी और स्वस्थ रहें।

(२६ सितम्बर, १९५९)

"विद्युत" का विशेषांक

इस संदेश द्वारा मैं "विद्युत्" के तरुण पाठकों को अपना प्यार और आशीर्वाद भेजता हूं। मुझे आशा है कि जिस महापुरुष की ७०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वे "विद्युत्" का विशेषांक निकालने जा रहे हैं, पाठकगण उस विभूति, श्री जवाहरलाल नेहरू की जीवनी का ध्यान से अध्ययन करेंगे और उनकी प्रतिभा तथा कार्यशीलता से प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

(१९ अक्तूबर, १९५९)

संयुक्त राष्ट्र-दिवस के अवसर पर

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र-दिवस के अवसर पर हमारे हृदय में कुछ आशा का संचार हो रहा है। ऐसा जान पड़ता है कि शान्ति की स्थापना, या कम से कम, युद्ध से बचने की आवश्यकता का विचार दृढ़ होता जा रहा है। यह सच है कि इस दिशा में अभी ठोस कदम उठाया जाना बाकी रहता है, फिर भी मैं यह कहने का साहस करूंगा कि वातावरण में ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं जो इस विचार को पुष्ट करते हैं। विज्ञान की उन्नति के क्षेत्र में, आर्थिक विकास की दिशा में और सह-अस्तित्व की भावना को दृढ़ बनाने की ओर संसार कुछ आगे बढ़ा है, जिससे कम से कम आशावादी लोगों के दिलों में आशा उपजती है।

एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था के रूप में संयुक्त राष्ट्र मानवीय इतिहास में किसी भी अन्य संस्था की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण कहा जा सकता है। इसमे सन्देह नहीं कि राष्ट्रों के बीच मतभेद और विचार-वैभिन्य है, किन्तु कई एक मौलिक प्रश्नों पर सदस्य राष्ट्रों का सामान्य मत की ओर झुकाव है। यह खुशी की बात है, जो महान देशों में हाल ही में घटने वाली घटनाओं के प्रकाश मे और भी उत्साहवर्धक दिखाई देती है। अतर्राष्ट्रीय तनाव मे कमी हो रही है और पारस्परिक सद्भावना बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र को वास्तव मे विश्व संसद् अथवा सारे संसार की लोक-सभा कहना तो ठीक नहीं होगा, किन्तु यह भी गलत नहीं कि हम जिस रास्ते पर चल रहे हैं वह हमे उस लक्ष्य की ओर ले जा सकता है।

विभिन्न देशों के भविष्य और मानव के कल्याण से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं पर विचार करने के लिए इतने अधिक राष्ट्रों के प्रतिनिधि एक संस्था के सदस्यों के रूप मे इतिहास मे पहले कभी इकट्ठे नहीं हुए। राष्ट्रों के आपसी झगड़ों और समस्याओं को सुलझाने के लिए, मिल जुल कर, सामान्य प्रयास का विचार धीरे-धीरे व्यापक मान्यता प्राप्त कर रहा है। हम आशा करते हैं कि जो विचार अभी तक एक इच्छा अथवा आशामात्र के रूप में मानव के सामने था, शीघ्र ही वह एक स्वतःसिद्ध सच्चाई के समान स्वीकृत हो सकेगा।

सुरक्षा परिषद् तथा संयुक्त राष्ट्र की अन्य बड़ी परिषदें और इन सब से बढ़कर उसकी विशिष्ट संस्थायें अब संसार की आधुनिक समस्याओं को सुलझाने की दिशा मे यत्नशील और अग्रसर हैं। यह मानना होगा कि जैसे समय बीत रहा है, इन समस्याओं के प्रति संयुक्त राष्ट्र का दृष्टिकोण तथा प्रयत्न अधिकाधिक व्यावहारिक तथा रचनात्मक होते जा रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र के अधिकारपत्र के सिद्धान्तों पर भारत की सदा से आस्था रही है। इस विश्व संगठन को हर सम्भव तरीके से दृढ़ करने की और इसके कार्य को अधिक सफल बनाने की दिशा में, जो थोड़ा बहुत योगदान हमारा देश दे सका है, उससे हमें बहुत सन्तोष होता है।

आज के दिन, जब १४ वर्ष हुए इस महान् संस्था का जन्म हुआ था, मैं

संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राष्ट्रों और उन सब के प्रजाजनों का अभिनन्दन करता हूं और उनके प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं।

(२३ अक्तूबर, १९५९)

विक्रम विश्वविद्यालय

विक्रम विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं उक्त विश्वविद्यालय का अभिनन्दन करता हूं और अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। जिस महान विभूति का नाम इस विश्वविद्यालय के साथ जुड़ा है और जिस प्राचीन नगरी मे इसका प्रधान कार्यालय स्थापित है, इन दोनों से विश्वविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकगण को प्रेरणा मिलेगी ऐसी मेरी आशा है।

विक्रम विश्वविद्यालय दिनोंदिन उन्नति करे और यथाशीघ्र अपने गौरवमय अतीत के अनुरूप ही वर्तमान तथा भविष्य का निर्माण करे, यह मेरी कामना है।

(२ नवम्बर, १९५९)

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा "अर्चना" का प्रकाशन

"अर्चना" क प्रकाशन के लिये क्षौर देवनागरी लिपि मे विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखादि के प्रकाशन के निर्णय के लिये मैं प्रयाग विश्व-विद्यालय को बधाई देता हूं। इस देश की विभिन्न भाषाएं भारत की सांस्कृतिक शोभा हैं। उनमे से प्रत्येक का स्थान अपनी अपनी जगह ऊंचा है और भारतीय दृष्टिकोण से सभी महत्वपूर्ण हैं। इस विभिन्नता के कारण ये भाषाएं एक सीमा मे बंध सी गई हैं। उसका प्रमुख कारण लिपि की विभिन्नता है। यदि सभी भारतीय भाषाएं एक लिपि में लिखी जायं तो देश की सांस्कृतिक बपौती की रक्षा करते हुए हम इन सब भाषाओं को एक दूसरे के निकट ला सकते हैं। इसलिये "अर्चना" के उपर्युक्त निर्णय का मैं हृदय से स्वागत करता हूं और इस प्रयास की सफलता चाहता हूं।

(२ नवम्बर, १९५९)

अखिल भारतीय पंचायत परिषद् अधिवेशन

अखिल भारतीय पंचायत परिषद के आगामी अधिवेशन के लिये मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। मुझे यह कहने की जरूरत नहीं कि हमारे जनतन्त्रात्मक प्रशासन और विशेषकर भारतीय परम्परा के अनुसार ग्राम पंचायतों का स्थान कितना महत्व का रहा है। आज, जबकि, हम भारत के जनसाधारण के जीवन को सुधारना चाहते हैं और प्रशासन के विकेन्द्रीकरण द्वारा राष्ट्र-निर्माण के महान कार्य में ग्रामीण जनता को भी कुछ अधिकार सौंपना चाहते हैं, हमें पंचायतों की नींव को अधिक से अधिक दृढ़ बनाना है। अखिल भारतीय पंचायत परिषद इस दिशा में बहुत कुछ कर सकती है। मैं इस परिषद के आगामी अधिवेशन की सफलता चाहता हूं।

(२ नवम्बर, १९५९)

राजस्थान समग्र सेवा संघ

राजस्थान समग्र सेवा संघ के वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं संघ के लिये अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। राजस्थान इस बात पर गर्व कर सकता है कि विकेन्द्रीकरण की दिशा में क्रान्तिकारी पग सब से पहले यहां की सरकार ने ही उठाया है। विकेन्द्रीकरण के लक्ष्य और समग्र सेवा संघ के आदर्शों में बहुत कुछ मेलजोल है। मैं आशा करता हूं कि समग्र सेवा संघ की गतिविधि तथा कार्यक्रम का राजस्थान की जनता ही नहीं बल्कि सरकार भी स्वागत करेगी। मैं राजस्थान सर्वोदय सम्मेलन के आगामी अधिवेशन की कामना करता हूं।

(३ नवम्बर, १९५९)

बाल-दिवस के अवसर पर

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि बाल-दिवस जिसे हम गत दो सालों से मनाते आ रहे हैं धीरे धीरे लोकप्रिय होता जा रहा है और एक राष्ट्रीय उत्सव बनता दीख रहा है। जैसा कि इस अवसर पर मैंने पिछले वर्ष कहा था बच्चे राष्ट्र की पूंजी होते हैं। उनके रहन-सहन की स्थिति तथा शिक्षा

और पालन-पोषरण के मान को उन्नत करने के लिये हमें पूरी पूरी कोशिश करनी चाहिये। हमें ऐसे बच्चों का विशेष ध्यान रखना है जो किसी कारण बिछड़े हुए हों या विकलांग हों। यह खुशी की बात है कि इधर पिछले कुछ वर्षों से बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति जनता में काफी जागृति देखने में आ रही है। मुझे आशा है कि अपने राष्ट्र-निर्माण के कार्यक्रम में हम इन आवश्यकताओं को उचित स्थान देंगे। इस वर्ष बाल-दिवस के अवसर पर आपने जो लक्ष्य अपने सामने रखा है वह इस प्रकार है·

"प्रतिकूल परिस्थितियों में पले बच्चों को फिर से शिक्षा दी जायेगी"।

"अनाथ और विपन्न बच्चों की रक्षा और सहायता आवश्यक है"।

दूसरे रचनात्मक कामों की तरह, बच्चों के कल्याण की समस्या को भी हम देशव्यापी आन्दोलन द्वारा और सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा स्वयं बच्चों में उत्साह की भावना पैदा करके ही हल करने की आशा कर सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि बाल-कल्याण की दिशा मे यह बाल-दिवस और अधिक उन्नति का सूचक होगा।

देश के बच्चो, मैं आज के दिन तुम सब को अपना प्यार और शुभकामनायें भेजता हूं।

(१३ नवम्बर, १९५९)

देवनागरी प्रचार सम्मेलन

अखिल भारतीय देवनागरी प्रचार सम्मेलन द्वारा समस्त भारतीय भाषाओं के लिये देवनागरी लिपि के प्रयोग का प्रचार स्तुत्य है। मैं इसका हार्दिक स्वागत करता हूं। प्रचलित लिपियों के गुण-दोष के सम्बन्ध में किसी का चाहे कैसा ही मत हो किन्तु यह निर्विवाद है कि सभी भाषाओं द्वारा एक लिपि का प्रयोग इन भाषाओं के विकास और विशेष रूप से भारतीय साहित्य की अभि-वृद्धि की दिशा में बहुत बड़ा रचनात्मक कदम होगा। विभिन्न भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने के लिये एक सामान्य लिपि से बढ़ कर अधिक ठोस उपाय की मैं कल्पना नहीं कर सकता। इस प्रकार भाषाओं के बीच विद्यमान बहुत से भेद-भाव दूर हो जायेंगे और पारस्परिक सद्भावना का सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा। कोई भी देशभक्त भारतीय इससे बढ़कर और क्या

चाहेगा। मैं अखिल भारतीय देवनागरी प्रचार सम्मेलन के इस सारगर्भित प्रयास के लिये बधाई देता हूं और इसकी सफलता की कामना करता हूं।

(१६ नवम्बर, १९५९)

ज्योति संघ को शुभ-कामनायें

ज्योति संघ के रचनात्मक कार्य और महिला समाज के उत्थान में इसके योगदान से मैं काफी समय से परिचित हूं। मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि ज्योति संघ का निजी भवन बनकर तैयार हो गया है। इस अवसर पर मैं संघ के प्रति अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि यह संस्था स्त्री जाति और राष्ट्र के हित में दिनोंदिन उत्साहपूर्वक कार्य करती रहेगी।

(२७ नवम्बर, १९५९)

हिन्दी प्रचारसंघ पूना को संदेश

हिन्दी प्रचार संघ पूना गत २६ वर्षों से महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य करता आ रहा है। कार्यकर्ताओं के अध्यवसाय और लगन के कारण संघ को इस कार्य में काफी सफलता मिली है, जिस के लिये मैं उन्हें बधाई देता हूं। मुझे आशा है कि हिन्दी प्रचार संघ मराठी और हिन्दी भाषियों के बीच सद्भावना को दृढ़ कर के दोनों भाषाओं के प्रसार का कार्य करता रहेगा। मैं हिन्दी प्रचार संघ पूना की सफलता की कामना करता हूं।

(१७ दिसम्बर, १९५९)

१९६०

हिन्दी निकेतन एलूरू

हिन्दी निकेतन एलूरू के दशम वार्षिकोत्सव के अवसर पर निकेतन के अध्यापकगण और विद्यार्थियों के प्रति में अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी प्रचार की दिशा में उन्होंने जो कार्य किया है वह प्रशसंनीय है। मुझे आशा है कि इस रचनात्मक कार्य में और तेलुगु भाषी तथा हिन्दी भाषी लोगों के बीच सद्भावना का प्रसार करने में हिन्दी निकेतन को और भी सफलता मिलेगी।

(११ जनवरी, १९६०)

शहीद स्मारक समिति

शहीद स्मारक समिति, डुमरांव,, के लिये मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि शहीदों की स्मृति में जो स्मारक उन्होंने स्थापित किया है वह लोगों को सदा प्रेरित करता रहेगा और उनके दिलों में उन लोगों की याद हरी-भरी रखेगा जिन्होंने देश के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर किया।

(२७ जनवरी, १९६०)

बम्बई राष्ट्रभाषा प्रचार सभा पदवीदान समारोह

बम्बई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के आगामी पदवीदान समारोह के अवसर पर मैं सभी सफल विद्यार्थियों और सभा के कार्यकर्ताओं को अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और आशा करता हूं कि पारस्परिक आदान-प्रदान और सद्भावना के आधार पर बम्बई प्रान्त में हिन्दी प्रचार का कार्य यथापूर्व आगे बढ़ता रहेगा।

(२९ जनवरी, १९६०)

ठाकुर देवसिंह महाविद्यालय

मैं ठाकुर देवसिंह विष्ट महाविद्यालय नैनीताल के छात्रों को बधाई देता हूं कि उन्होंने श्रमदान और सम्पत्तिदान के द्वारा अपने महाविद्यालय में हाल

बनाने का निश्चय किया है। यह खुशी की बात है कि यह योजना कार्यान्वित भी हो चुकी है और अप्रैल के अन्त तक हाल के तैयार हो जाने की आशा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जहां इस श्रमदान द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों को नवीन सुविधा प्राप्त होगी, वहां वे अपने शारीरिक परिश्रम और सहयोग की भावना पर गर्व भी कर सकेंगे। इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के छात्रों तथा अध्यापकगण के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और इस संस्था की उन्नति की कामना करता हूं।

(२ फरवरी, १९६०)

मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के उद्देश्यों तथा उसके वास्तविक कार्य से मेरा काफी परिचय है। देश के प्राय. सभी भागों में जब कभी और जहां कहीं विपत्ति आई, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने आपदग्रस्त लोगों की सहायता करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है, और इन सभी कार्यों में सोसाइटी को बहुत कुछ सफलता भी मिली है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं सोसाइटी के कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारियों के प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं।

(१० फरवरी, १९६०)

उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन

उत्तरप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि हिन्दी प्रचार और साहित्य की अभिवृद्धि से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों पर सम्मेलन विचार कर प्रचारकों तथा साहित्य प्रेमियों का मार्ग दर्शन करेगा।

मैं सम्मेलन के आगामी वार्षिकोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

(१३ फरवरी, १९६०)

वैष्णव महासम्मेलन

निखिल भारत वैष्णव महासम्मेलन के अवसर पर मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और यह आशा करता हूं कि इस अवसर

पर महाप्रभु के उपदेशों तथा पुनीत जीवन के स्मरण से जन-गण लाभ उठायेंगे ।

(६ मार्च, १६६०)

श्रीमती जानकी देवी महाविद्यालय का शिलान्यास

श्रीमती जानकी देवी महाविद्यालय, नई दिल्ली के शिलान्यास के अवसर पर मैं श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला को हार्दिक बधाई देता हूं कि उनके शिक्षाप्रेम और निःस्वार्थ सेवा भावना के फलस्वरूप यह शुभ कार्य सम्भव हुआ । जनवरी १९४८ में जिस दिन गांधी जी ने अपना उपवास समाप्त किया उस दिन श्री ब्रजकृष्ण जी ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को बापू को समर्पित कर दिया था और बापू के देहान्त के बाद ही उन्हों ने शिक्षा और स्वास्थ्य प्रसार के लिये इस सम्पति का एक ट्रस्ट बना दिया उसी धन की सहायता से ब्रजकृष्ण जी ने अपनी माता जानकी देवी के नाम से यह महाविद्यालय खोलने का निश्चय किया है ।

जो छात्रायें इस महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करेंगी मुझे आशा है कि यह राष्ट्रीयता और निःस्वार्थ सेवा की भावना उन्हें भी अनुप्राणित करेगी । इस अवसर पर मैं श्री ब्रजकृष्ण जी चांदीवाला और ट्रस्ट के अन्य कार्यकर्ताओं के प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और प्रस्तावित महाविद्यालय के उज्जवल भविष्य की आशा करता हूं ।

(२५ मार्च, १६६०)

वैशाली में महावीर जयन्ती समारोह

भगवान महावीर की जयन्ती उनके जन्मस्थान वैशाली में मनायी जाय, यह बात सर्वथा उपयुक्त और युक्तिसंगत है । वैशाली का भव्य अतीत और जैन तथा बौद्ध मतों के आरम्भिक काल से उसका निकट का सम्बन्ध, पर्याप्त कारण हैं कि वैशाली की आधुनिक हीनावस्था की अवहेलना कर हम इस स्थान के महत्व को समझें और स्वीकार करें । इस दिशा में अभी तक जो प्रयत्न किये गये हैं, विशेषकर बिहार सरकार ने जो दिलचस्पी ली है वह प्रशंसनीय है ।

आगामी महावीर जयन्ती समारोह की सफलता चाहते हुए मैं समारोह के आयोजकों तथा उसमें भाग लेने वालों के प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं ।

(३० मार्च, १९६०)

"खादी ग्रामोद्योग" को शुभकामनायें

खादी और ग्रामोद्योग का आयोजित विकास हमारी योजना का एक अविच्छिन्न अंग है और इस दिशा मे खादी ग्रामोद्योग कमीशन का प्रयत्न अत्यन्त सराहनीय है । फिर भी, यह मानना होगा कि जो हुआ है वह उसके मुकाबले मे, जो करना है बहुत कम है । यह काम मशीनी उद्योग-धन्धों की स्थापना से अधिक कठिन है । यहां प्रश्न केवल टैकनीक या प्रविधि का नहीं है, नव समाज रचना के उन मूल्यों को जो खादी ग्रामोद्योग की जान हैं, जब तक समझ-बूझकर नहीं अपनाया जायगा और उन उद्योगों के विकास की क्रिया स्वतः स्फूर्त नहीं होगी तब तक विकास कार्य की बुनियादें मजबूत नहीं होंगी । मुझे विश्वास है कि खादी ग्रामोद्योग कमीशन इस ओर पूरी तरह सचेत है ।

कमीशन के मुखपत्र "खादी ग्रामोद्योग" को, उसकी जागरूकता और अथक प्रयास के लिए मै अपनी बधाइयां भेजता हूं ।

(३० मार्च, १९६०)

गुरुकुल कांगड़ी हीरक जयन्ती

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के हीरक जयन्ती उत्सव मे भाग लेने का मेरा विचार था, किन्तु खेद है कि किन्हीं कारणों से मेरा वहां आना नहीं हो सकेगा । इसलिये यहीं से शुभकामना और सद्भावना का सन्देश भेज कर संतोष कर रहा हूं ।

विगत ६० वर्षों मे गुरुकुल कांगड़ी ने शिक्षा प्रसार और हिन्दी प्रचार की दिशा में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह सर्वविदित है । प्रतिकूल परिस्थितियां रहते हुए भी जब गुरुकुल बराबर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया, तो हमें आशा करनी चाहिए कि आजकल जबकि परिस्थितियां अनुकूल

है गुरुकुल विश्वविद्यालय शिक्षा प्रसार और निरक्षरता निवारण के अलावा, प्राचीन और नवीन प्रणालियों के समन्वय द्वारा, राष्ट्रहित और राष्ट्र सेवा के लिये सचरित्र कर्मठ और दृढ़प्रतिज्ञ सेवकों को तैयार करता जायेगा। प्रचलित शिक्षा प्रणाली की एक त्रुटि जो बहुत ही भयंकर है उसको दूर करने मे गुरुकुल जैसी संस्था ही पथप्रदर्शन कर सकती है और उनका ही विशेष कर्तव्य हो जाता है कि चरित्र निर्माण को अपना प्रमुख ध्येय बनाकर इसे दूर करे।

इस शुभ अवसर पर मै गुरुकुल कांगड़ी के व्यवस्थापकों, अध्यापकों तथा सभी छात्रों को बधाई देता हूं और उनकी सफलता की कामना करता हूं।

(८ अप्रैल, १९६०)

महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि

मुझे हर्ष है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्मानार्थ एक स्मृतिग्रन्थ के प्रकाशन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के प्रति मै अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा।

स्वामी दयानन्द प्रकाण्ड पंडित तो थे ही किन्तु आधुनिक कालीन प्रगति मे उनके योगदान का सबसे दृढ़ आधार उनका सामाजिक कार्यक्रम था। समाज सुधार के क्षेत्र मे उनकी ओजस्वी वाणी तथा लेखनी और उनके देहावसान के बाद उनके अनुयाइयों ने जो कुछ किया वह सराहनीय है। स्वामी दयानन्द का कार्यक्षेत्र इतना व्यापक था कि अपने जीवन काल मे उन्होंने जो कुछ कहा और किया उनमे से बहुत सी बाते आज भी अनुकरणीय मानते हैं।

(११ अप्रैल, १९६०)

बाघरी सर्वोदय समाज

मै बाघरी सर्वोदय समाज के सदस्यों का अभिनन्दन करता हूं और बाघरी समुदाय सुधार के लिए उन्होंने जो प्रयत्न किए हैं उनके लिए मै समाज को बधाई देता हूं। मुझे आशा है कि बाघरी सुधार कानून, जिसकी

व्यवस्था उन लोगों के हित में की गई है, बाधरी लोगों के आर्थिक तथा सामाजिक कल्याण का दृढ़ आधार बन सकेगा।

(२३ अप्रैल, १९६०)

बंगलौर में "विश्वनीड़" की स्थापना

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बंगलोर में "विश्वनीड़" नाम का सर्वोदय केन्द्र खोला गया है। मुझे आशा है कि यह केन्द्र सर्वोदय विचार-धारा के प्रचार को तथा क्रियात्मक कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने में सफल होगा।

(२५ अप्रैल, १९६०)

उदयपुर महिला मण्डल रजत जयन्ती

महिला मण्डल, उदयपुर राजस्थान की बालिकाओं और महिलाओं में गत २५ वर्ष से शिक्षा प्रसार का कार्य उत्साह से कर रहा है। गत मार्च महीने में होने वाले मण्डल की रजत जयन्ती महोत्सव में भाग लेने का मेरा भी विचार था, किन्तु किन्हीं कारणों से मैं उस अवसर पर उदयपुर नहीं जा सका। मैं मण्डल को उसके प्रशंसनीय कार्य पर बधाई देता हूं और और महिला मण्डल की सभी अध्यापिकाओं तथा छात्राओं के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

(९ मई, १९६०)

त्रिवेन्द्रम में नवजीवन ट्रस्ट

त्रिवेन्द्रम में नवजीवन ट्रस्ट की शाखा खोलने के निश्चय का मैं स्वागत करता हूं और इस अवसर पर ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं के प्रति अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। गांधी साहित्य का देश के सभी भागों में व्यापक प्रचार हो और नवजीवन ट्रस्ट अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो, यही मेरी कामना है।

(१० मई, १९६०)

"खाद पत्रिका" का हिन्दी प्रकाशन

मुझे यह जान कर खुशी हुई कि अखिल भारतीय खाद संघ (फरटेलाइजर एसोसियेशन आफ इंडिया) अपनी मासिक पत्रिका ("खाद पत्रिका") हिन्दी में निकालने जा रही है। अभी तक यह पत्रिका अंग्रेजी में छप रही थी और अब अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में भी प्रकाशित हुआ करेगी। ऐसी पत्रिका की उपयोगिता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना व्यर्थ होगा, क्योंकि सभी किसान और अधिकांश वे लोग जिनका खेती बाड़ी से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है अधिकतर हिन्दी ही जानते हैं। मैं आशा करता हूं कि वे सब "खाद पत्रिका" से लाभ उठायेंगे और इस से भारतीय कृषि के विकास में और उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

(९ जून, १९६०)

तेरापंथी द्विशताब्दि समारोह

मैं तेरापंथी सम्प्रदाय के द्विशताब्दि समारोह को अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हूं। आचार्य तुलसी जैसे सन्त के मार्गदर्शन में इस सम्प्रदाय के अनुगामियों को नैतिक और आत्मिक उन्नति उत्तरोतर होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

(१८ जून, १९६०)

"स्मृतिभारथी" की उन्नति की कामना

मुझे खुशी है कि श्री गोपबन्धु चौधरी की स्मृति में स्थापित स्मृति भारथी नाम की संस्था कटक जिले के लोगों की सेवा में दिनोंदिन आगे बढ़ रही है। मुझे आशा है कि यह संस्था पुस्तकों और अन्य सुविधाओं द्वारा ही जनता की सेवा नहीं करेगी बल्कि श्री गोपबन्धु के त्याग और देशभक्ति की भावना के प्रसार द्वारा भी स्थानीय लोगों को अनुप्राणित करेगी। मैं स्मृति भारथी की उन्नति की कामना करता हूं।

(२९ जुलाई, १९६०)

"चन्दामामा" के पाठकों को प्यार

चन्दामामा के प्रकाशकों को मैं बधाई देता हूं कि वे गत १३ वर्षों से इस बच्चों की पत्रिका का ६ भारतीय भाषाओं में प्रकाशन कर रहे हैं, जिनमें हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, तेलगु कन्नड़ और तमिल शामिल हैं। कहना न होगा कि हमारे साक्षरता प्रसार की सफलता के लिये यह जरूरी है कि उपयोगी बाल साहित्य प्रकाशित होता रहे। चन्दामामा के तरुण पाठकों को मैं प्यार भेजता हूं और इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं

(२२ जुलाई, १९६०)

राष्ट्रीयता स्वच्छता दिवस

गांधी जयन्ती के पुण्य अवसर पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस के आयोजन का मैं स्वागत करता हूं। सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता में ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना करना कठिन है। चूंकि इस आयोजना से लोगों का ध्यान पार्कों, स्मारकों और अन्य सार्वजनिक स्थानों को साफ-सुथरा रखने की ओर केन्द्रित होगा, मुझे आशा है इससे लोगों में स्वच्छता की भावना जागृत होगी जिसके फलस्वरूप जनता के स्वास्थ्य में सुधार होगा।

मैं राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस आयोजन की सफलता की कामना करता हूं।

(१ सितम्बर, १९६०)

पंडित मोतीलाल शास्त्री के निधन पर

मुझे पंडित मोतीलाल शास्त्री के निधन का समाचार सुन कर बहुत दुःख हुआ। वे वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड पंडित थे और अपने जीवन काल में उन्होंने इस प्राचीन साहित्य को अपनी टीकाओं तथा अपने विशेष लेखों द्वारा बहुत समृद्ध किया। वेदों पर उनके व्याख्यान सुनने का अवसर मुझे भी मिला है और इस प्रकार मैं उनकी प्रतिभा से व्यक्तिगत रूप से परिचित हो सका। इस दिशा में उन्होंने जो प्रशसंनीय कार्य किये हैं और संस्कृत के प्रचारार्थ जो उनके जीवन पर्यन्त प्रयास रहे हैं मुझे आशा है कि स्वर्गीय शास्त्रीजी के प्रशसंक और राजस्थान के साहित्यिक उन्हें जारी रखेंगे।

में दिवगंत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और स्वर्गीय शास्त्रीजी के सभी सम्बन्धियों तथा मित्रों के प्रति समवेदना प्रकट करता हूं।

(२२ सितम्बर, १९६०)

"समृद्धि" को शुभकामनायें

"समृद्धि" के स्तम्भों द्वारा में लोकतन्त्रात्मक विकेन्द्रीकरण की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर राजस्थान की जनता तथा सरकार को बधाई देता हूं और इस राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम म उनकी सफलता के लिये अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं। अनेक कठिनाइयों के होते हुए इस दिशा मे राजस्थान ने जो आदर्श स्थापित किया, तथा व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह देश भर के लिये अनुकरणीय है।

(२३ सितम्बर, १९६०)

"देवगिरी" का प्रकाशन

महाराष्ट्र हिन्दी प्रचार सभा के मुखपत्र के रूप मे मैं "देवगिरि" का स्वागत करता हूं और इस पत्रिका से सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को उनकी लगन तथा सद्प्रयत्नों के लिये बधाई देता हूं। हिन्दी प्रचार एक रचनात्मक कार्य है। उदात्त राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर ही इस कार्य को आग बढ़ाना चाहिये। मुझे आशा है "देवगिरी" इस दिशा मे हिन्दी सेवियों और प्रचारकों का मार्गदर्शन करेगी। इस पत्रिका के लिये मैं अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं।

(२६ सितम्बर, १९६०)

मारिशस हिन्दी प्रचारिणी सभा

मारिशस हिन्दी प्रचारिणी सभा के रजत जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मैं सभा को अपनी शुभ-कामनाये भेजता हूं और सभी कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करता हूं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इस दूरस्थ द्वीप में हिन्दी प्रचार का कार्य उत्साह के साथ हो रहा है, जिसके लिए मैं

हिन्दी प्रचारिणी सभा को बधाई देता हूं। सभा का रजत जयन्ती उत्सव सफल हो और मारिशस मे हिन्दी प्रचार का मार्ग और प्रशस्त हो, यही मेरी हार्दिक कामना है।

(२८ सितम्बर, १९६०)

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन को संदेश

इधर खादी के उत्पादन और लोक प्रियता मे जो उन्नति हुई है उसे सन्तोष-जनक कहा जा सकता है, यद्यपि इस दिशा मे अभी बहुत कुछ करना शेष रहता है। खादी तथा ग्रामोद्योगों के उत्पादन के सम्बन्ध मे सम्भव है अभी राष्ट्रव्यापी प्रयत्न न किये गये हों, किन्तु जो कुछ भी अभी तक हुआ है उसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता, विशेषकर ग्रामीण लोगों को रोजगार दिलाने की दिशा मे। खादी और ग्रामोद्योग कमीशन इस प्रगति के लिए बधाई का पात्र है। मुझे आशा है कि आगामी गांधी जयन्ती के अवसर पर यह कार्य और भी आगे बढ़ाया जा सकेगा। यह हमेशा स्मरण रखना चाहिए कि खादी तथा ग्रामोद्योगी वस्तुओं की बिक्री और निकासी के प्रश्न उतना ही महत्व रखते हैं जितना उनके उत्पादन का। इसलिए बिक्री मे यदि पारस्परिक उन्नति न होती जायेगी तो उत्पादन मे भी कमी खुद ब खुद हो जायेगी। मुझे आशा है और मेरा जनसाधारण से अनुरोध है कि जो कपड़ा तथा सूत कुछ केंद्रों मे जमा हो गये हैं उनकी निकासी जल्द से जल्द हो जाए। इसमे सबका सहयोग और सहायता वांछनीय है।

(२८ सितम्बर, १९६०)

श्री बाबू को शुभ कामना

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि चित्रों मे श्री बाबू की जीवनी निकालने का निश्चय किया गया है। उनके जीवन के विभिन्न पहलू रहे है, उन सबों का अपना अपना महत्व है। समय के साथ साथ मनुष्य का जीवन बदलता रहता है। आशा है उनके जीवन की सम्यक झांकी इस चित्रावली मे मिलेगी।

जो चित्रों द्वारा स्वयं इतना स्पष्ट है उसके लिए शब्द-चित्र की क्या आवश्यकता ? मैं तो केवल श्री बाबू के प्रति अपनी शुभ-कामना व्यक्त करता हूं और मेरी यही प्रार्थना है कि उनकी सेवा देश को सदा मिलती रहे ।

(१७ अक्तूबर, १९६०)

भारतीय नौसेना दिवस

आगामी नौसेना दिवस के शुभ अवसर पर मैं भारतीय नौसेना के अधिकारियों तथा अन्य कर्मचारियों का अभिवादन करता हूं और उनके प्रति अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं । जब हम यह देखते हैं कि करीब बारह वर्ष हुए हमारी नौसेना शैशव अवस्था मे थी और इन थोड़े से वर्षो मे ही वह बढ़कर एक शक्तिशाली और विश्वसनीय सेना बन गई है, तो हमारा हृदय गद्‌गद हो जाता है । इस महान सफलता पर भारतीय नौसेना उचित रूप मे गर्व कर सकती है । हमारे राष्ट्र को आशा है कि यह सेना हमारे लम्बे तटवर्ती क्षेत्र को सुरक्षित रखेगी ।

यद्यपि आधुनिक विकास की दृष्टि से भारतीय नौसेना अभी युवावस्था में है, हमारे देश की नौसेना-सम्बन्धी परम्परा लगभग दो हजार वर्ष पुरानी है । मेरा विश्वास है कि यह परम्परा हमे प्रेरित करेगी और स्वतन्त्र भारत की आवश्यकताओं तथा शक्ति के अनुरूप सैन्य बल का संगठन करने मे हमारी सहायता करेगी ।

(२४ अक्तूबर, १९६०)

सस्ता साहित्य मंडल "तालस्ताय विशेषांक"

सस्ता साहित्य मंडल की ओर से तालस्ताय विशेषांक प्रकाशित करने का प्रयास स्तुत्य है और मैं इसका स्वागत करता हूं ।

तालस्ताय अपने समय के प्रमुख साहित्यिक और विचारक थे, जिनकी विचारधारा से अनेक देशों के लोग प्रभावित हुए । गांधीजी भी तालस्ताय के प्रशंसकों में थे । आज के संसार में तालस्ताय की विचारधारा के प्रचार का विशेष महत्व है, क्योंकि मानवोचित जिन प्रवृत्तियों को उन्होंने प्रोत्साहित

करने का प्रयत्न किया था वे ही आज के युग में शान्ति और उन्नति का आधार बन सकती हैं।

मैं सस्ता साहित्य मंडल के प्रयास की सफलता की कामना करता हूं।

(२ नवम्बर, १९६०)

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति को संदेश

मैं मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति के इस निर्णय का स्वागत करता हूं कि भोपाल में स्वर्गीय पं० रविशंकर शुक्ल की स्मृति में हिन्दी भवन का निर्माण किया जाय। स्वर्गीय शुक्लजी कुशल प्रशासक और अनुभवी लोक-नायक होने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के परम हितैषी थे। भूतपूर्व मध्यप्रदेश में भाषा-सम्बन्धी गुत्थी को सफलतापूर्वक सुलझा कर उन्होंने हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं की सेवा की थी। संविधान सभा में, मध्यप्रदेश की राज्यसभा में और साहित्यिक आयोजनों के अवसर पर शुक्लजी के भाषण और भाषा-सम्बन्धी विचार बहुत सुलझे हुए और युक्तिपूर्ण होते थे। मध्य-प्रदेश राष्ट्रभाषा-प्रचार सभा द्वारा उनकी स्मृति में हिन्दी भवन निर्माण करने का निश्चय स्तुत्य है। मुझे आशा है कि भोपाल और मध्यप्रदेश के हिन्दी प्रेमियों के लिए ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी यह स्मारक प्रेरणा-दायक होगा।

(४ नवम्बर, १९६०)

बिहार कृषक समाज

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बिहार कृषक समाज ने हिन्दी में ऐसी सामग्री प्रकाशित करने का कार्यक्रम बनाया है जो किसानों के लिए उपयोगी हो। आजकल जो अनुसंधान हो रहे हैं, किसानों के लिए उनकी जानकारी आवश्यक है। तभी वे उनसे लाभ उठा सकते हैं। बिहार कृषक समाज के प्रयास का मैं स्वागत करता हूं और उसकी सफलता की कामना करता हूं।

(८ नवम्बर, १९६०)

ग्रामीण पुस्तकालय की स्थापना

स्वर्गीय श्री रामानन्द सिंह जी की स्मृति में ग्रामीण पुस्तकालय की स्थापना का मैं स्वागत करता हूं और यह आशा करता हूं कि पुस्तकालय ग्रामीण जनता के लिए हितकर सिद्ध होगा और देहात में साक्षरता प्रचार का साधन बन सकेगा।

(७ नवम्बर, १९६०)

श्री कालका प्रसाद भटनागर को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट

मुझे खुशी है कि श्री कालका प्रसाद भटनागर को उनके आगरा विश्वविद्यालय में कुलपति के पद से निवृत होने के अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। उत्तरप्रदेश में विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षा के विकास तथा प्रसार का जो कार्य गत ३०-३५ वर्षों में किया गया है उनमें श्री भटनागर का उल्लेखनीय योग रहा है। लगभग ४० वर्षों तक एक सफल अध्यापक के रूप में उन्होंने अनेक विद्यार्थियों के जीवन का निर्माण किया और निजी उदाहरण से उन्हे सत्प्रेरणा दी।

ऐसे विद्या वयोवृद्ध और अनथक कार्यकर्ता के आदरार्थ जो प्रयास हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय की ओर से हो रहा है, उसका मैं स्वागत करता हूं और विद्यार्थीवर्ग तथा हमारे अध्यापकगण के हित में इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूं।

(१९ नवम्बर, १९६०)

टालस्टाय की पच्चासवीं बरसी पर

लियो टालस्टाय के देहावसान की पच्चासवीं बरसी के अवसर पर मैं इस समारोह के संयोजकों के प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। टालस्टाय की कृतियों और उनमें प्रतिपादित विचारधारा का भारतीय चिन्तन पर काफी प्रभाव पड़ा है, जिसका सब से बड़ा प्रमाण उनके और गांधीजी के बीच पत्रव्यवहार है। आज जबकि अनेक दृष्टियों से राष्ट्रों की भौगोलिक सीमायें धूमिल पड़ती दिखाई दे रही हैं, टालस्टाय की मान्यताओं तथा आदर्श की ओर विभिन्न देशों के लोग आकृष्ट हों, यह स्वाभाविक है।

इस प्रवृति का सभी को स्वागत करना चाहिये और जहां तक हो सके इसको प्रोत्साहन देना चाहिये। मैं समझता हूं यह कार्य टालस्टाय की कृतियों के व्यापक प्रसार द्वारा ही हो सकता है। मुझे आशा है कि शीघ्र ही टालस्टाय साहित्य भारत की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हो सकेगा। टालस्टाय अथवा किसी भी लेखक तथा विचारक का स्मारक इससे अधिक भव्य क्या हो सकता है?

मैं इस समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

(५ दिसम्बर, १९६०)

बिहार-संस्कृत-संजीवन-समाज

बिहार संस्कृत-संजीवन-समाज के प्रति मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। मेरी यह कामना है कि संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार में यह संस्था बराबर आगे बढ़ती रहे।

(५ दिसम्बर, १९६०)

अन्तर्भारती की स्थापना

मैं अन्तर्भारती की स्थापना का स्वागत करता हूं। इस संस्था का उद्देश्य विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के अध्ययन द्वारा उनके साहित्य और साहित्यकारों के मध्य सम्पर्क स्थापित करना है। यह प्रयास स्तुत्य है और मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

(५ दिसम्बर, १९६०)

शिक्षायतन का चौथा समावर्तन

राष्ट्रभाषा शिक्षायतन के चौथे समावर्तन उत्सव के अवसर पर मैं संस्था के प्रति शुभकामनायें भेजता हूं और सभी छात्रों तथा अध्यापकों का अभिनन्दन करता हूं। यह हर्ष का विषय है कि निजी उद्यम तथा लगन के बल पर राष्ट्रभाषा शिक्षायतन पश्चिमी बंगाल में हिन्दी प्रचार के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मैं शिक्षायतन के कार्यकर्त्ताओं को उनकी सफलता पर बधाई देता हूं और आगामी उत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

(५ दिसम्बर, १९६०)

राजस्थान साहित्य अकादमी सैमिनार

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान साहित्य अकादमी के तृतीय वार्षिक सैमिनार के अवसर पर अन्य रोचक तथा उपयोगी विषयों के साथ साथ राजस्थान के संस्कृत साहित्य पर भी विचार विनिमय होगा । मैं इस सैमिनार की सफलता चाहता हूं और राजस्थान की साहित्य अकादमी को अपनी शुभकामनायें भेजता हूं ।

(२६ दिसम्बर, १६६०)

कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा

कर्नाटक प्रान्तीय हिन्दी प्रचार सभा की रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और सभा के प्रचारकों तथा कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करता हूं । कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा ने कन्नड़ भाषी प्रदेश में राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य सफलतापूर्वक किया है, इसके लिये मैं सभा को बधाई देता हूं, और यह आशा करता हूं, कि इस सम्बन्ध में उन्होंने जो विस्तृत योजनायें बनाई हैं उन्हें कार्यरूप देने में सभा सफल होगी, और इस शुभकार्य में उसे यथापूर्व जनसाधारण का सहयोग मिलता रहेगा।

(३० दिसम्बर, १६६०)

१९६१

"गोवर्धन" विशेषांक को शुभकामनायें

गौ-सेवा के सम्बन्ध में गोवर्धन संस्था ने जो उपयोगी कार्य किया है उससे मैं कुछ परिचित हूं। अपनी मासिक पत्रिका "गोवर्धन" द्वारा यह संस्था जो प्रचार कार्य कर रही है वह भी स्तुत्य है। "गोवर्धन" के विशेषांक के लिये मैं अपनी शुभकामनाये भेजता हूं।

(५ जनवरी, १९६१)

बिहार कौटेज इण्डस्ट्रीज़ रजत जयन्ती

बिहार कौटेज इण्डस्ट्रीज की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। बिहार राज्य में छोटे और गृह-उद्योगों को प्रोत्साहन देने में इस संस्था ने उपयोगी कार्य किया है। मुझे आशा है कि यह रचनात्मक कार्य दिनोंदिन उन्नति करता जायेगा और आगामी समारोह से बिहार कौटेज इण्डस्ट्रीज को इस दिशा में नवप्रेरणा मिलेगी।

(६ जनवरी, १९६१)

कुष्ट निवारण दिवस

मुझे खुशी है कि हमारा स्वास्थ्य मंत्रालय अखिल भारतीय कुष्ट निवारण दिन मना रहा है। मुझे आशा है कि इस तरह लोगों में इस रोग के प्रति कुछ जानकारी आएगी और पीड़ितों की सहायता के लिए हम कुछ कर सकेंगे। कुष्ट रोग की रोक-थाम को हम ने अपनी पंचवर्षीय योजना में व्यवस्था की है और उसके लिए आवश्यक जन और धन के साधन जुटाए हैं। अब जरूरत इस बात की है कि जनता में इस बीमारी के कारणों और उसकी रोक-थाम के सम्बन्ध में पूरी जानकारी फैलाई जा सके जिस से कि अभागे पीड़ितों के प्रति हम अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।

मैं अखिल भारतीय कुष्ट निवारण दिवस की सफलता चाहता हूं ।

(३० जनवरी, १९६१)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, उत्तरप्रदेश

उत्तरप्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के लिये मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि सम्मेलन साहित्य की अभिवृद्धि और हिन्दी भाषा के प्रसार की दिशा में यथापूर्व प्रयत्नशील रहेगा। हमारे देश के नागरिक अपने व्यावहारिक जीवन में हिन्दी को वह स्थान दें जो उसे वैधानिक रूप से संविधान में दिया गया है, इसके लिये विचारपूर्ण प्रयत्न और अनथक परिश्रम की आवश्यकता है। यह प्रयत्न और परिश्रम अधिकतर हिन्दी भाषा-भाषियों की ओर से ही होना चाहिये। अहिन्दी भाषियों के प्रति किसी प्रकार से कभी ऐसी भावना प्रदर्शित नहीं होनी चाहिये जिससे वह यह समझें कि हिन्दी उन पर लादने का प्रयत्न हो रहा है। सम्मेलन इस दिशा में महत्वपूर्ण काम कर सकता है और सद्भावना स्थापित कर सकता है।

मैं उत्तरप्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(८ फरवरी, १९६१)

रवीन्द्रनाथ जन्म-शताब्दी

यद्यपि कविवर टैगोर ने अधिकतर बंगला में ही लिखा, किन्तु समस्त समकालीन भारतीय साहित्य पर उनकी रचनाओं का बड़ा गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है।

टैगोर जैसे महान विचारक और साहित्यकार के शताब्दी समारोह के अवसर पर सबसे अच्छी बात कोई कुछ कर सकता है, तो यही कि वह लोगों को उनके साहित्य की ओर प्रेरित करें और जनता में उस सुन्दर साहित्य के प्रति रस पैदा करें। उस महान कवि के विचारों और कृतियों

से अवगत होकर यदि हम उनमें व्यक्त ऊंचे भावों और वैसी ही प्रांजल शैली के किसी एक अंग को आत्मसात कर सकें तो मैं समझता हूं वह कविवर टैगोर के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

मैं रवीन्द्रनाथ जन्म-शताब्दी महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

(२२ फरवरी, १९६१)

मारिशस में श्री सहदेव को शुभकामनायें

श्री सहदेव मारिशस मे खादी प्रचार और हिन्दी अध्यापन सम्बन्धी जो रचनात्मक कार्य कर रहे है, उसके सम्बन्ध में मुझे कुछ जानने का अवसर मिला है। मारिशस मे अधिकांश जनसंख्या भारतीय प्रवासियों की है। इसलिए मैं समझता हूं हम लोगों का यह कर्तव्य है कि मारिशस स्थित अपने भाइयों के हितार्थ यथासंभव कुछ न कुछ यत्न करते रहें। इस दृष्टि से श्री सहदेव का प्रयास प्रशंसनीय है। मैं उन्हे अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि उनका विद्यालय दिनोंदिन आगे बढ़ेगा और अधिकाधिक मारिशस निवासी भारतीय प्रवासियों की सेवा कर सकेगा।

(१ मार्च, १९६१)

मराठी नाट्य परिषद्

महाराष्ट्र की संगीत और नाटक सम्बन्धी परम्परा बहुत पुरानी है। वास्तव में वहां के साहित्यिक, धार्मिक और सार्वजनिक जीवन में नाटक का प्रमुख स्थान रहा है, और मराठी नाट्य परिषद् ने इन सभी प्रवृत्तियों को सूत्रबद्ध करके इस परम्परा को पुष्ट करने और मंच का विकास करने में प्रशंसनीय कार्य किया है। परिषद् के ४३वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं।

(१४ मार्च, १९६१)

राजधानी में वैशाली समारोह

राजधानी में वैशाली समारोह के संयोजकों के प्रति मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि इस प्राचीन गणराज्य की स्मृति को जीवित रखने के सम्बन्ध में यहां के लोग यथोचित रुचि लेंगे। भारतीय गणराज्य की राजधानी होने के नाते यह उचित ही है कि वैशाली को विस्मृति के गर्त से निकालने के जो प्रयत्न किए जा रहे हैं उनमें दिल्ली के लोगों का भी योगदान रहे।

मैं वैशाली समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

(१७ मार्च, १९६१)

दिल्ली राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

दिल्ली प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं जिस लगन और अध्यवसाय के साथ समिति राजधानी में राष्ट्रभाषा के प्रचार कार्य का संचालन कर रही है, इसके लिये समिति के कार्यकर्त्ता बधाई के पात्र हैं। यह जानकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई कि मूक-बधिर स्कूल के १०० विद्यार्थी भी समिति की परीक्षाओं में बैठे हैं।

परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों तथा दिल्ली प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से सम्बन्धित देवियों और सज्जनों को मैं अपनी मंगलकामनाये भेजता हूं।

(२० मार्च, १९६१)

भारत सेवक समाज

मुझे खुशी है कि अखिल भारतीय भारत सेवक समाज का वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष दिल्ली मे हो रहा है। इस अवसर पर मैं समाज तथा उसके कार्यकर्ताओं के प्रति अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। समाज सेवा हमारे रचनात्मक कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग है, और यह भारत सेवक समाज का विशेष कार्यक्षेत्र है। मुझे आशा है कि समाज के कर्मचारीगण इस कार्य के महत्व को समझते हुए तन्मयता से इसे आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते रहेंगे।

मैं भारत सेवक समाज के आगामी वार्षिकोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।

(२४ मार्च, १९६१)

पंचायत परिषद्

मैं अखिल भारतीय पंचायत परिषद् को अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। इस परिषद् में भारत भर की पंचायतों की अग्रणी संस्था बनने की क्षमता है। मुझे खुशी है कि परिषद् ने ग्राम पंचायतों को जागृत करने का विस्तृत कार्यक्रम बनाया है। पंचायतों के सफल कार्य पर ही भारतीय जनता के अधिकांश भाग की सुख समृद्धि और कम से कम एक सीमा तक हमारे देश के जनतन्त्रवाद का भविष्य निर्भर करता है। इस वर्ष पंचायत परिषद् के सभापति के रूप में श्री जयप्रकाश नारायण का चुनाव एक शुभ लक्षण है। मुझे विश्वास है कि एकीकरण तथा पथ प्रदर्शन की दिशा में परिषद् के प्रयत्नों के फलस्वरूप इन प्राचीन ग्रामीण संस्थाओं को अधिक ठोस और सुदृढ़ आधार मिल सकेगा।

मैं पंचायत परिषद् और इसकी मासिक पत्रिका "पंचायत संदेश" की सफलता चाहता हूं।

(२७ मार्च, १९६१)

पंडित मोतीलाल नेहरू शताब्दी समारोह

पंडित मोतीलाल नेहरू के प्रति जिनका जन्म १०० वर्ष पूर्व ६ मई के दिन हुआ था, मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वे एक महान् देशभक्त और स्वातन्त्र्य युद्ध के अनथक सेनानी थे। भारतीय इतिहास में उनकी गणना आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माताओं में की जायेगी। मुझे आशा है इस समारोह से और पंडित मोतीलाल नेहरू के त्याग तथा देशभक्ति से भारत के लोगों को प्रेरणा मिलेगी।

(१७ अप्रैल, १९६१)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने राष्ट्रभाषा प्रचार तथा प्रसार के लिए बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। जिन बहुत सी बातों के आधार पर हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा का पद देना स्वीकार किया गया है, उनमें दक्षिण भारत प्रचार सभा का सफल कार्य और उसके कार्यकर्त्ताओं का हिन्दी अनुराग निःसंदेह एक है।

मुझे खुशी है कि सभा की शाखा दिल्ली में खोली जा रही है। मैं आशा करता हूं कि इस शाखा से जहां हिन्दी भाषियों को दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के महत्वपूर्ण काम की जानकारी प्राप्त होगी, वहां अहिन्दी भाषियों में राष्ट्रभाषा के प्रचार का कार्य भी आगे बढ़ाया जा सकेगा। इस अवसर पर मैं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रति अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

(२५ अप्रैल, १९६१)

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता निधि

मुझे खुशी है कि भारत-जापान सांस्कृतिक संघ, पटना, जापान और हमारे देश के बीच मैत्री की भावना को बनाये रखने और उसे अधिक सुदृढ़ करने के हेतु प्रयत्नशील है। मेरी यह कामना है कि इस दिशा में उक्त संघ के यत्न सफल हों। मैं अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता निधि के विशेष अधिवेशन के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

(२५ अप्रैल, १९६१)

मानव सेवा संघ की रजत जयन्ती

अखिल भारतीय मानव सेवा संघ की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। समाज सेवा के लिए हमारे देश में असीम क्षेत्र है। मुझे खुशी है कि मानव सेवा संघ इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है। संघ के इस कार्य की मैं सफलता की कामना करता हूं।

(२९ अप्रैल, १९६१)

राजस्थान इतिहास परिषद्

सम्भवत: किसी भी और राज्य में इतिहास की इतनी सामग्री उपलब्ध नहीं जितनी राजस्थान में है। सौभाग्य से राजस्थान इतिहास परिषद्-मुनि जिन विजय के नेतृत्व में इस ओर जागरूक है और वह बराबर खोज, आलेखन आदि सम्बन्धी कार्य में संलग्न रहती है। मैं परिषद् को अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और उसकी सफलता की कामना करता हूं।

(२६ अप्रैल, १९६१)

पं० गोविन्दवल्लभ स्मारक निर्माण

पन्तगांव, तहसील रानीखेत के निवासियों का यह निश्चय कि स्वर्गीय पं० गोविन्दवल्लभ पन्त की स्मृति में एक स्मारक का निर्माण किया जाय, स्तुत्य है। इस पुण्य कार्य के लिये मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं।

(८ मई, १९६१)

"खेती" का प्रकाशन

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की पत्रिका खेती के कुछ अंक मैंने देखे, जो सामग्री और सम्पादन की दृष्टि से आकर्षक लगे। इस पत्रिका द्वारा कृषि अनुसन्धान परिषद् के खेती सम्बन्धी शोध और सुझाव किसान और साधारण लोगों तक पहुंचाये जा सकते हैं। इसी कारण, खेती के सम्पादकों और संचालकों पर भारी जिम्मेदारी आती है, कि वे सभी उपयोगी बातों को सरल भाषा और ग्राह्य ढंग से प्रस्तुत करें। तभी खेती का प्रकाशन सार्थक होगा और भूमि पर काम करने वाले लोग इससे लाभान्वित हो सकेंगे।

(१९ मई, १९६१)

नई दिल्ली हरिसभा

हरिसभा नई दिल्ली के निमन्त्रण के लिये मैं आभारी हूं। खेद है कि सभा द्वारा आयोजित कीर्तन में मैं सम्मिलित नहीं हो सकूंगा। कीर्तन मंगल-मय और सफल हो, और हरिसभा अपने लक्ष्य की ओर बराबर बढ़ती रहे, यही मेरी कामना है।

(१९ मई, १९६१)

"भाषा" के प्रकाशन का स्वागत

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा "भाषा" नामक त्रैमासिक पत्रिका निकालने के निश्चय का मैं स्वागत करता हूं। संविधान में दिए गए भाषा-सम्बन्धी निर्देशों को कार्यरूप देने और राष्ट्रभाषा के विकास तथा अहिन्दी क्षेत्रों में व्यापक प्रसार की दिशा में शिक्षा मंत्रालय समय समय पर यथोचित कार्यवाही करता रहा है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना की गई है। मैं समझता हूं कि "भाषा" का प्रकाशन इन सब कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होगा। मेरी यह कामना है कि शिक्षा मंत्रालय का यह प्रयास सफल हो।

(३ जून, १९६१)

हाथरस में सर्वोदय समाज

सर्वोदय समाज, हाथरस को मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। मुझे आशा है कि जिन उद्देश्यों को सामने रखकर इस संस्था की स्थापना की गई थी, उनकी पूर्ति के लिये समाज के कार्यकर्ता बराबर प्रयत्नशील रहेंगे और इस क्षेत्र की जनता को सर्वोदय के आदर्शों की ओर प्रेरित करने में सफल होंगे।

(३ जून, १९६१)

आकाशवाणी की रजत जयन्ती

मैं आकाशवाणी को और देश-विदेश में उसके लाखों श्रोताओं को आकाशवाणी के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर अपनी शुभकामनायें भेजता हूं। इन २५ वर्षों में ब्राडकास्टिंग का इतिहास वास्तव में देश की सार्वजनिक सेवाओं का इतिहास है। १९४७ से पहले और स्वाधीनता के बाद इन सेवाओं की किस प्रकार उन्नति हुई है, यह भी इस इतिहास से ज्ञात होता है।

१९३८ में तीन केन्द्रों से आकाशवाणी का आरम्भ हुआ और इसके बाद ११ वर्षों तक केवल तीन और केन्द्रों की स्थापना की जा सकी। किन्तु आज देश में २८ रेडियो केन्द्र हैं और तीन नए केन्द्र खुलने जा रहे हैं। रेडियो

लाइसेंसों और विभिन्न प्रसारणों की संख्या मे जो वृद्धि हुई है वह भी इतनी ही आश्चर्यजनक है। देश को स्वस्थ मनोरंजन, खबरों के प्रसार और लोगों की शिक्षा-सम्बन्धी जरूरतों के अनुसार हमारे ब्राडकास्टिंग कार्यक्रम आगे बढ़े हैं। मुझे खुशी है कि भारत के विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति के अध्यन और विवेचन के लिए आवश्यक मंच के रूप मे और इन संस्कृतियों को एक दूसरे के निकट लाने के साधन के रूप मे भी आकाशवाणी ने बहुत कुछ किया है। भारत मे बोली जाने वाली भाषाओं मे समन्वय स्थापित करने की दिशा में आकाशवाणी को कहां तक सफलता मिली है, यह जानना भी बहुत रोचक होगा। भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने की भाषित शब्द मे उतनी ही शक्ति है जितनी सिनेमा में।

शहरी लोगों से लेकर दूरस्थ ग्रामों के निवासियों तक जनता के साथ सम्पर्क के जितने भी माध्यम हैं, रेडियो उनमे बहुत प्रबल माना जाता है। इसलिए भारत जैसे देश मे उसकी उपादेयता असीम है। जनकल्याण और निर्माण के जो काम सरकार और दूसरी संस्थाओं द्वारा शुरु किए जाते हैं, यह जरूरी है कि उन्हे जनता को सरल भाषा मे समझाया जाए। इस कार्य को भी आकाशवाणी भली प्रकार निभा सकता है।

देश मे ब्राडकास्टिंग की अभी तक जो प्रगति हुई है वह यद्यपि महत्वपूर्ण है, पर राष्ट्र की निर्माण योजनाओं और हमारे लोगों की भावी आवश्यकताओं को देखते हुए यह स्वीकार करना होगा कि अभी तक जो कुछ भी किया जा सका है वह हमारी समस्या के हल का श्रीगणेश मात्र है। किन्तु हम इस बात पर सन्तोष कर सकते हैं कि देश मे ब्राडकास्टिंग की नींव मजबूती से रख दी गई है और आकाशवाणी हमारी भावी जरूरतों को पूरा कर सकेगा।

मेरी यह कामना है कि आकाशवाणी की दिनोंदिन उन्नति हो और वह देश मे जागृति, प्रगति और राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति का एक सशक्त साधन बन सके।

(८ जून, १९६१)

चतुर्थ बुनियादी शिक्षा संगोष्ठी

वर्तमान समय में सरकार के सामने शिक्षा का प्रश्न अत्यन्त जरूरी है। सरकार शिक्षा की व्यवस्था, उसकी योजना और उसका प्रबन्ध तो कर सकती

है परन्तु, जबतक उसमें शिक्षक का सहयोग न हो शिक्षा योजना सफल नहीं हो सकती। आप सब शिक्षकीय कार्य तो करते ही हैं साथ ही आप शिक्षकों को तैयार करने वाले भी हैं, इसलिए जिम्मेदारी केवल शासन की न होकर आपकी है। मकान, किताबें तथा अन्य सामान देने का काम शासन का है, किन्तु तालीम देने का काम आपका है।

मुल्क में सदा से शिक्षकीय कार्य प्रतिष्ठा का रहा है परन्तु विदेशी शासन से शिक्षक की प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ गई। मुसलमानों के समय में या प्राचीन भारत में गुरुकुल में गुरु की प्रतिष्ठा माता पिता से अधिक थी। मौलवी की सेवा हिन्दू बच्चे भी अत्यन्त निष्ठा से करते थे। ५०-६० वर्षों से यह भावना कमजोर होती जा रही है। अन्य कामों की तरह शिक्षक का काम भी पैसे का हो गया है। प्रतिष्ठा का माप दंड वेतन माना जाने लगा है। जिसे जो वेतन मिलता है उसी के हिसाब से उसकी इज्जत की जाती है।

हम चाहते हैं कि शिक्षकों का प्रतिष्ठा का स्थान पुनः स्थापित किया जावे। हमारा यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि शिक्षकों का वेतन न बढ़ाया जावे उसे इतना वेतन मिलना आवश्यक है कि यह निश्चिंत होकर सम्मान पूर्वक अपना कार्य करे। शिक्षक का सच्चा धन उसकी प्रतिष्ठा है। वेतन से अधिक जरूरी, समाज में शिक्षक की प्रतिष्ठा बढ़े यह भावना पैदा होनी चाहिए। पुराने समय मे बड़े से बड़े लोग शिक्षक पंडित, गुरु जी आदि कहते थे, चरण छूकर प्रणाम करते थे यह कोई दिखावा नहीं परन्तु हृदय से उत्पन्न वृत्ति है। आज के युग मे इस भावना के कम होने की शिकायत है। विद्यार्थियों के भी उच्छृखंल होने की शिकायत है। कोई शक्ति इस भावना को बनाने की नहीं रही। शिक्षक के प्रति प्रतिष्ठा की भावना यदि हृदय से पैदा न हो तो बाहर से वह लादी नहीं जा सकती। हम चोरी करने से इसलिए डरते हैं कि "चोरी करना बुरा है"। यह भावना हमारे हृदय में प्रवेश कर गई है। हम चोरी करके पकड़े जाएंगे इस डर से हम चोरी नहीं करते ऐसी बात नहीं है।

बच्चों को अपने गुरु के प्रति, बड़ों के प्रति आदर का भाव हो। जब हम स्कूल में पढ़ते थे तो "मानिटर" की भी इज्जत करते थे क्योंकि उसमें गुरु की शक्ल दिखाई देती थी। उसे छोटा गुरु मानते थे। अब तो प्रधानाध्यापक को भी कोई नहीं पूछता। हजारों शिकायतें आती हैं।

फेक्ट्री मैनेजर तथा शिक्षक में अन्तर है। फेक्ट्री मैनेजर लालच से, दबाव से काम लेता है किन्तु स्कूलों में प्रेम से काम लेना है। शिक्षक यदि बालक को डांटता है उस पर क्रोध करता है तो इसलिए कि उसके हृदय में बालक के प्रति प्रेम की भावना है। वह उसका भला चाहता है। आप इस भावना को जागृत करें। शिक्षक को उसका पुराना स्थान मिले' और समाज इस कार्य में मदद दे। हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम शिक्षकों के आर्थिक सवाल को भी देखें।

गुरु कभी पैसे से धनी नहीं था, प्रतिष्ठा का धनी था। शिक्षक गरीब रहे लेकिन समाज मे उनकी इज्जत रहे। पैसे से उसकी कीमत अदा नहीं हो सकती। शिक्षक का संतोष उसका प्रतिष्ठा है, बच्चों का विकास है और समाज का विकास है। आप सब लोग यह काम कर रहे हैं बड़ी खुशी की बात है। ईश्वर इसमे आपको सफलता दे यही मेरी कामना है।

पूना राष्ट्रभाषा सभा पदवी-दान समारोह

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना द्वारा आयोजित पदवी-दान समारोह १८ जून को मनाया जा रहा है। उससे ज्ञात होता है कि अहिन्दी भाषी प्रान्तों मे हिन्दी की सहज प्रगति हो रही है और अधिकाधिक व्यक्ति हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। आज एक सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान प्रथम है और मै मानता हूं कि आज के युग में भारत को एकता में बांधे रखने के लिये एक ऐसी भाषा की बहुत जरूरत है। हिन्दी उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक महत्वपूर्ण साधन है। मैं इस अवसर पर परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूं और समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

(१६ जून, १९६१)

हैदराबाद हिन्दी महाविद्यालय

हैदराबाद में हिन्दी महाविद्यालय के संस्थापकों को मैं बधाई देता हूं और हिन्दी माध्यम द्वारा उच्च शिक्षण की सुविधा की व्यवस्था के विचार का स्वागत करता हूं। दक्षिण भारत में इस तरह का यह सर्वप्रथम

महाविद्यालय होगा। मेरी यह धारणा है कि इस प्रकार के स्कूल और कालेज दक्षिण भारत में ही नहीं बल्कि समस्त देश के प्रमुख नगरों में स्थापित किये जाने चाहिये। इनके द्वारा जहां उच्च शिक्षण के लिये हिन्दी माध्यम का चलना होगा, वहां देश के विभिन्न भागों में काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों की एक बहुत बड़ी कठिनाई भी दूर हो सकेगी, क्योंकि कहीं भी बदली हो जाने पर उनके बच्चे एक ही माध्यम से शिक्षा का क्रम जारी रख सकेंगे।

मैं हैदराबाद हिन्दी महाविद्यालय की सफलता की कामना करता हूं और यह आशा करता हूं कि केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के परमार्श तथा सहायता से राज्यों की सरकारें इस प्रकार के महाविद्यालय खोलने के प्रश्न पर गम्भीर विचार करेंगी।

(३ जुलाई, १९६१)

आन्ध्र में नवजीवन ट्रस्ट

खुशी की बात है कि नवजीवन ट्रस्ट की शाखा आन्ध्र प्रदेश में भी स्थापित हो रही है। हैदराबाद में शाखा के उद्घाटन के अवसर पर मैं अपनी शुभ-कामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि अन्य प्रदेशों की तरह आन्ध्रप्रदेश में भी नवजीवन ट्रस्ट के प्रकाशन अधिकाधिक लोकप्रिय होंगे। साहित्यिक होने के साथ साथ यह कार्य राष्ट्रीय और रचनात्मक भी है।

(१८ जुलाई, १९६१)

हाथ से धान कूटने वालों का सम्मेलन

हाथ से धान कूटने वालों के अखिल भारतीय सम्मेलन को मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूं और यह आशा करता हूं कि सम्मेलन उस उद्योग को आगे बढ़ाने की दिशा में सफल कार्यवाही कर सकेगा। भारत के अधिकांश लोगों की खुराक चावल है। यदि मिलों में कुटे चावल की बजाए हाथ से कुटे चावल का उपयोग किया जाए तो इससे जहां हजारों लाखों आदमियों को रोजगार मिलेगा वहाँ हमें अधिक पौष्टिक चावल भी खाने को मिलेगा,

क्योंकि मिल कुटाई मे कुछ पौष्टिक तत्व जरूर नष्ट हो जाता है। यही कारण है कि इस धन्धे को भी घरेलू ग्राम उद्योगों की सूची में रखा गया है।

मै सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

(१८ जुलाई, १९६१)

साहित्य संसद्, दिल्ली

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की दिल्ली शाखा के तत्वावधान मे साहित्य संसद् नाम की संस्था की स्थापना का मै स्वागत करता हूं। सम्भवतः यह संस्था दक्षिण और उत्तर के साहित्यिकों के बीच आदान-प्रदान के लिए एक नवीन और उत्तम मंच प्रस्तुत करेगी इसके लिए मै दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को बधाई देता हूं और उसके कार्य की सराहना करता हूं। साहित्य संसद् के उद्घाटन के अवसर पर मै सभा की दिल्ली शाखा के कर्मचारियों के प्रति अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

(८ दिसम्बर, १९६१)

पंडित मदन मोहन मालवीय शताब्दी

पंडित मदन मोहन मालवीय शताब्दी समारोह के अवसर पर "आज" के माध्यम द्वारा मैं उन महामना नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने ५० वर्षों तक भारतीय जनता की निःस्वार्थ सेवा की। मालवीय जी का कार्यक्षेत्र केवल राजनीति ही नहीं था, समाजसेवा, शिक्षा, हिन्दी प्रचार और प्रसार के क्षेत्रों में भी उनका योगदान असाधारण रूप से महत्वपूर्ण है। उनका व्यक्तिगत जीवन चरित्रनिर्माण और सरलता की दिशा में हमारे लिए सदा प्रेरणादायक रहेगा।

(२१ दिसम्बर, १९६१)

भारतीय हिन्दी परिषद्

भारतीय हिन्दी परिषद् को उसके १९वें वार्षिक अधिवेशन क अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं। जो संस्थाएं हिन्दी प्रचार की दिशा में प्रयत्नशील हैं, उनमें इस परिषद् का स्थान महत्वपूर्ण है। विशेषकर विश्व-

विद्यालयों और शोध संस्थाओं में जो कार्य परिषद् कर रही है, वह बहुत प्रशंसनीय है। मैं भारतीय हिन्दी परिषद् के आगामी अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूं।

(२७ दिसम्बर, १९६१)